348
27

22468

348
27

348
21

22468

भाषा काव्यसंग्रह

जिसको

अवधदेशीय पौरजानपदीय शालाओं के नागरी विद्यार्थियों के उपकारार्थ ॥

धनावलीपुरस्थ सरयूपारीण शुक्लोपनामक स्वर्गवासि श्रीपण्डित महेशदत्त से अनेककविराजों के ग्रन्थार्णवसे मन्थन सरल संचय कराया

पांचवींवार
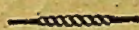
लखनऊ

मुंशीनवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपा

अक्टूबर सन् १९०१ ई० ॥

६ जुज़ ७ वर्क़

इस मतबे में जितने प्रकारकी काव्यकी पुस्तकें छपीहैं उनमेंसे कुछ नीचे लिखीजाती हैं

नवीनसंग्रह क़ी० ।)॥

जिसमें कवित्त सवैया भजन होलीआदि शृंगाररस के प्रेमी पुरुषों को अतीव आनन्ददायक हैं॥

मनमोहनी क़ी०।)॥।

जिसमें हज़ारों तरह के राग ऐसे २ चुहचुहाते लिखेगये हैं कि बयान से बाहर हैं रसिकों के वास्ते तो सजीवनही हैं॥

हफ़ीजुल्लाहखां का हज़ारा क़ी०॥।≈)॥

इसमें नानाप्रकार के बहुतही उत्तम २ सब २१८४ कवित्त लिखे गये हैं स्थान २ पर तसवीरें भी बनी हैं॥

महिपालसिंह सरोज क़ी०≈)

इसमें सब तरह के ३०१ कवित्त बहुत अच्छे २ हैं॥

नानार्थनवसंग्रहावली क़ी०॥)

पण्डित मातादीन शुक्ल रचित सातपोथी का संग्रहहै (१) संग्रहावली (२) रामायणमाला (३) रामायणगीताष्टक (४) ज्ञानदोहावली (५) रसंसारिणी (६) तिथिबोध (७) मातृदत्तकृत पिंगल अक्षर बहुत पुष्ट कि वृद्ध और बालक भी पढ़ सक्ते हैं॥

कृष्णप्रिया क़ी०॥≡)

मंगलीप्रसाद विरचित व्रजविलास की तरहपर श्रीकृष्णजी का जन्म से वैकुण्ठ गमन पर्यन्त चरित्रहै यह काव्यालंकार युक्त बहुतही सुन्दर पुस्तक है॥

विज्ञापन

ग्रन्थ श्री गुरू नानक जी

यह पंजाबियों का सर्वमान्य ग्रन्थ तथा भारतमंडल में आदरणीय पदार्थ जिस में श्री गुरू नानक प्रभृति नौ बादशाहों के मुख से जो वचन और वाणियां निकली हैं उनका यथार्थ उल्लेख है अब गुरूमुखी भाषा से शुद्ध देवनागरी अक्षरों से इस छापेखाने में छपकर तैयार हुआ है। आजतक यह ग्रन्थ केवल गुरुमुखीही भाषा में था, जो सज्जन गुरुमुखी नहीं जानते थे वे नानकपंथ अनुयायी होने परभी इस के अमृतपान से विमुखथे, और यह ग्रन्थ पंजाब को छोड़ भारत भर को दुर्लभ था, अब सर्व साधारणलोग इस अपूर्व चमत्कारपूरित ग्रंथ का अवलोकन सहज ही में करसक्ते हैं। जो महाशय केवल देवनागरी के अक्षर मात्र जानते हैं वह अब इस का आनन्द उठा सके हैं। श्री नानक गुरू का मत भारत के सब प्रांतों में प्रचलित है पर पंजाब मात्र तो इसमत का अनुचर ही समझिये। वहां इस ग्रंथ साहब का जैसा मान्य है वह उन महाशयों को भलीभांति मालूम होगा जो अमृतसर जाकर दरबार साहब का दर्शन कर आये। मूल्य केवल ४) रु० है जिल्द सहित ४।=) और अंगरेज़ी कपड़े की जिल्द ४॥) है नीचे लिखे पतेपर मिलैगा॥

मेनेजर
नवलकिशोर प्रेस
लखनऊ

काव्यसंग्रह का सूचीपत्र।

इति

काव्यसंग्रह ॥

महेशदत्त कवि ॥

गणेशजीकी वन्दना ॥

दोहा ॥

गजमुख सुखकर दुखहरण तोहिं कहौं शिरनाय ॥
कीजै यश लीजै विनय दीजै ग्रन्थ बनाय १ ॥

परमेश्वरका धन्यवाद ॥

दो० जगदीश्वर को धन्य जिन उपजायो संसार ॥
क्षिति जल नभ पावक पवन करिइनकोविस्तार २
नृपहि दास दासहि नृपति पवि तृण तृणहिपषान ॥
जलधि अल्पसर लघुसरहि उदधिकरैक्षणमान ३
धनद रङ्क रङ्कहि धनद नीचहि करत महान ॥
क्षणहि महानहि नीच जो समरथ कृपानिधान ४
ता गुणगण जो कहि सकै असको जग मतिधीर ॥
सृजत अवत जग हरत ह्वै विधि हरि रुद्रशरीर ५
बरु महिरज गिनती करै नभतारे गिनि लेय ॥
बिन्दु गिनै बरु वृष्टिके विभुगुण किमिकहिदेय ६

प्रतिजन कोटिन मुखमिले प्रतिमुख रसना कोटि ॥
प्रति रसना कोटिन बसैं शेष शारदा मोटि ७
निशि बासर वर्णन करैं जब लग चन्द्र पतङ्ग ॥
पर ईश्वरगुण निकर को कहि न सकैं यक अङ्ग ८
यासों मैं नहिं कहि सकत कैसो है जगदीश ॥
है जैसो ताके चरण प्रणवों धरि निज शीश ९ ॥

ग्रन्थारम्भ के मास तिथ्यादिका वर्णन ॥

घनाक्षरी ॥ ब्योम राम नन्द चन्द १९३० संबतूबल क्षपक्ष शुचि शुचि मास तिथि सातैं ७ बुधवार मैं। भाषा काव्य संग्रह महेशदत्त बिप्र करै अग्नि नग नाग शशि १८७३ ईसासन सारमैं ॥ दूसरी जौलाई श्री कालिन ब्रौनिङ्ग बीर करुणा शरीर को निदेश धै लिलारमैं। यामैं कविताई न बड़ाई न छुटाई मोरि लिख्यों यथा तथ्य ग्रन्थ देख्यों जो प्रचार मैं १० ॥

तुलसीदास जी ॥

मित्रताके विषय में ॥

चौ० जेन मित्रदुखहोहिं दुखारी। तिन्हैं विलोकतपातक भारी ॥ निज दुख गिरिसम रजकै जाना। मित्रके दुख रज मेरु समाना ११ जिनकेअस मति सहज न आई। ते शठ हठि कत करत मिताई ॥ कुपथ निवारि सुपन्थ चलावा। गुण प्रगटें अवगुणहिं दुरावा १२ देत लेत मन शङ्क न धरहीं। बल अनुमान सदा हित करहीं ॥ विपति काल कर शत गुण नेहा। श्रुति कह सन्त मित्र गुण एहा १३ आगे कह मृदुवचन बनाई। पीछे अनहित मन कुटिलाई ॥ जाकरचित अहिगति समभाई।

अस कुमित्र परिहरें भलाई १४ सेवक शठ नृप कृपण कुनारी। कपटी मित्र शूल सम चारी॥ सखा शोच त्यागहु बल मोरे। सब विधि करब काज में तोरे १५॥

अङ्गद और रावण की वार्त्ता॥

चतुरता और धृष्टता के बिषयमें॥

चौ० यहां प्रात जागे रघुराई। पूछा मत सब सचिव बुलाई॥ कहहु वेगि का करिय उपाई। जामवन्त कह पद शिरनाई १६ सुनु सर्व्वज्ञ सकल उर बासी। बुधि बल तेज धर्म्म गुण रासी॥ मन्त्रकहब निजमति अनुसारा। दूत पठाइय बालिकुमारा १७ नीक मन्त्र सब के मन माना। अङ्गदसन कह कृपानिधाना॥ बालितनय बल बुधि गुण धामा। लङ्काजाहु तात मम कामा १८ बहुत बुझाय तुम्हें का कहऊँ। परम चतुर मैं जानत अहऊँ॥ काज हमार तासु हित होई। रिपुसन करबबतकही सोई १९॥

सो० प्रभुआज्ञाधारिशीश चरणवन्दि अङ्गदकह्यउ॥
सोइ गुणसागर ईश राम कृपा जापर करहु २०
स्वयं सिद्ध सबकाज नाथ मोहिं आदर दयउ॥
असबिचारियुवराज तनुपुलकितहर्षितहिये २१

चौ० वन्दि चरण उर धरि प्रभुताई। अङ्गद चल्यउ सबहि शिरनाई॥ प्रभु प्रताप उर सहज अशंका। रणबांकुरा बालिसुतबंका २२ पुर पैठत रावण कर बेटा। खेलत रहा सो ह्वैगै भेंटा॥ बातहि बात कर्ष बढ़ि आई। युगल अतुल बल अरु तरुणाई २३ त्यहिं अंगदकहँ लात उठाई। गहि पद पटक्यो भूमि भ्रमाई॥ निशिचर

निकरदेखि भटभारी। जहँ तहँ चले न सकहिं पुकारी २४ एक एक सन मर्म्म न कहहीं। समुझि तासु बध चुप ह्वै रहहीं॥ भयहु कोलाहल नगर मँझारी। आवाकपि लंका ज्यहिं जारी २५ अबधौं काह करैं करता। अति सभीत सब करैं बिचारा॥ बिन पूँछे मग देहिं बताई। जिहि चितवै सो जाय सुखाई २६॥

दो० गयो सभादरबार तब सुमिरि रामपद कञ्ज॥
सिंहठवनि इतउत चितै धीर बीर बलपुञ्ज २७

चौ० त्वरित निशाचर एक पठावा। समाचार रावणहिंजनावा॥ सुनत वचन बोल्यो दशशीशा। आनहु बोलि कहांकर कीशा २८ आयसुपाय दूत बहुधाये। कपिकुञ्जरहि बोलिलैआये॥अङ्गददीख दशाननवैसा। सहित प्राण कज्जलगिरि जैसा २९ भुजाबिटप शिर शृङ्गसमाना। रोमावली लता तरुनाना॥ मुख नासिका नयन अरु काना। गिरिकन्दरा खोह अनुमाना ३० गयो सभा मन नेकु न मुरा। बालितनय अतिबल बांकुरा॥उठे सभासद कपिकहँदेखी। रावणउरभा क्रोधविशेखी ३१॥

दो० यथा मत्त गजयूथ महँ पञ्चानन चलिजाय॥
रामप्रताप सँभारिउर बैठसभहि शिरनाय ३२

चौ० कहदशकन्ध कवननैंबन्दर। मैं रघुबीरदूत दशकन्धर॥ ममजनकहि त्वहिंरही मिताई। तवहितकारणआयउँभाई ३३ उत्तमकुल पुलस्त्यकर नाती। शिव विरञ्चि पूज्यहु बहुभाँती॥वर पायहु कीन्ह्यो सबकाजा। जीत्यहु लोकपाल सुरराजा ३४ नृप अभिमान मोह बश किम्बा। हरिआनेहु सीता जगदम्बा॥ अब शुभ

कह्यो करहु तुम मोरा । सब अपराध क्षमहिं प्रभु तोरा ३५ दशन गहहु तृण कण्ठकुठारी । पुरजनसङ्ग सहित निजनारी ॥ सादर जनकसुता करिआगे । यहि विधि चलहु सकल भयत्यागे ३६ ॥

दो० विश्वरूप रघुवंशमणि त्राहि त्राहि अबमोहिं ॥
सुनतै आरत बचन प्रभु अभय करैंगे तोहिं ३७

चौ० रेकपि पोच बोलु सम्भारी । मूढ़ न जानसि मोहिं सुरारी॥ कहु निजनाम जनक कर भाई । क्यहि नाते मानिये मिताई ३८ अङ्गदनाम बालिकर बेटा । तासों कबहुँ भई त्यहिं भेटा॥ अङ्गद वचन सुनत सकुचाना । रहा बालि बानर मैं जाना ३९ अङ्गद त्यही बालिकर बालक । उपज्यहु बंश अनल कुलघालक ॥ गर्भ न खस्यो बृथा तुम जाये । निजमुख तापस दूत कहाये ४० अब कहु कुशल बालि कहँ अहई । बिहँसि वचन अङ्गद अस कहई ॥ दिन दश गये बालि पहँ जाई । पूछ्यहु कुशल सखा उरलाई ४१ राम विरोध कुशल जस होई । सो सब तुमहिं सुनाइहि सोई ॥ सुनु शठ भेद होय उर ताके । श्रीरघुवीर हृदय नहिं जाके ४२ ॥

दो० हमकुलघालक सत्यतुम कुलपालक दशशीश ॥
अन्धउबधिर न कहहिंअस श्रवणनयनतवबीश ४३

चौ० शिव विरञ्चि सुरमुनि समुदाई । चाहत जासु चरण सेवकाई ॥ तासु दूत ह्वै हमकुल बोरा । ऐसी मति उर विहरु न तोरा ४४ सुनि कठोर वाणी कपिकेरी । कहत दशानन नयन तरेरी ॥ खल तव बचन कठिन मैं सहऊँ । नीति धर्म्म सब जानत अहऊँ ४५ कह कपि धर्म्म

शीलता तोरी । हमहुँसुना कृत परत्रियचोरी ॥ देखहु नयन दूतरखवारी । बूड़ि न मरहु धर्म्म व्रतधारी ४६ नाक कान बिन भगिनि निहारी । क्षमाकीन्ह तुम धर्म्म विचारी ॥ धर्म्मशीलता तव जग जागी । पावा दरश हमहुँ बड़भागी ४७ ॥

दो० जनिजल्पसि जड़जन्तुकपि शठविलोकुममबाहु ॥
लोकपाल बलविपुल शशि ग्रसनहेतु जिमिराहु ४८
पुनिनभसर ममकर निकर कर कमलन पर बास ॥
शोभित भयो मरालइव शम्भुसहित कैलास ४९

चौ० तुम्हरे कटक माँझ सुनु अङ्गद । मोसनभिरहि कौन योधा बद ॥ तव प्रभु नारिविरह बलहीना । अनुज तासुदुख दुखितमलीना ५० तुम सुग्रीव कूलद्रुम दोऊ । अनुज हमार भीरु अतिसोऊ ॥ जाम्बवन्त मन्त्री अति बूढ़ा । सो किमि होय समर आरूढ़ा ५१ शिल्पकर्म्म जानत नल नीला । है कपि एकमहाबलशीला ॥ आवा प्रथम नगर ज्यहिंजारा । सुनिहँसि बोल्यहु बालिकुमारा ५२ सत्यवचनकह निशिचर नाहा । साँचहुकीन्ह कीशपुरदाहा ॥ रावण नगर अल्पकपि दहई । सुनि असवचन सत्यको कहई ५३ जो अति सुभट सराह्यहु रावन । सो सुग्रीव केर लघुधावन ॥ चलै बहुत सो वीर न होई । पठवा खबरि लेन हम सोई ५४ ॥

दो० सत्य नगर कपि जारेउ बिनप्रभु आयसु पाय ॥
फिरिनगयउ सुग्रीवपहँ त्यहिभयरह्यो लुकाय ५५
सत्य कहसि दशकंठ सब मोहिं न सुनेकछु कोह ॥
कोउन हमरे कटकअस तुमसन लरतजोसोह ५६

प्रीतिबिरोध समान सन करियनीति असिआहि ॥
जो मृगपति बधे मेढुकहि भलो कहै को ताहि ५७
यद्यपि लघुता राम कहँ तोहिं बधे बड़ दोष ॥
तदपि कठिन दशकंएठशठ क्षत्रिजाति कररोष ५८
हँसिबोल्यो दशमौलि तब कपिकर बड़ गुण एक ॥
जो प्रतिपालै तासुहित करै उपाय अनेक ५९

चौ० धन्य कीश जो निजप्रभु काजा । जहँतहँनाचहिं परिहरि लाजा ॥ नाच कूदकर लोक रिझाई । पतिहित करहिं धर्म्म निपुणाई ६० अंगद स्वामिभक्त तवजाती। प्रभुगुण कस न कहसि यहि भाँती ॥ मैं गुणगाहक परम सुजाना । तव कटुवचन करौं नाहिं काना ६१ कह कपि तवगुण गाहकताई । सत्य पवनसुत मोहिंसुनाई ॥ बन विध्वंसि सुतबधि पुरजारा । तदपिनत्यहिं कछुकृत अपकारा ६२ सोइ बिचारि तवप्रकृति सुहाई । दशकन्धर मैं कीन्ह ढिठाई ॥ देख्यउँ आय जो कछु कपिभाषा । तुम्हरे लाज न रोष न माखा ६३ ॥

दो० वक्रउक्ति धनु वचनशर हृदय दह्यो रिपु कीश ॥
प्रतिउत्तरसनसिन्हमनहुँ काढ़तभटदशशीश ६४

चौ० जो असिमति पितुखायहुकीशा। कहि असवचन हँसा दशशीशा ॥ पितहिखाय अबखात्यों तोहीं। अबहीं समुझि परा कछु मोहीं ६५ बालि विमल यश भाजन जानी । हतौं न तोहिं अधम अभिमानी ॥ कहु रावण रावण जग केते । मैं निज श्रवण सुने सुनुतेते ६६ रावण एक महाबल गर्वा । जीतन चल्यो सुरासुर सर्वा ॥ सागर उतरि पार सो गयऊ । नारिवृन्द तहँ देखत भ-

यऊ ६७ तिनसन कहिसि पतिन पहँ जाहू । कहु यक आयहु निशिचर नाहू ॥ तब हम तिन्हैं जीतिसंग्रामा । लैजैहैं तुमको निजधामा ६८ सुनत बचन यक जरठ रिसानी । धाय चरणगहि गगन उड़ानी ॥ गई दूरि धरिधरि झकझोरा । डारिसि सिन्धुमध्यअतिजोरा६९॥

दो० गयो अगाध अचेतह्वै मरै न बिप्र प्रसाद ॥
सावधान उठि चल्यउपुनि हियेनहर्ष बिषाद ७०

चौ० यक रावण की कहौं कहानी । जीतै चल्यो शशिहि अभिमानी ॥ गयो निकट अति शीतन मरेऊ । कंपितगात विकलभय फिरेऊ ७१ बलिजीतन यक गयो पताला । राखा बांधि शिशुन हयशाला ॥ खेलहिं बालक मारहिं जाई । दया लागि बलि दीन्ह छुड़ाई ७२ एक बहोरि सहसभुज देखा । धाय धरा जनु जन्तु बिशेखा ॥ कौतुक लागि भवन लैआवा । सो पुलस्त्यमुनि जाय छुड़ावा ७३ बहु प्रकार मुनि ताहिसिखावा । गयो स्वपुर पर लाज न आवा ॥ अति निलज्ज मैं जानत ताही । तासम को अपमान लहाही ७४ ॥

दो० एककहत मोहिंसकुच अति रह्योबालिकीकांख ॥
तिनमहँ रावण तैं कवन सत्य कहै तजिमाख ७५

चौ० सुनु शठ सोइ रावण बल शीला । हरगिरि जानु जासुभुजलीला ॥ जानुउमापति जासु शुराई । पूज्यों ज्यहि शिरसुमन चढ़ाई७६शिरसरोज निजकरन उतारी । पूज्यों अमितबार त्रिपुरारी ॥ भुजविक्रम जानहिं दिक्पाला । शठ अजहूँ जिनकेउर शाला ७७ जानहिं दिग्गज उरकठिनाई । जब जब भिरेउँ जाय बरिआई ॥

जिनके दशन कराल न फूटे। उर लागत मूलक इव टूटे ७८ जासु चलत डोलत इमि धरणी। चढ़त मत्त गज जिमि लघु तरणी॥ सोइ रावण जग विदित प्रतापी। सुने न श्रवण अलीक अलापी ७९॥

दो० त्यहिरावणकहँ लघुकहसि नरकरकरसिबखान॥
रे कपिबर्व्वर खर्ब्ब खल तब न जानअबजान८०

चौ० सुनि अङ्गद सकोप कह बानी। बोलु सँभारि अधम अभिमानी॥ सहसबाहु भुज गहन अपारा। दहन अनल कुल जासु कुठारा८१ जासु परशु सागर खर धारा। बूड़े नृप अगणित बहु बारा॥ तासु गर्ब्ब ज्यहि देखत भागा। सो नर किमि दशकण्ठ अभागा ८२ राम मनुज कसरे शठ बङ्गा। धन्वी काम नदी पुनि गङ्गा॥ पशु सुरधेनु कल्प तरु रूखा। अन्नदान अरु रस पीयूषा ८३ वैनतेय खग अहि सहसानन। चिन्तामणिकी उपल दशानन॥ सुनु मतिमन्द लोक वैकुण्ठा। लाभकि रघुपति भक्ति अकुण्ठा ८४॥

दो० सेन सहित तव मान मथि बन उजारि पुरजारि॥
कसरेशठहनुमानकपि गयो जो तवसुतमारि ८५

चौ० सुनु रावण परिहरि चतुराई। भजसि न कृपासिन्धु रघुराई॥ जो खल भयसि राम कर द्रोही। ब्रह्म रुद्र सक राखि न तोही ८६ मूढ़ मृषा जनि मारसि गाला। राम बैर होइहि अस हाला॥ तव शिर निकर कपिन के आगे। परिहैं धरणि राम शर लागे ८७ ते तव शिर कन्दुक इव नाना। खेलहिं भालु कीश चौगाना॥ जबहिं समर कोपहिं रघुनायक। छूटहिं अति कराल बहु

शायक ८८ तबकि चलिहि अस गाल तुम्हारा। अस विचारि भजु राम उदारा॥ सुनत वचन रावण फिर जरा। जरत महानलमहँ घृतपरा ८९॥

दो० कुम्भकर्ण सम बन्धु मम सुत प्रसिद्ध शक्रारि॥
ममबलश्रवणनसुन्यसिशठ जित्योंचराचरझारि९०

चौ० शठ शाखामृग जोरि सहाई। बांध्यो सिन्धु यहै प्रभुताई॥ लाँघहिं खग अनेक बारीशा। शूरनहोहिंसो सुनु शठकीशा ९१ मम भुज सागर जल बल पूरा। जहँ बूड़े सुर नर बहु शूरा॥ बीस पयोधि अगाध अपारा। को अस बीर जो पावै पारा ९२ दिकपालनपै नीर भरावा। भूप सुयश खल मोहिं सुनावा॥ जोपै समर सुभट तव नाथा। पुनि पुनि कहसिजासु गुणगाथा ९३ तो बसीठ पठवा केहि काजा। रिपुसनप्रीति करत नहिं लाजा॥ हरगिरि मथन निरखि मम बाहू॥ पुनि कपि शठ निज प्रभुहिं सराहू ९४॥

दो० शूरकवन रावणसरिस स्वकर काटि निजशीश॥
हुते अनलमहँ बार बहु हर्षित साखि गिरीश९५

चौ० जरत विलोकयउँ जबहिंकपाला। विधिके लिखे अङ्क निज भाला॥ नरके कर आपन बध बांची। हँस्यों जानि विधि गिरा असाँची ९६ सो मनसमुझि त्रास नहिं मोरे। लिखा विरंचि जरठ मति भोरे॥ आन वीर बल शठ मम आगे। पुनि पुनि कहसि लाज परित्यागे ९७ कह अंगद सलज्ज जगमाहीं। रावण त्वहिं समान कोउ नाहीं॥ लाजवन्त तव सहज स्वभाऊ। निजगुण निजमुख कहै न काऊ ९८ शिर अरु शैलकथा चितरही।

ताते बार बीस तैं कही॥सो भुजबल राख्यो उरघाली।
जीत्यो सहसबाहु बलि बाली ९९ सुनु मतिमन्द देह
अबपूरा। काटे शीश न होइहि शूरा॥ इन्द्रजालि कहँ
कहिय न वीरा। काटै निजकर सकल शरीरा १००॥

दो० जरहिं पतंग मोहवश भार बहैं खर वृन्द॥
तेनहिं शूर कहावहीं समुझिदेखुमतिमन्द १०१

चौ० अब जनि बतबढ़ाव खल करई। सुनु मम
वचन मान परिहरई॥ दशमुख मैं न बसीठी आयो।
अस विचारि रघुवीर पठायो १०२ बारबार अस कह्यो
कृपाला। नहिं गजारियश बधेशृगाला॥ मनमहँ समुझि
वचन प्रभुकेरे। सह्यों कठोरवचन शठ तेरे१०३ नहिंतो
करि मुख भञ्जन तोरा। लै जात्यों सीतहि बरजोरा॥
जाना तवबल अधमसुरारी। शूने हरिआनी परनारी१०४
तैं निशिचरपति गर्व्व बहूता। मैं रघुपति सेवक कर
दूता॥ जो न राम अपमानहिं डरऊँ। त्वहिं देखत अस
कौतुक करऊँ १०५॥

दो० तोहिं पटकि महि सेनहति चौपटकरि तव गाउँ॥
तव युवतीन्ह समेत शठ जनकसुतै लैजाउँ १०६

चौ० जो अस करउँ न तदपि बड़ाई। मुये बधे
नहिं कछु मनुसाई॥ कौल काम वश कृपण विमूढ़ा।
अति दरिद्र अयशी अति बूढ़ा १०७ सदा रोग वश
सन्तत क्रोधी। विष्णुविमुख श्रुति सन्त विरोधी॥ तनु
पोषक निन्दक अघखानी। जीवत शवसम चौदहप्रानी
१०८ अस विचारि खल बधौं न तोही। अब जनिरिस
उपजावसि मोही॥ सुनि सकोप कह निशिचर नाथा।

अधर दशनडसि मींजत हाथा १०६ रेकपि अधम मरण अब चहसी। छोटे बदन बात बड़ि कहसी॥ कटु जल्पसि शठ बुधि बलजाके। बल प्रताप बुधि तेज न ताके ११०॥

दो० अगुण अमानि विचारि त्यहि पितादीनवनवास॥
सोदुखअरुयुवतीविरहपुनिनिशिदिनममत्रास १११
जिनके बलकर गर्व्व त्वहिं ऐसे मनुज अनेक॥
खाहिंनिशाचरदिवसनिशि मूढ़समुझुतजिटेक ११२

चौ० जब त्यैं कीन रामकै निन्दा। क्रोधवन्त तब भयो कपिन्दा॥ हरि हर निन्दा सुनैं जे काना। होयपाप गोघात समाना ११३ कट कटाय कपि कुञ्जर भारी। द्वौ भुजदण्डतमकि महिमारी॥ डोलत धरणि सभासद खसे। चले भागिभय मारुतग्रसे ११४ गिरत दशानन उठ्यो सँभारी। भूतलपरे मुकुट षट चारी॥ कछु त्यैं लै निज शिरन सवाँरे॥ कछु अंगद प्रभुपास पवाँरे ११५ आवत मुकुट देखि कपिभागे। दिनहीं लूक परन विधि लागे॥ कीरावण करिकोप चलाये। कुलिशचारि आवत अतिधाये ११६ कहप्रभु हँसि जनि हृदयडराहू। लूकन अशनि केतु नहिं राहू। ये किरीट दशकन्धर केरे। आ-वत बालितनयके प्रेरे ११७॥

दो० तड़पि पवनसुत करगहे आनि धरे प्रभुपास॥
कौतुक देखहिंभालुकपि दिनकरसरिसप्रकास ११८
वहाँ सकोपि दशानन सब सन कहत रिसाय॥
धरहुकपिहि धरिमारहू सुनि अंगद मुसुकाय ११९

चौ० कहा कोपि दशकन्ध रिसाई। धरि मारहुकपि

भागिनजाई॥ यहि विधि बेगि सुभट सब धावहु। खाउ भालुकपि जहँ तहँ पावहु १२० मर्कटहीन करहु महि जाई। जिअत धरहु तपस्वी द्वौ भाई॥ पुनिसकोप बोल्यो युवराजा। गाल बजावत तोहिं न लाजा १२१ मरु गलकाटि निलज कुलघाती। बल विलोकि विदरत नहिं छाती॥ रे तिय चोर कुमारग गामी। खल मलराशि मन्दमति कामी १२२ सन्निपात जल्पसि दुर्व्वादा। भयसि कालवश खल मनुजादा॥ याको फल पावहुगे आगे। वानर भालु चपेटन लागे १२३ राम मनुज बोलत अस वानी। गिरै न तव रसना अभिमानी॥ गिरिहैं रसना संशय नाहीं। शिरन समेत समर महि माहीं १२४॥

सो० सो नर कस दशकन्ध बालि बध्यो जिन एक शर॥
बीसहुलोचनअन्ध धिकतव जन्म कुजातिजड़ १२५
तव शोणितकी प्यास तृषित रामशायक निकर॥
तज्योंतोहिंत्यहित्रासकटुजल्पसिनिश्चरअधम १२६

चौ० मैं तव दशन तोरबे लायक। आयसु मोहिं न दीन रघुनायक॥ अस रिस होत दशों मुख तोरौं। लङ्कागहि समुद्रमहँ बोरौं १२७ गूलर फल समान तव लङ्का। बसहिं मध्य जनु जन्तु अशङ्का॥ मैं वानर फल खात न बारा। आयसुदीन न रामउदारा १२८ युक्तिसुनत रावण मुसुकाई। मूढ़ सिखे कहँ बहुत झुठाई॥ बालि कबहुँ अस गाल न मारा। मिलि तपस्विनते भयसि लवारा १२९ साँचौ मैं लवार भुज बीहा। जो न उपारौं तव दश जीहा॥ राम प्रताप समुझि कपि कोपा। सभा

माँझ प्रणकरि पदरोपा १३० जो मम चरण सकहु शठ टारी । फिरहिं राम सीता मैं हारी ॥ सुनहु सुभट सब कह दशशीशा । पदगहि धरणि पछारहु कीशा १३१ इन्द्रजीत आदिक बलवाना । हर्षिउठे जहँतहँ भटनाना॥ झपटहिं बलकरि विपुल उपाई । पद न टरै बैठैंशिरनाई १३२ पुनि उठि झपटैं सुर आराती । टरैनकीशचरण यहिभाँती ॥ पुरुष कुयोगी जिमि उरगारी । मोहविटप नहिं सकहिं उपारी १३३ ॥

दो० भूमि न छाँड़त कपि चरण देखत रिपुमद भाग ॥
कोटिविघ्नजिमिसन्तकहँ तदपिनीतिनहिंत्याग १३४

चौ० कपि बल देखि सकल हिय हारे । उठा आप युवराज प्रचारे ॥ गहत चरण कह बालि कुमारा । मम पद गहे न तोर उबारा १३५ गहसि न राम चरण शठ जाई । सुनत फिरा मन अति सकुचाई ॥ भयउ तेज हत श्री सब गई । मध्य दिवस जिमि शशि सोहई १३६ सिंहासन बैठा शिर नाई । मानहुँ सम्पति सकल गँवाई ॥ जगदाधार प्रणतपति रामा । तासु विमुख किमिलहै विश्रामा १३७ उमा राम कर भृकुटि विलासा । होय विश्व पुनि पावै नासा ॥ तृणते कुलिश कुलिशतृण करहीं । तासु दूत प्रण कहु किमि टरहीं १३८ पुनि कपि कहा नीति विधि नाना । मानत नाहिं काल नियराना ॥ रिपु मद मथि प्रभु सुयश सुनाया । यह कपि चला बालिनृप जाया १३९ अबहीं मुख का करौं बड़ाई । हति हौं खेत खेलाय खेलाई ॥ प्रथमहिं तासु तनयकपि मारा । सो सुनि रावण भयो दुखारा १४० यातुधान

अङ्गद बल देखी। भय व्याकुल सब हृदय विशेखी॥ कहहिं विचारि सकल मन माहीं। रावण कीन कार्य्य भल नाहीं १४१॥

दो० रिपुबल धर्षि हर्षि हिय बालितनय बलपुञ्ज॥
सजलनयनतनुपुलकअति गहेरामपदकञ्ज१४२

मदनगोपाल कवि॥

संसार की अनित्यता का वर्णन॥

दो० नृपतियशोक विनाश हित कह्यो ऋषभ बैराग॥
सुने जाहिके नरन को मोहज तम सब भाग १

ऋषभ वाक्य॥

चामर छंद-बेटिव्यर्थ कौनहेतु रोय आंख फोरई। आदि कौन भो कहाँ मरो सु कौन जोरई॥ जन्म काल ज्वान वृद्ध मृत्यु देह धर्म्मई। तोय फेन तुल्य नज्ञ जानि मोह कर्म्मई २ विष्णु मायते भये गुणौ जुसत्व आदि ज्वै। सृष्टिसर्व्व है रची तिन्हों जुलोक लोकवै॥ सत्वभूत देवता रजो मनुष्य मानिये। जौन गाय पक्षि कीट तामसादि जानिये ३ वासना अधीन जीव जाति सर्व्व संग्रहै। पुण्य पाप कर्म्म ते सुखौ दुखौ सबैलहै॥ कल्पमान आसु जासु तौन देवनाषई। सर्व्व दोष वृद्धदेहको मनुष्य राखई ४ देह जन्म देखि हर्ष मृत्युमें न रोइये। है न आदि नाश जाय फेन तुल्य जोइये॥गर्भ नाशहोत कोय बाल ज्वान बूढ़ऊ। पूर्व्व कर्म्म जासु जौन तौन भोगगूढ़ऊ ५ कर्म्म है अलंघनै अनित्य देहसर्व्वदा। याहिते न शोचु तातु शोचु है न पुत्रदा॥ नित्य स्वप्न कौनको जु इन्द्र

जाल तैसेहीं । देह योग मेह छाँह झूँठ जानु वैसेहीं ६
आपने गये जु जन्म कोटि कीटि के तकै । कौन माय
कौन तात कन्यकातुकौन के ॥ तौन पूत तौन बाप है कहां
कहौ सबै । याहि जानि पुत्र शोक छोडु मोह को अबै ७
भूमि तेज तोय वायु व्योम भूत पांच क्यों । चर्म्म रक्त
मांस मेद अस्थि मज्ज वीज ज्यों ॥ हैं शरीरमें सबै मलादि
मूत्र बिष्ठज्यों । रानि शोक मोह छोडु जानि पुत्रबादित्यों ८
मन्त्र तन्त्र औषधादि मृत्यु जीत होत कै । तौ सबै सु-
जान लोग लोक ते न जातख्वै ॥ मृत्यु एक की जु आजु
भोर मृत्यु आनकी। यों विचार चित्तमें कहौ शिवा शिवान
की ९ शम्भुकी कथा सुधा पिये जो चित्त शोधिकै। लोक
भोग मद्य छोडि होय शम्भु बोधिकै ॥ राजपत्नि यत्न
छोडु शोक जो कुतर्कते । गौरिनाथ तें सनाथ होहु भाजि
नर्कते १० ॥

दो० यहिविधि योगी नृपतियहि समुझायो कहिज्ञान॥
बोली सो तब ताहि सों पद छ्वै जानि महान ११

नारायणदास कवि ॥

विद्याकी प्रशंसा ॥

दो० अजर अमरकी भांतिकै विद्या धनहिं बढ़ाव ॥
मनहुँ मीचु चोटी गहे देत बिलम्ब न लाव १
विद्याधन सब धनन से सन्त कहत सरदार ॥
मोल बड़ो नहिं घटतघर दिन दिन होत उदार २
विद्या देत विनीत करि विनय बड़ाई देत ॥
पढ़त जात धन पाइये दान भोग सुख हेत ३
दारुण नृपति समुद्र सों विद्या नदी समान ॥

लै पहुँचावै नीचहूं लाभ भाग्य परमान॥ ४
विद्या नदी नदीश नृप निचहु मिलावै हाल॥
दारुण दानि दया करैं होय जो भाग्य कपाल॥ ५
जासों सब संशय मिटै अनदेखा सो देखु॥
पढ़िबो पोढ़ी आँखिहै अपढ़ अन्धकरिलेखु॥ ६
सोई भो जाके भये ऊँच होय निज गोत॥
जनन मरण संसार में मुये कौन फिरि होत॥ ७
एकै साधु पढ़ा भलो पूत सिंह सरदार॥
कुल उजियारो चन्द्र ज्यों करै धरै शिरभार॥ ८
गुणी गनत जाकी नहीं लीक भई अगलौनि॥
पुत्रवती सुतताहि से होत सो बन्ध्याकौनि॥ ९
दान तपस्या शूरता विद्या लाभ बखानि॥
भयो न जाके पूत सों मातु मूत कै जानि॥ १०
अतिदुखकरितपजिनकियो तीरथराजप्रयाग॥
ताको सुत धन धर्म्मसों सदा रहै बड़भाग॥ ११
चौ० अर्जुन करत आप अलसाई। ताको सम्पति रही न जाई॥ पूर्व्व जन्म कीन्हों जो धर्म्मा। सोई भाग्य कहावै कर्म्मा १२ ताते भाग्य चही अनुकूला। यत्न करी पुरुषारथ मूला॥ ज्यों माटी करता करलेई। कीन्हों चहै सोई करि देई १३ यह उपखान लोग सब गावैं। जैसा करैं सो तैसा पावै॥ यासों विद्या पढ़िये भाई। बिनश्रम श्रमफल कहँ किनपाई १४॥
दो० पुरुष सिंह जो उद्यमी लक्ष्मी ताकी चेरि॥
भाग्य भरोसे जे रहैं कुपुरुषभाषैं टेरि॥ १५
भाग्य भरोसो मन्द करि करुपौरुष तजिरोष॥

यत्नकरै जो नामिलै ताउ करै निर्दोष ॥ १६
काक तालके न्याय सों निधि आगे जो होय ॥
भाग्य भरोसे क्यों रहै हाथ पसारोलोय ॥ १७
मात पिता बैरी भये जिन न पढ़ाये बाल ॥
हंस समाज गये कहौ बकके कौनहवाल ॥ १८
काञ्चन सङ्गति काँचज्यों मरकतमणि द्युतिहोइ ॥
त्योंहीसन्तन साथतें मूरख पण्डित होइ ॥ १९
नीचसाथ बुधिनीचहै समसों रहै समान ॥
बड़े साथ दिनदिनबढ़ै पण्डित कहत प्रमान ॥ २०
काव्य शास्त्र के अर्थमें पण्डित बितवत काल ॥
व्यसन नींद अरु कलह में मूरखरहै विहाल ॥ २१
पण्डित सुखसोंकरतहैं दानधर्म्म के भोग ॥
प्रतिदिनमूरुख लहतहैं सहसशोकभयरोग ॥ २२
यज्ञ दान तप अध्ययन सत्य क्षमाधृति सोय ॥
अरुअलोभगनि धर्म्मये आठभाँति ते होय ॥ २३
भरे हीनजल बिन्दु घट क्रमक्रमसुनहुँ सुजान ॥
विद्या औ धनधर्म्मकी उपमा यहै निदान ॥ २४
बालहुते सिखि लीजिये युक्ति कहत जो होय ॥
रविकोजहाँप्रकाश नहिं दीप प्रकाशतलोय ॥ २५

सहायताऔरश्रमकावर्णन ॥

दो० अंग पक्षजाने विना देह निदरि मति डारि ॥
एक टिटिहिरी समुद्रको व्याकुल कीन्होंमारि ॥ २६

चौ० पूँछी सिंह कथाहै कैसी। दमनक कही सुनो है जैसी ॥ समुद्र निकट टिटिहिरी जोरी। वैसै बसैं यद्यपि बहुतेरी २७ आव निकट वर्षा को काला। पतिसों कह्यो

टिटिहिरी हाला॥वर्षा योग्य देखु कहुँ ठौरा। नीकोलागै जहँ कहुँ औरा २८ टिटिहा कही जाउँ लै कहाँ। यहिते नीक औरहै जहाँ ॥ कह्यौ टिटिहिरी सुनिये नाथा। बार बार घर बूड़ैं पाथा २९ सो पुनि निज नारी सों कही। अपनी शक्ति जनावा चही ॥ भामिनि सुनु अपने घर रहऊँ। हौं काहू सों कछु नहिं कहऊँ ३० करै सिन्धु वि-ग्रह बिन काजा। तौ फिरि हमहूं करब इलाजा॥ बिहँसि बिहँसि सो पति सों कही। नाथ बात नाहिं ऐसी चही ३१ सागर सों तुम सों है केतो। अन्तर तुम जानतहौ तेतो ॥ यद्यपि अन्तर बहुहै प्यारी। खगपति करहिं सहाय हमारी ३२ तब विश्वास वचन मन दीन्हें। वाही ठौर परस्थौ कीन्हें ॥तब समुद्र अण्डा हरि लीन्हें। देखौं शक्ति यहै मनकीन्हें ३३ तब दुख मानि टिटिहिरी रोई। नाथ जलधि सम्पति सब खोई॥ कष्टपरो तबहीं मैं कही। तुम फिरि बात न राखीसही ३४ टिटिहा कह्यो तु जनि डरु प्यारी। यह कहि आपुहि बात विचारी॥ सब पक्षिनकर मेला कीन्ह्यों। गरुड़हिकी सेवामनदीन्ह्यों३५ गरुड़ गयो अपने प्रभु पासा। जौन करै बरुणालय बासा॥ प्रलय सृष्टि प्रतिपालनहेता। बाँधी धर्म्म कर्म सों सेता ३६ नारायण करुणामय जौना। टारै हुक्म दूसरा कौना॥ कुम्भज ऋषि कहँ आयसु दीना। ऋषि तब गमन उदधि पहँकीना ३७ देखा टिटिह टिटिहिरी आई। चोंचैं भरि भरि पानी लाई॥ टोंटन सों बारू लै जाई। डारैं समुद्र मध्य तब आई ३८॥

दो० ऋषि पूँछी तब टिटिहिरिहि कहा करत तुमदोय॥

कही टिटिहिरी हरिलियो अण्ड हमारे तोय॥३९

चौ० ताते क्रोधहि कियो अपारा । समुद्रहि पाटिकरब हम क्षारा ॥ जब जाइहि यह समुद्र सुखाई । तब हमरे जिय अनँद बधाई ४० कुम्भजकही जलधि गहिराई । कब लगि याको पटिहौ धाई ॥ सुनु ऋषि हमरे जियकी बाता । जो जो जन्म धरब हम ताता ४१ कौनिउँ योनिमें जन्म हमारा । पाटब समुद्र न और विचारा ॥ और न काज करन हम आँटब । जन्महिं भये समुद्रहि पाटब४२ समुद्र केर जब होइहि नासा । तब हमरे जिय होय सुपासा ॥ ये हमरे सब बालक खोये । बड़ अपराध किये दुख बोये ४३ जब याकी जर राखब नाहीं । तब हम सुख होइहि मन माहीं ॥ कुम्भज ऋषि तब कियो विचारा । पक्षिन के दुख बड़ो अपारा ४४ तब कुम्भज ऋषि अचमन कीना । सबै समुद्र शोषि तब लीना ॥ सागर व्याकुलता अति भयऊ ॥ सागर जीव सबै अकुलयऊ ४५ तब समुद्र अण्डा सब आना । पीड़ित मच्छ कच्छ अकुलाना ॥ जलधि आय शावक लै दीन्ह्यों । टिटिहटिटिहिरी अण्डा लीन्ह्यों ४६ सुखित भये मुनि अस्तुति कीन्ह्यों । नाथ हमैं बहुतै सुख दीन्ह्यों ॥ तब कुम्भजऋषि पूँछी लीना । क्रोध तुम्हार गयो की पीना ४७ महाराज अब सब सुख भेंटा । जन्म जन्म कर दुख सब मेंटा ॥ इतना सुनि कुम्भजऋषि बोले । वचन सुधा सम अतिहि अमोले ४८ ॥

दो० अब तुम जाय यहां ते दूरि करौ कहुँ बास ॥
जहां न यह जल पहुँचै तहां तुम्हार सुपास॥४९

चौ० टिटिह टिटिहिरिहि अस्तुति कीन्ह्यों । जय अगस्त मुनि आज्ञा लीन्ह्यों । नमस्कार करि दूनों चले । शावक अपने करधरि भले ५० जाय दूरि तिन्ह कीन्हों बासा । जहां सुखहि कर अहै निवासा ॥ पुनि सागर तब अस्तुति कीन्हीं । विजयभूमि पक्षिन कहँ दीन्हीं ५१ जय कुम्भजऋषि सुखके दाता । अब जल छांड़ि देहु तुम ताता ॥ नाक उरग झष व्याकुल मरता । दीन दयालु अनुग्रह करता ५२ सुनि अस्तुति तब छोड़यो पानी । कुम्भज दीन दयालु सुज्ञानी ॥ भरेउ समुद्र सुखित सब भयऊ । जीवन केर दुःख सब गयऊ ५३ जलचर तब सब करहिं कलोला । एक एक करि जय जय बोला ॥ तब कुम्भजऋषि गमनत भयऊ । दुःख समुद्र केर सब गयऊ ५४ ॥

दो० याही ते हौं कहत हौं अङ्गी अङ्ग विचार ॥
तेजहिं सों नाहिं कीजिये निर्बलहूसोंमार ॥ ५५

तुलसीदासजी ॥

सुसङ्ग की प्रशंसा ॥

चौ० सुजन समाज सकल गुण खानी । करौं प्रणाम सप्रेम सुबानी ॥ साधु चरित शुभसरिसकपासू । निरस विशद गुणमय फल जासू १ जोसहि दुख पर छिद्र दुराया । वन्दनीय ज्यहि जगयश पाया ॥ मुदमंगल मय सन्त समाजू । ज्यों जग जङ्गम तीरथराजू २ राम भक्तिजहँ सुरसरि धारा । सरस्वति ब्रह्म विचार प्रचारा ॥ विधि निषेध मय कलिमल हरणी । कर्म्म कथा रविनन्दिनिवरणी ॥ हरि हर कथा विराज त्रिबेनी । सुनत सकल मुद मंगल

देनी ॥ वट विश्वास अचल निज कर्म्मा । तीरथराज समाज सुधर्म्मा ४ सबहि सुफल सबदिन सबदेशा। सेवत सादर शमन कलेशा ॥ अकथ अलौकिक तीरथ राऊ। देय सद्य फल प्रकट प्रभाऊ ५ ॥

दो० सुनिसमुझहिंजनमुदितमनमज्जहिंअतिअनुराग॥
लहहिंचारिफलअक्षततनु साधुसमाजप्रयाग ॥ ६

चौ० मज्जन फल देखिय ततकाला । काक होहिं पिक बकहु मराला ॥ सुनि आश्चर्य्य करै जनि कोई। सत सङ्गति महिमा नहिं गोई ७ बालमीकि नारद घट-योनी । निज निज मुखन कही निज होनी ॥ जलचर थलचर नभचर नाना। जे जड़ चेतन जीव जहाना ८ मति कीरति गतिभूति भलाई । जब ज्यहि यत्न जहाँ जिनपाई ॥ सो जानब सतसंग प्रभाऊ । लोकहु वेदन आन उपाऊ ९ बिन सतसंग विवेक न होई। रामकृपा बिन सुलभ न सोई ॥ सतसंगति मुद मंगल मूला। सोइ फल सिधि सबसाधन फूला १० शठ सुधरहिं सत-संगति पाई। पारस परशि कुधातु स्वहाई ॥ विधिवश सुजन कुसंगति परहीं। फणि मणि सम निजगुण अनु-सरहीं ११ विधि हरि हर कवि कोविदवानी। कहत साधु महिमा सकुचानी॥ सो मोसन कहिजात न कैसे । शाक वणिक मणि गुण गण जैसे १२ ॥

दो० वन्दौंसन्तसमानाचित हित अनहित नहिंकोय॥
अञ्जलिगतशुभसुमनजिमिसमसुगन्धकरदोय १३
सन्तसरल चितजगत हित जानि स्वभाव सनेहु॥
बालविनय सुनि करि कृपा राम चरण रति देहु १४

दुर्ज्जनों की प्रकृतिका वर्णन ॥

चौ० बहुरि वन्दि खलगण सतिभाये। जो बिन कार्य दाहिने बाँये ॥ परहित हानि लाभ जिनकेरे। उजरे हर्ष विषाद बसेरे १५ हरिहरयशराकेशराहुसे। पर अकार्य्य भट सहसबाहुसे ॥ जे परदोष लखहिं शतसाखी। पर हितघृत जिनके मनमाखी १६ तेज कृशानु रोष महि शेशा। अघ अवगुण धन धनिक धनेशा ॥ उदय केतु समहित सबहीके। कुम्भकर्ण सम सोवत नीके १७ पर अकार्य्य लगि तनु परिहरहीं। जिमि हिम उपलकृषीदलि गरहीं ॥ वन्दौं खल जस शेष सरोषा। सहस वदन वरणैं परदोषा १८ पुनि प्रणवौं पृथुराज समाना। परअघ सुनैं सहसदश काना ॥ बहुरि शक्रसम बिनवौं तेहीं। सन्तत सुरानीकहित जेहीं १९ वचन वज्र ज्यहि सदा पियारा। सहसनयन परदोष निहारा ॥ पर अकार्य्य लगि हय समचलहीं। परसम्पति लखि मनु मरिजलहीं २० ॥

दो० उदासीन अरि मित्रसब सुनतजरैं खलरीति ॥
जानिपाणियुग जोरिकरि विनतीकरीसप्रीति॥२१

चौ० मैं अपनी दिशि कीन्ह निहोरा। तिननिज ओरन लाउब भोरा॥ वायस पालिय अति अनुरागा। होय निरा- मिष कबहुँकि कागा २२ वन्दौं सन्त असज्जन चरणा। दुख प्रद उभय बीच कछु वरणा॥ बिछुरत एक प्राण हरि लेहीं। मिलत एक दारुण दुखदेहीं २३ उपजहिं एक सङ्ग जल माहीं। जलज जोंक जिमिगुण विलगाहीं॥सु- धा सुरा सम साधु असाधू। जनक एक जग जलधि अगाधू २४ भल अनभल निज निज करतूती। लहत

सुयश अपलोक विभूती ॥ सुधा सुधाकर सुरसरि साधू। गरल अनल कलिमल सरि व्याधू २५ गुण अवगुण जानत सब कोई। जो ज्यहि भाव नीक त्यहि सोई॥ बुधहि चही गुण गाहकताई। तजि पर अवगुण अरु कुटिलाई २६ ॥

दो० भलो भलाई पै लहै लहै निचाई नीच ॥
सुधासराही अमरता गरल सराही मीच॥ २७

चौ० खल गह अगुण सन्त गुण गाहा। उभय अपार उदधि अवगाहा ॥ त्यहि ते कछु गुण दोष बखाने। संग्रह त्याग न बिन पहिचाने २८ भले पोच सब विधि उपजाये। गनि गुण दोष वेद बिलगाये ॥ कहहिं वेद इतिहास पुराना। विधि प्रपंच गुण अवगुणसाना २९ दुख सुख पाप पुण्य दिन राती। साधु असाधु सुजाति कुजाती ॥ दानव देव ऊँच औ नीचू। अमिय सजीवन माहुर मीचू ३० माया ब्रह्म जीव जगदीशा। लक्ष अलक्ष रंक अवनीशा॥ काशि मगह सुरसरि कर्म्मनाशा। मरु मालव महिदेव गवाशा ३१ स्वर्ग्ग नरक अनुराग विरागा। निगमागम गुणदोष विभागा॥ कहँलग वरणौं विधिकरतूती। गुण अवगुण हैं जाहि विभूती ३२ ॥

दो० जड़ चेतन गुण दोष त्रय विश्व कीन्ह करतार॥
सन्त हंसगुण गहहिं पय परिहरिबारि बिकार ३३

चौ० अस विवेक जो देहिं विधाता। तब तजि दोषगुणहिं मन राता॥ काल स्वभाव कर्म्म बरिआई। भल्यउ प्रकृतिवश चूकभलाई ३४ सो सुधारि हरिजन जिमि लेहीं। दलि दुख दोष विमल यश देहीं॥ खलहु करैं भल

पायसुसंगू। मिटहिं न मलिन स्वभाव अभंगू ३५ करि सुवेष जग बंचक जेऊ। वेष प्रताप पूजियत तेऊ॥ उघरहिं अन्त न होत निबाहू। कालनेमिजिमिरावणराहू ३६ किये सुवेष साधु सनमानू। जिमि जग जामवन्त हनुमानू॥ हानि कुसंग सुसंगति लाहू। लोकहु वेद विदित सब काहू ३७ गगन चढ़ै रज पवन प्रसंगा। कीचहि मिलै नीच जल संगा॥ साधु असाधु सदन शुक शारी। सुमिरहिं राम देहिं गुणि गारी ३८ धूम कुसंगति कारिख होई। लिखिय पुराण मञ्जु मसि सोई॥ सोइ जल अनल अनिल संघाता। होइ जलद जगजीवन दाता ३९
दो० ग्रह भेषज जल पवन पट पाय कुयोग सुयोग॥
होयकुवस्तुसुवस्तुजग लखहिंसुलक्षणलोग ४०

हुलासराम कवि।

स्त्री और पुरुष दोनों की दुष्टता॥

दो० रूपसेननृप सदन महँ शुक शारिका निवास॥
करै प्रीति तिनकी बड़ी ताकर सुनहु प्रकास १
चौ० शुक शारिका रहैं यकठाईं। प्रीतिभई कुछ वरणिनजाई॥दूनोंकहैंविविध इतिहासा। सुनिराजामन परमहुलासा २ यहिविधिबीति गये दिनभाई। अबदेखौविचित्रकथनाई॥ यकदिनशुक शारिकाबुलाई। देखौचित्रसार प्रियआई ३ तबशारिका गईततकाला। चित्रसार देख्योयकबाला॥ भूषणषोड़शभांतिबनाये। परपूरुष मों ध्यानलगाये ४ चूड़ामणितब कह्योविचारी। युवती पापमूर्त्तिअधिकारी॥ तबशारिका स्वरूपनिहारी। आगे पूरुषएकविचारी ५ नारिसेछोरि अभूषणल्यावै। वेश्या

को शृङ्गारकरावै ॥ कह्योशारिका सुआ सुज्ञानी। यह स्वरूप देखहुढिगआनी ६ पूरुषअहै पाप से भारी। नारिदीनअतिहीन विचारी॥परतुमकिमिमानहुगे भाई॥ कहतवहीजोतुमहिं स्वहाई ७॥

दो० शुक शारिका परस्पर दोनों करैं विवाद॥
जागि नृपति बोल्यो तबै काह अहै संवाद ८

चौ० चूड़ामणि तब नृपसों कही। राजा सुनौ उभय बतकही॥ नारि पापिनी सब जग जाना। तौन शारिका करै न काना ९ यह सुनि कह्यो शारिका ज्ञानी। महाराज सुनिये मम बानी॥ पूरुष पाप मूर्त्ति अधिकाई॥ चूड़ामणि के चित्त न आई १० तब राजा बोल्यो हरषाई। उभय भेद वरणौ चितलाई॥ सुनतशारिका नृपहि जुहारी। महाराज यह तत्त्व विचारी ११ कमलशील यक नगरक नाऊँ। सेठि महाजय बसै तहाऊँ॥ ताके पुत्र भयो अपकारी। नाम धनञ्जय कहै पुकारी १२ ताको ब्याह भयो उत्साहू। पुण्यवर्द्धहै नगरक नाहू॥ दुहिता उभय सेठिकी जानी। लीन धनञ्जय ब्याहि सयानी १३ सेठि बिदाकैदीन कुमारी। श्वशुर सासु अत्यन्त पियारी॥ सेठि महाजय कछु दिनगये। भई मृत्युसुरलोकी भये १४ द्यूत धनञ्जय खेलन लागे। हारिद्रव्य ससुरारिहि भागे॥ नारिसहित पहुँचे तहँजाई। देखि श्वशुर पुरगये सुखाई १५ फिरिउन भूषण बसन बनावा। प्रीति सनेह उभय पहिरावा॥ आनँद बैठिकरैं ससुरारी॥कर्म्मरेख नहिंमिटै मिटारी १६॥

दो० यकदिन स्त्री सों कह्यो चलिये प्रियनिजधाम॥

श्वशुर बास नीको नहीं यहाँ धरैं सब नाम १७

चौ० पति अनुशासन कीन न दूरी। साथ चली बाला सुखपूरी॥ मात पिता को कहा भलाई। स्वामी साथचली हरषाई १८ पन्थबीचमें सेठि विचारी। दीजै भूषण बसन निकारी॥ छीनलेइ कोउ निर्ब्बल जानी। सुनि सब दीन निकारि सयानी १९ तब आगे यककूप देखाई। दिहिनि गिराय चले हरषाई॥ कूप परी रोवै तहँ बाला। पथिक एक आयोत्यहिकाला २० लिहिसि निकासि पूँछि कुशलाई। तात चोर मोहिं दीन गिराई॥ भूषणबसन काढ़ि सबलीन्हा। स्वामिहि मारि काहधौं कीन्हा २१ पथिक कह्यो चलिये चितलाई। जहाँ कहौ तहँ देहुँ पठाई॥ पुण्यवर्द्ध यक नगर अपारा। उभय सेठिहै पिता हमारा २२ पथिक साथ तब लीन लिवाई। उभय सेठिके घरपहुँचाई॥ मात पिता तहँरहे निहारी। पुत्रीकागतिभई तिहारी॥ २३ कन्याकह्यो सुनौहोताता। घेरिनिचोर आय मग जाता॥ भूषण लैमोहिंकूप गिराई। पति की गति जानैं रघुराई २४ यहसुनि मात पिता उरलाई। पुत्री हाय महा दुख पाई॥ उभय सेठि सुनि दूत बुलाई। सेठि धनञ्जयहेतु पठाई २५॥

दो० वहां धनञ्जय नगर निज हारि गये सब दाम॥
फिरि आये ससुरारि महँ देखा बैठी बाम २६

चौ० सासु श्वशुर पूँछै कुशलाई। सेठिशोच मुख बात न आई॥ उभय सेठि की सुता सयानी। बोली आय हर्ष युत वानी २७ नाथ देहु सब भरम भुलाई। सासु श्व-शुर तुम्हरी सुखदाई॥ ताते बसिये यहां विचारी। मैं प्र-

भुदासी आउँ तुम्हारी२८नारि कहे मन भर्म भुलावा। रहे श्वशुरपुर अतिसुखपावा॥ यहिविधि बीति गये बहु काला। अबसुनिये कृतज्ञ भूपाला २९ यकदिन सोवत नारिविचारी। लीन्ह्यों भूषण बसन निकारी॥ सेठिनगर निजपन्थ लगावा। भार्य्या भक्तिभाव नहिंभावा ३०॥
दो० यह प्रत्यक्ष देख्यों नृपति पूरुषपाप बखान॥
चूड़ामणि मानतनहीं कहाकरौं बलवान ३१
चौ० तब चूड़ामणि कह्यो रिसाई। झूठकहै तैंनारि बनाई॥ नारि पाप मूरति मैं जानी। ताको मिथ्याकहौ सयानी ३२ इतना सुनि राजा मुसुकाई। चूड़ामणिसों कह्यो बुझाई। नारी पाप कवनि विधि भाई। सो वृत्तान्त सुनावहु आई ३३ सुनि चूड़ामणिकरै बखाना। काञ्चन पुर यक नगर सुजाना॥ सागरदत्त सेठि विख्याता। सो श्रीदत्तकहै सुत ताता ३४ ताको ब्याह भयो अति भारी। शुभ श्रीनगरमें सेठिसुखारी॥ नाम समुद्रदत्त असकहई। सुतानाम चन्द्रावति अहई ३५ ताहि बियाहि घरैलै आवा। श्वशुरलोग सँगफेरि पठावा॥ शिरीदत्त मनमाहिं विचारा। बैठे कहा करी व्यापारा ३६ गयेसमुद्र पार परवीना। लादि जहाज माल सब लीना॥ यहांनारि ऋतु यौवनपाई। चढ़ीमहल निरखै मनलाई ३७ तहँवाँ आयनृपति असवारी। पूरुष एक लख्यो सुकुमारी॥ वैश्यतरुण अतिरूप सुहावा। मानहुँकाम आपबनिआवा ३८ ताको देख मोहभैबाला। सखीसों बोलि कह्यो तत-काला॥ तरुण पुरुषजो पाछे आई। ताकोअबहीं लाउ लिवाई ३९ तुरतै सखी चलीसुनि बाता। पुरुषसे आय

कह्यो सुनताता॥ सेठि समुद्रदत्त व्यापारी। ताकी सुता बुलावै प्यारी ४० तब पूरुष बोल्यो हरषाई। आउब नि-शा कह्यो सबगाई॥ निशापाय आइहितुमपासा। बाला करिये भोगविलासा ४१ कल्पसमान यामयुग बीता। नि-शापाय आयो नरचीता॥ सोचन्द्रावति लिहिसि लिवाई। बटतर जाय सहेट बनाई ४२ आउब यहां उचित हमना-हीं। पुरुषजानि सबलखैं पछाहीं॥ तब चन्द्रावति कह्यो सुहेला। बटतर भलासहेट अकेला ४३ निशापाय दोनों जनजाई। बटतरकरैंकेलि अधिकाई॥ लादितहां श्रीदत्त जहाजा। आये श्वशुरसेठिके राजा ४४ खबरि कह्योपुर-बासिनजाई। सेठि समुद्रदत्तसे आई॥ तब श्रीदत्तगयो त्यहिद्वारे। सेठिश्वशुरको जाय जुहारे ४५ आनँदसेसब रूप निहारी। हर्षित भये सकल नरनारी॥ भोजनविविध प्रकार बनावा। भलीभांति महिमान ज्यवाँवा ४६ चित्र-शालमहँ पलँग बिछाई। चन्द्रावती तहां चलिआई॥ बेमन बैठिरही पर्य्यङ्का। तब श्रीदत्त लीन्ह भरिअङ्का ४७ बहुप्रकार रसरीति देखावा। बालके एकमनैनहिंआवा॥ निशाबढ़ी तब सोयोसाहू। चलीसहेट महाउतसाहू ४८ देखिनिचोर एकहै नारी। जातिअकेलि निशाअँधियारी॥ आपुसमें सबकहैं बनाई। निश्चयआय स्वैरिणीभाई ४९ याको देखी चलो तमाशा। कहांजाय त्रियकरै प्रकाशा॥ जांतनिशा कछुसंशयनाहीं। नारिचरित्रमहाबलचाहीं ५० यहकहि चोरलिये पिछवाई। कामातुरत्रिय जानि न पाई॥ वहांकिसुनैकथा मनलाई। पूरुष बटतर नारिनपाई ५१ बैठि गयो बिरवातर जाई। काट्यो सर्प मुयो अकुलाई॥

ताही समयगई वह नारी। बैठीइतउत जायनिहारी५२॥
दो० नारिजाय उरलाय कै कह्यो उठौ महराज॥
ज्यहिकारणनिशिघर तज्यो सोकीजै अबकाज५३
चौ० मरापुरुष नहिं जगै जगाये। कामातुर त्रियभेद न पाये॥ यक्ष एक बट ऊपर ज्ञानी। मृतक शरीर पैठगहि पानी ५४ नारिहिदीन तुरत पौढ़ाई। कामकेलि कीन्ह्यों चितलाई॥ शिथिल भयो तौ नासा काटी। आप शरीर से गयो उपाटी ५५ फिरि देखै तौ मृतक शरीरा। नाकसे रुधिर बह्यो भैपीरा॥नारिभागि गृह गईविशेखी। यह वृत्तान्त चौर सब देखी ५६ चौरन मन में कीन विचारा। नारि प्रबल जानै संसारा॥ आय सेठि के पास अभागी। पकरि पट्टिका रोवनलागी ५७ परिजन आय गये त्यहि पासा। चन्द्रावति बैठी बिन नासा॥ देखि सकल मन रहे सुखाई। पुत्री नासा कहाँकटाई५८ तब बोली चन्द्रावति रोई। पापी पुरुष लागि मैं खोई॥ देर भई नहिं आयउँ भाई। नैहरभाव कहौंसकुचाई ५९ दिह्यों जगाय लिह्यों उर लाई। नाक काटि मोहिं पलँग गिराई॥ ऊपर से फिरि लातन मारी। सोये आप भूमि मोहिं डारी ६०॥
दो० सुनि परिजन रिसियाय कै सेठिहि दीन जगाइ॥
राजद्वार को लै चले लीन्ह्यो मुसुक चढ़ाइ ६१
चौ० नगर में भयो कोलाहल भारी। सेठि दमाद बड़ाअपकारी॥ यह सुनि राजा निकट बुलावा। देखि महाजन अतिदुख पावा६२नृपति कहाका किह्यो अयानी। सेठि कहा हम कछु नहिंजानी॥ तब परिजन सब

करैं गोहारी । महाराज यहि दण्ड विचारी ६३ ॥
दो० राजा असमञ्जस परो करिये दण्ड विचार ॥
चोर सभय बोलत भये श्री महराज जुहार ६४॥
चौ० यह वृत्तान्त सकल हम देखा । नारिचरित्र सत्य करिलेखा ॥ सुनि बोल्यो नृप कस यह भाई । तबचोरन सब कथा सुनाई ६५ राजैं अँगुली दाँत दबाई । सेठिहि छोड़िदीन उर लाई ॥ सुनत सेठि गिल्लानिमेंआये । तुरतहि सुरपुर प्राण पठाये ६६ सेठिहि देखि चौर तनु त्यागी । राजै माँग्योपकरि अभागी ॥ मुण्ड मुड़ाय श्याम मुख लाई । गर्दभ धरि सबनगर फिराई ६७ फिरि दक्षिण दिशि दिहिनि निकारी । निश्चय जानि नारि अपकारी ॥ राजहि शुक शारिका सुनाई । नारि पुरुषके ये फल भाई६८कह बैताल सुनो बलवाना । या में पापी को अधिकाना ॥ तब विक्रम बोल्यो सुनिवानी । पाप समान दुहुनकर जानी ६९ नारि चरित्र सेवाय विचारी । ताते नारि पाप अधिकारी ॥ मतिअनुसार कहा हम भाई । तुमहुँ विचारिलेहु चितलाई ७० ॥
दो० यह सुनि पुनि बैताल तब उड़ि सिरसा लपटान॥
धरि विक्रमफिरि लै चले तबबोल्योबलवान७१॥

सहजरामकवि ॥

गर्भवासादि दुःखों का वर्णन ॥

चौ० दैत्य हिरण्यकशिपु बलवाना । सुत प्रह्लाद जासु जग जाना ॥ सण्डा मर्का कुल गुरु जाये । कनक कशिपु सो तुरत बुलाये १ सुत प्रह्लाद प्राणप्रिय मोरे । सौंपहुँ तुमहिं कहौं करजोरे ॥ कीजैइन्हैं पढ़ाय सचेता । स्व-

लपपढ़ाउब लाड़ समेता २ नृपनिदेशसुनि रामकुमारा। गये लिवाय जहां चटशारा ॥ उठे सकल बालक कर जोरी। करत प्रणाम बहोरि बहोरी ३ कहि प्रिय वचन विप्र अनुरागे। प्रणव पुनीत पढ़ावन लागे॥ वर्ण विचित्र दीन लिखि पाटी। देव प्रसाद दीन पुनिबांटी४॥

दो० दीन धराय सो लीन कर बाँचहु राज कुमार॥
करि प्रणाम बोले वचन अति पुनीतश्रुतिसार५
राम भजन को कौन फल विद्याको फल कौन॥
घाटा नफा विचारिकै विप्रपढ़ौं मैं तौन ६॥

चौ० सुनहु तात विद्या अति पावन। सन्तत सुखद सुजन मन भावन॥ सुभग सकल सम्भव बलवाना। बन्धु विपुल धन धनदसमाना ७ विद्या विना न सोहै कैसे। बिन सुगन्ध किंशुक छवि जैसे॥ बालक सत्य कहौं त्वहिं पाहीं॥ विद्याधन प्रधान जगमाहीं ८ हरै नरेश न चोर चुरावै। देशविदेश महा सुख पावै॥ ते पितु माता शत्रु समाना। जे न पढ़ावैं सुत अज्ञाना ९ सभा मध्य नहिं सोहै कैसे। विपुल मराल मध्य बक जैसे॥ विप्र वचन सुनि राज कुमारा। बोल्यो वचन विहँसि श्रुति सारा १०॥

दो० वर्णत वेद पुराण बुध शिव विरंचि सनकादि॥
ये बाधक हरि भक्तिके विद्या बित बनितादि ११॥

चौ० सिखौं न सो विद्या लिखि पाटी। विषयक मन खग बाँधन टाटी॥ विद्या सो जो भजै भगवाना। लहै सुधर्म देह अवसाना १२ बिन हरि भजन भूरि भवसागर। तरैन कोटि यत्न नरनागर॥ देह ते कर्म्म कर्म्म

ते देहा । मिटैन बिनहरिचरणसनेहा १३ तृण जलौ-
क चलै तृण आधारा । ऐसे जीव कर्म्म अनुसारा ॥
करै कर्म्म वश गर्भ निवासू । बरणिनजाय दुसह दुख ता-
सू १४ बर नितम्ब नीचे पद काँधे । बहुपुरीष पल अ-
न्त्रन बांधे ॥ काटहिं कीट लेट तनु लागा । नहिं अवकाश
अधोमुख टांगा १५ परा योनिसंघट महँ सोई । जन्म
अनेक केरि सुधि होई ॥ हाय कीन मैं भजन न कबहूं ।
यासों सहौं दुसह दुख सबहूं १६ ॥
दो० खाय मातु मोदक कटुक परै बदन बिच आइ॥
जठर अग्नि की ज्वालसे जीव बिकलह्वैजाइ १७
चौ० संचित परारब्ध किय पाना । कर्म्म विवश सहै
संकट नाना ॥ जग जीवन लखि जीव दुखारी । प्रकटे
हरि सायुध भुजचारी १८ कौस्तुभ कण्ठ वक्ष बनमाला ।
रत्न किरीट प्रकाश विशाला ॥ अस हरिरूप अनूपनि-
हारी । करिप्रणाम अस्तुति अनुसारी १९ जयभगवंत
सन्त सुखदायक । कृपासिंधु सचराचर नायक ॥ जीव-
चराचर पशु पशुपाला । अति कृपालु तुम दीनदयाला
२० तुम्हरे हाथ नाथ जलचारा । बन्ध मोक्ष प्रभु विगत
बिकारा ॥ अबकि बार प्रणतारतबन्धू । जपि तवनाम
तरौं भवसिंधू २१ ॥
दो० बिकल जीव जननी जठर हरिसों करत करार ॥
अब की बार तुम्हार गुण गाय तरों भव पार २२
चौ० पूरण मास भये यहि भांती । महा वपुष किय प्र-
कटतहांती ॥ भयो अधीर पीर तनु माहीं । क्षण मूर्छित
पुनि रुदन कराहीं २३ कहांकहां करि रोवनलागे । रूप

चतुर्भुज दीख न आगे॥ कीन्ह्यों जबहिं पयोधरपाना। भूली सुमति मोह लपटाना २४ गावहिं मंगल गीत बधूटी। नेगी करहिं वसन धन लूटी॥ काटैं कृमि बहु व्याधि सतावैं। रहैंरोय मुख बचन न आवैं २५ जननी उबटन तेल लगावै। पालि पोषि सुतदेह बढ़ावै॥ पगन चलत कह तोतरि बतियां। सुनि पितु मातु लगावैं छतियां २६॥

दो० क्रीड़ा बहुबिधिकरतअति गयो बालपनबीति॥
भजैं न सीतारामपद करैं अनेक अनीति २७

चौ० तरुणभये तरुणी मनमोहैं। चलैं बामपुनिपुनि मगजोहैं॥ जोकदाचि धनधाम विलोका। तृण समान मानैंत्रैलोका २८ जो धनहीन दीनमुख बाये। जहँ तहँ याचत पेट खलाये॥ कछुदिन बढ़त बढ़ावत जाहीं। कछु बिरोध कछु रोदनमाहीं २९ कछु सोवत कछु उद्यम धावैं। रामभजन बिन जन्म गँवावैं॥ करैं सुधा सन्तोष न पाना। मृगजल बिषय बिलास भुलाना ३० गर्भबास श्रीपति उपदेशा। माया विवश न सुधि लवलेशा॥ तजि हरिभजन भोग मनलावा। यहवह करत जरापन आवा ३१॥

दो० अनइच्छित आईजरा सहजराम सितकेश॥
मनहुँ विशिख सितपुङ्खके छेदे कालनरेश ३२

चौ० तनुबल अबल बदन रहदीना। तृष्णा तरुणहोय तनुछीना॥ थकेचरण तनुकम्पन लागे। त्रिय बालक जल देहिं न माँगे ३३ खांसिखांसि थूकहिं महिमाहीं। सुत सुतबधू देखिअलसाहीं॥ प्रियपरिवारसुहृद

सुतनाती। मरण मनावहिं दिनअरुराती ३४ जब कछु सुतन सिखावन देहीं। सुतकहैंजल्पिजल्पि जिवलेहीं॥ भवनद्वाररराखा रखवारी। ग्रामसिंहजनुभूँक भिखारी ३५ मरतीबार कण्ठ कफलागा। तबहुँ मोहवश भेषज माँ-गा॥ तनुतजि गहिसि नरककै बाटा। मोसन सहिन जाय यह घाटा ३६॥

दो० कण्ठपाश असिपत्रबन दण्डपाणि अतिघोर॥
चलेघसीटत शमनगण यमपुर पन्थकठोर ३७

चौ० प्रथमहिं चढ़े मातु पितुगोदा। पुनि स्यन्दन सुखपाल समोदा॥ पुनि गज बाजिसाज पटहीने। सुख करि बिबिधभाँति परवीने ३८ चढ़े पर्य्यङ्क शय्यपट बाँधे। सो चढ़िचले चारिके काँधे॥ झूठसाँच कहि जहँतहँ बञ्ची। बहुबिधिधरे धामधन सञ्ची ३९ सो धनधाम धरारहे भूपर। कछुभाँड़ा गाड़ा कछु ऊपर॥ पशुगण कछु बन कछुगोशाला। रही निकेतद्वार बर बाला ४० चिताचढ़ाय परोसिन त्यागा। यमपुरचले अकेलअभागा॥ करिबिलापसुतसर्व्वसकीना। पावक बारिफूँकि मुखदीना ४१॥

दो० सुनहुँतात पितुमातुसुत बनिता बन्धुअनेक॥
यमपुर श्रीपति भजनबिन करैं सहाय न एक ४२

चौ० जिहितनु उबटन तेल लगाये। पहिरेभूषण बसन सुहाये॥ सो नरदेह खेह ह्वै जाई। जहँ तहँ पवन प्रसङ्ग उड़ाई ४३ यह संसार स्वप्नसम जानी। तजै भजै मुनि शारँगपानी॥ जाहि भजे बिन नाहिं निबाहू। रङ्क धनी बरु क्षितिपति शाहू ४४॥

भगवती दास कवि ॥

नरकों का वर्णन ॥

चौ० बहुरि दक्षिण दिशि देखा आई। अद्भुत रूप को वर्णौ भाई ॥ क्रोधी क्रोध जे करहिं अपारा। दुष्टी दुष्ट करहिं अपकारा १ गुरु द्वेषी विवेक नहिं माना। साधुन की निन्दा भल जाना ॥ मात पिताकी सेव न जानहिं। परनारी सों अनुचित मानहिं २ सुखरोगी चित मैल रहाहीं। दक्षिण दिशि सो अति बिलखाहीं ॥ औरौ हैं जे बिघ्न सँघाती। तिन अपकारक मारहिं जाती ३ गर्भ छेद जे करहिं बिकारा। त्रिया तजहिं बिनदोष बिचारा ॥ गाय विप्र कर अनभल मानहिं। निशि दिन दुष्टकर्म भलजानहिं ४ लेहिं द्रव्य नर देहिं न फेरी। अग्नि देहिं बिश्वास अहेरी ॥ बाट घाट चोरी ब्यवहारा। मित्रदोष जे करहिं बिचारा ५ औरौ जे पातकी कहाये। तेसब दक्षिणद्वारेआये ॥ अंधकार सूझै नहिं आगे। मारग देखि न परै अभागे ६ गिरत परत तिनहीं भय होई। महा त्रास ब्यापक नर सोई ॥ श्वान गृद्ध मारग गिनि जोवहिं। तिन के त्रास पातकी रोवहिं ७ अंधकार यक कूपअपारा। तिहिमा कृमि बहु परैं असारा ॥ तिहि महँ परत त्रास अति होई। त्राहि त्राहि गोहरावत सोई ८ ऋक्ष ब्याघ्र औ सर्प अपारा। वृश्चिक बारबार तनु मारा ॥ कुत्सि नरक जो कहे भयावन। तिहिमारग पुनि आवन जावन ९ बारबार पुनि त्रास दिखावहिं। अनुशासना देत तिहि आवहिं ॥ माता पिता दुखित जे होहीं। और दुराचारी

जो सोहीं १० वेद शास्त्र की निन्दाकरहीं। परनारी कहँ चिन्ता धरहीं ॥ दक्षिण द्वाररहैं निरासा। ते यमसनपावहिं अनुशासा ११ पापी वृक्ष एक है जाता। मांस चर्म्म को जो करै घाता ॥ ब्रह्मघात गोधन जहँदेखे। गोत्रघातकी बहुत बिशेखे १२ देव गुरू निन्दक जो होई। माता पिता भ्रात दुख सोई ॥ गर्भघातकी मित्र बिश्वासी। बालकघात करैं त्रिय त्रासी १३ बिन अपराध त्रियाजे मारहिं। बन महँ अग्नि जाय जे जारहिं॥ सहजाहिंजानि करैं व्रतभङ्गा। निन्दहिंतीरथ सहजहिं गङ्गा १४ दानहिं देत निवारहिं कोई। और अतिथिनिन्दक पुनिसोई ॥ बैष्णव को निन्दहिं मन जानी। शुचि समेत जे रहैं न प्रानी १५ जीवघात परसङ्गहि देखे। नरक पातकी बहुत बिशेखे ॥ जे निज धर्म्म त्यागि परधर्म्महिं। गहहिं प्रशंसहिं परमत भर्म्महिं १६ ॥

दो० एते कर्म पातकी देखे हम यमद्वार ॥
तिनकहँ त्रास दिखावाहिं पूँछहिंबारहिंबार १७

चौ० ताही समय सुनहु मुनिराऊ। जो देखा सोतुमहिं सुनाऊ ॥ एक महापापी तब आवा। औरै नरक में आनि ढहावा १८ पापीमहा कीन आधर्म्मा। युवतीगो बध किये कुकर्म्मा ॥ गर्भघातकी लीन्हे आवहिं। तेली कोल्हू घालि पेरावहिं १९ स्वामीघातक तुरतहि आवा। पापिवृक्षतर आनि रहावा ॥ टूटहिंपात परहिं खसि देहीं। मांस चर्म्म सो पोछन लेहीं २० औरौ पापी रहैं अपारा। जिनकाहू की हरी है दारा ॥ सीम पराव लेहिं बिश्वासी। पन्थचलाय गरेदें फाँसी २१ खेत परावलेहिं

करिबोलू। तिनकहँ धरि पेरवावहिं कोलू॥ मात पिता का दुखवे कोऊ। अग्नि नरकमहँ डारैं सोऊ २२ लोह जँजीर बाँधि लै आवहिं। औ किङ्कर त्यहि त्रास दिखावहिं॥ काहुक बस्तर लेहिं चुराई। सोन रूप जे धरहिं दुराई २३ काँस ताँब जे हरहिं परावा। कन्यादान देत हरकावा॥ यात्रा तीर्थ करहिं मन भङ्गा। अधरम केरो करहिं प्रसङ्गा २४ बिप्रहिं दान देतजे बर्ज्जहिं। गुरुजन मातात्रासन लर्ज्जहिं॥ पक्षिनकहँ आज्ञा तब दीन्हीं। तुरतहि आंखि काढ़ि तिनलीन्हीं २५ श्वानगृद्ध जो नोचहिं ठाढ़े। आज्ञा लै तिनकर जी काढ़े॥ देखा और नृपति यक आवा। मृत्युलोक कर राव कहावा २६ इन भल नीक न्याय नहिं कीना। करि अन्याय द्रव्य हरि लीना॥ बालघातकी औरौ आवा। बिष दै मनुजहि देह नशावा २७ गायबिप्र कहँ दुखवै कोई। कृमीकूप महँ डारैं सोई॥ अनदेखे जो करहिंचुनाखा। बिनासुने उर आनहिं शाखा २८ नाक कान काटी पुनि ताही। चित्रगुप्त न्यावहिं करि जाही॥ औरै करैं भ्रष्ट तनु भोजन। ब्राह्मणकैकैकरैं न शौचन २९ वेदशास्त्रकर मारहिं माना। विष्ठाकूप में परहिं निदाना॥ कहँ लग बरणौं नरक अपारा। राम भजन बिन नाहिं उबारा ३०॥

दो० द्विजकै सन्ध्या नहिं करैं अरु अन्हायबिनखाहिं॥
तिनकेशिर आरा चलिहि यहिमहँसंशयनाहिं ३१

रत्न कवि॥

ब्रजकी प्रशंसा॥

चौ० एक शत अष्ट प्रिया पटभाखी। सोरह सहस महल

अरुराखी ॥ सो सकलन में सरस पियारी । श्री रुक्मिणि की बातें न्यारी १ तिनसों हरि अन्तर नहिं राखैं। क्षणक्षण की निज मनकी भाखैं ॥ यकदिन चली प्रेम की गाथा ।हा ब्रज कहि शोच्यो यदुनाथा २ तब रुक्मिणि प्रभुसों करजोरी । बोलीं मधुर वचनरसबोरी॥ पुरीद्वारका सम नहिं कोऊ। अमरावति पटुतर नहिं सोऊ ३ पितु बसुदेव देवकी माता । ऋद्धि सिद्धि नव निधि बिख्याता ॥ षटदश सहस आठ पटरानी । सो सम्पति प्रभुमनहिं न मानी ४ पुनि पुनि सुमिरत गोकुलग्रामा । उरसों नहिं बिसरत सो ठामा ॥ तिनकी प्रीतिकहौ समुझाई ॥जिनमें तव मन रहत लोभाई ५ सुनिरुक्मिणि के बचन सुहाये। परम पुलकि लोचन जल छाये॥ तब बोले यों राजिवनयना।तुमजो कहत सो सांची बयना ६ पितु बसुदेव देवकी माई।तिनहूं करत छोह अधिकाई॥ पै न मोहिं बिसरत ब्रज बाता। नन्दबबा अरु यशुमति माता ७ तिनकी प्रीति बरणि नहिंजाई। जिहिबिधि मैं उनसों सुखपाई ॥ क्षण क्षण मुख लखि लेत बलैया।को सप्रेम अब कहत कन्हैया ८ वह सत माखन मैया करके। माथि राखत मेरे हित धरके॥ ब्रज सुख नहिं बिसरत बिसराये। जिहिबिधि सुर मुनि मन ललचाये ९ ॥

दो० वहवृन्दाबनसुख सघन कुञ्ज कदम्ब कि छाहिं।
कनकमयी यह द्वारका ताकी रज सम नाहिं १०
नृपतिसभा सिंहासन जिहिलखि लजत अनंग॥
नहिं बिसरतवह सखनको गायचरावन संग ११
राजसाज साजेसकल तिमिनहिंनेकु सुहाहिं ॥

गुञ्जमाल बनचित्र जिमि मोरमुकुटमणिमाहिं १२
रानी सोरहसहस तुम करत रहत अतिप्रीति॥
श्रीराधा छबिप्रेमकी कछुहै न्यारी रीति १३
गोपी सोरहसहस सब लोकलाज पति त्यागि॥
अर्द्धनिशहिं रसरास करि मम हितते रसपागि १४
बिछुरततिनसोंसकुचिमन कह्योंमिलनपुनिआय॥
उनसों उऋण भयोंनहिं रह्यो द्वारकाछाय १५
बहुरि जाय ब्रज भेटिये नटवरबेष बनाय॥
ब्रजबासिन सुखदीजिये मुरली मधुर बजाय १६
निशिदिन मेरेहियरहत ब्रजवासिनमें ध्यान॥
करत बनत अबबात मोहिं उनहीं की मनमान १७

चौ० भक्ताधीन बिरद प्रभुकेरे। गावत वाणी वेद घनेरे॥ सन्ततरहत भक्तके पासा। पुरवतहैं प्रभुतिनकी आसा १८ जे सप्रेम हरिसों मनलावें। तिनको कबहुं नहीं बिसरावें॥ ग्राहग्रसत गज जाय छोड़ाये। गरुड़ छोड़ि तहँ आतुर धाये १९ पुनिप्रभु पाण्डव जरत बचाये। द्रुपदसुताके बसन बढ़ाये॥ अजामील यमते प्रभुकीन्हों। भजन प्रभाव ध्रुवहि बरदीन्हों २० जन प्रह्लाद अभय करिथाप्यो। तातीवायु न बारहिब्याप्यो॥ जो जन मनतेध्यावै जैसे। ताकहँ प्रकटहोतप्रभुतैसे २१ अगजग सकल विश्वके स्वामी। सर्व्वमयी सब अन्तर्यामी॥ प्रेमयुक्त ब्रजजनहरि ध्यायो। तातेप्रेम हृदयहरिछायो २२ प्रभुके मनयह रहत सदाहीं। ब्रज बासिन को भेट्यों नाहीं॥ यासों धनि ब्रज अरु ब्रजवासी। जाहि प्रशंस्यो हरि अविनासी २३॥

ब्रजवासीदास कवि ॥

माखनचोरी लीला॥

दो० विश्वभरण पोषण करन कल्प तरोवर नाम ॥
सोप्रभु दधिचोरी करत प्रेमविवश भगधाम १
सो० नित उठि करत विहार ब्रज में घरघर साँवरो ॥
ब्रजजन प्राणअधार माखनचोरी व्याज करि २
चौ० श्याम एक ग्वालिनि घर आये। चोरीकरत प-करि तिनपाये ॥ कहत करी तुम बहुत ढिठाई। अब तो घात परे हौ आई ३ निशिबासर मोहिं बहुत खिझायो। दधि माखन सब मेरो खायो ॥ द्वौ भुज पकरि कह्यो कि-तजैहौ। दधि माखन दै छूटन पैहौ ४ ताके मुख तन चि-तै कन्हाई। बोले वचन मधुर मुसुकाई ॥ तेरी सौं मैं छुयों न राई। सखा खाय सब गये पराई ५ चारु चितौन चितै उरभान्यो। उरते शेष जात नहिंजान्यो ॥ सुनत मनोहर हरिकी बतियाँ। लिये लगाय ग्वालिनी छतियाँ ६ बैठो श्याम जाउँ बलिहारी। मैं ल्याऊँ दधि खाउ बिहारी ॥ हरिको लेन चली दधि गोरी। हरिहँसि निकरि गये ब्रज खोरी ७ रही ठगीसी ग्वालिनि भोरी। मन लैगयो साँव-रो चोरी ॥ हरिगे और ग्वालिनीके घर। देख्यो जाय न कोऊ भीतर ८ ॥
दो० माखन काढ़ि निशङ्क कै लागे खान कन्हाय ॥
ग्लालिनि आवत जानि घर तब उठिरहे छिपाय ९
सो० ग्वालिनि घरमें आय मथनी ढिग ठाढ़ी भई ॥
भाजन रीतो पाय चकित बिलोकत चहूंदिशि १०
चौ० अबहीं गई आय इन पाँवन। आयो माखन

कौन चुरावन ॥ भीतर गई तहां हरि पाये । पकरी भुजा भये मनभाये ११ तब हरिकहि निजनाम लजाये। नयन सरोज कछुक भरि आये ॥ देखि बदन छवि आनँद ही के। दीन्हे जान भावते जीके १२ भयो ग्वालि मन परम हुलासा॥ कहन चली यशुमतिके पासा॥ जो तुम सुनहु यशोमति माई । हँसिहौ सुनि हरि की लरिकाई १३ आजु गये हरि मोघर चोरी। देखी माखन भरी कमोरी॥ मैं घर आय अचानक जबहीं। रहे छिपाय सकुचि कै तबहीं १४ जबमैं कह्यौ भवन में कोरी। तब मोहिं कहि निज नाम निहोरी ॥ लगे लेन लोचन भरि आँसू । तबमैं काननतेरी सासू । १५ सुनतश्याम सबरोहिणि कनियाँ । सकुचत हँसत मन्दमुसुकनियाँ॥ ग्वालि विहँसि हरितन डरपायो । माखनचोर पकरिमैं पायो १६ ॥

दो० करौंनोयकी दामरी बाँधौं अपने धाम॥
लाय लिये उर रोहिणी बाँधिसकैको श्याम १७

सो० यशुमतिउर आनन्द बालचरित सुनिश्यामके॥
कहतसुनौं नँदनन्द ऐसो काम न करहुसुत १८

चौ० पुनि इक गृहगये नन्ददुलारे । देखिफिरे तहँ ग्वाल दुवारे ॥ तबहरि ऐसी बुद्धि उपाई । फाँदिपरे पिछवारे जाई १९ सूनोभवन कहूँ कोउ नाहीं । मानहुँ इनकोराज सदाहीं ॥ भाँड़े मूँदत धरत उतारत । दधि अरु माखन दूधनिहारत २० रैनिजमायो गोरस पायो। लगेखान मनु आप जमायो ॥ आहट सुनि युवती घर आई । झलकत देख्यो कुँवर कन्हाई २१ अँधियारे

घरश्याम गयेदुरि । दधिमटुकी ढिगइश्यामगयेसुरि ॥ सकल जीव उर अन्तरवासी। तहाँ कलङ्क चटक परकासी २२ ग्वालिनि हरिको इत उत हेरै। पावत नाहीं धाम अँधेरै॥ कहत अबहिं देख्यों नँदनन्दन। कितहि गयोपछितात मनहिंमन २३ परिगये दीठ ओट मथनी के। सुन्दर श्याम प्राण गथनीके ॥ तबहीं ग्वालिनि भुजगहि लीन्हों। कहत तुम्हें अबतौमैंचीन्हों २४ ॥

दो० कहौकहा चाहत फिरत धाम अँधेरेमाहिं ॥
बूझे बदन दुरावते सूधे चितवत नाहिं २५

सो० दधिमथनी में हाथ अबका उतर बनाइहौ ॥
सखानहीं कोउसाथ कहियेअब कैसीबनै २६

चौ० मैं जान्यों यह घरहै मेरो। ताधोखे इत ह्वैगयो फेरो ॥ दृष्टिपरी च्यूँटी दधिमाहीं। काढ़न लग्यों तिन्हैं यहिठाहीं २७ सुनिमृदु वचन ग्वालि मुसुकानी। तुमहौ रति नागर हमजानी ॥ उरलगाय मुखचुम्बन कीनो। विधिहि मनाय बिदाकरिदीनो २८ हरिदर्शन बिनक्षण नरुवहाई। वरहन मिस यशुमति पहँआई ॥ सुनहु महरि निजसुतकी करणी। करै अचकरी जात न वरणी २९ प्रतिदिन करत दूधदधि हानी। कहँलगि करैं कान नँदरानी ॥ मैं अपने मन्दिर अँधियारे। माखन धर्यों दुराय सवारे ३० सोई ढूँढ़िलियो हरिजाई। अतिनिशङ्क नहिं नेकु डराई ॥ बूझेउत्तर तुरत बनावै। च्यूंटी काढ़न को करनावै ३१ सुनि ग्वालिनिके वचन सयानी। हँसिकैबोधकियो नँदरानी॥ यशुमति कहत श्यामसों प्यारे। परघर काहे जात ललारे ३२ ॥

दो० ममलोचन आगे सदा खेलहु सखन बुलाय ॥
तुम्हरे बालबिनोद लखि मेरोहियोसिराय ३३

सो० मोपै लीजै श्याम दधिमाखन मेवा मधुर ॥
सब कछु तेरे धाम परघर जाय बलाय तुव ३४

सबलसिंहचौहान ॥

भीष्मपितामह और अर्जुनका युद्ध ॥

चौ० भीषमदेव कहन असलागे । सारथिरथहिचलावहुआगे ॥ अर्ज्जुनवीर कृष्णसों सारथ । तिनतेरणकीजै पुरुषारथ १ यहकहिकै हाँको रथ जबहीं अशकुनभये बहुत विधि तबहीं ॥ बोलत काक भयङ्कर वानी । विना मेघ वर्षत है पानी २ गृद्धसबै रथ ऊपर छाये । जम्बुक अपनो भाव दिखाये ॥ उगिलैं खड्ग छाँड़िकै खापैं । रथ के खम्भ सैन्य बिन काँपैं ३ यह अशकुन देख्यो सब सैनहिं । कुरुदल कहन लागि सब बैनहिं ॥ नवदिन युद्ध भयानक पेखो । यहि विधि ते कबहूं नहिं देखो ४ सारथि कह गङ्गासुत आगे । मोकहँ यह अचरज करि लागे ॥ हँसि भीषम तब कहि यह वानी । अहोमूढ़ यह बात न जानी ५ ॥

दो० पारथ के सारथि भये निरखहु श्रीभगवान ॥
अशकुननहिं कछुकरिसकैसन्मुखकृष्णसुजान६

चौ० यहकहि भीषम रथहिचलायो । सिंहनादकै हाँक सुनायो ॥ डोली धरणि शेष शिरनाये । मनौं घटा घनमैं घहराये ७ कोपित ह्वै शारँग शर गह्यऊ । नमित वचन नरहरिते कह्यऊ ॥ सावधान ह्वै जोती गहिये । पारथ की रक्षामों रहिये ८ यह कहि सहस बाण फटकारे ।

अर्ज्जुनके उर ऊपरमारे ॥ श्याम शरीरहन्यो दशबान-हिं। बीस बाणमारे हनुमानहिं ९ चारिबाण औरो गुणजो-रे। घायल नन्दिघोषके घोरे ॥ तबअर्ज्जुन लीनोशारँग शर। होय लागि अति मारु परस्पर १० दोऊ बीर लरैं मैदानहिं। क्रोधित लगे चलावन बानहिं॥ दोउ महाबल अरु रणधीरा। मनहुँ युद्ध कर धरे शरीरा ११ ॥

दो० यहि विधिते अर्ज्जुन जुरे भीषमसों मैदान ॥
जल थल भारतभूमिमहँ छायेशरअसमान १२

चौ० बाणतेजहै यह ब्यवहारहि। जिमिजलधर वर्षत जलधारहि ॥ सहस बाण अर्ज्जुन गुणजोरे। हाँकदेत हाँकत हरि घोरे १३ तीक्षण बाण पाण्डुसुत मारे। भीष-म अन्तरिक्ष हनि डारे ॥ अपर षष्टि शरकार्म्मुक धारे। ते शर अहिफणके तनझारे १४ लाग असी शर कपिके तन महिं। सत्तरि शर यदुनन्दनतनमहिं ॥ श्याम अंग शोणित छबिछाजत। पीत बसनरँग अरुणविराजत १५ जोती गह्यो धन्य अति चापल। वर्षत शर श्रावण जि-मिघनजल ॥ यहिविधिते शर वर्षा कियऊ। शरके छाँ-ह भानु छपि गयऊ १६ नन्दिघोष रथ माधव सार-थ। बाण वृष्टि ते छायो भारथ ॥ भीषम यहि प्रकार बलकीन्ह्यों। तब अर्ज्जुन दृढ़ धनुकर लीन्ह्यों १७ श्री हरि कह्यो सुनहुँ हो पारथ। सहि न जाय भीषमको भारथ ॥ तुमसे महाबली यह बीरा। जानतहौ जस है रणधीरा १८ ॥

दो० हाँके पग नहिं चलत हय शर छाये सब अङ्ग॥
भीषमके संग्रामते रण महँ अचल तुरङ्ग १९

चौ० अर्जुनजिय विस्मय करि मानो। महाक्रोधकै निज धनुतानो॥ देव अस्त्र पारथ धनुछांटे। गङ्गासुत बीचहिं शर काटे २० अपर विशिख तीक्षणकर धारे। तेशर पारथके शिरमारे॥ अर्ज्जुनसहित भयो घायलहरि। तुरँग थके न चलतलघुगति करि २१ वर्षत बाण वरणि को कहई। पाण्डवदल लक्षन मृति लहई॥ श्रीपतिकह्यो सुनो हो पारथ। रचौ उपाय तजौ पुरुषारथ २२ यह कहि कै हरिशङ्ख बजाये। सुनिकेनाम शिखण्डीआये॥ अर्ज्जुन सों हरि कहने लागे। रणमें करहु शिखण्डी आगे २३ पाछे ह्वै शारँग कर धरिये। यहि विधिते भीषमबध करिये॥ अर्ज्जुन कहा सुनहु जगतारण। कपट युद्ध करिये किहि कारण २४ श्रीहरिकह्यो गहरु जनि लावहु। गङ्गासुत कहँ मारि गिरावहु॥ जबहिं शिखण्डी आगे आये। भीषम धनुष डारि शिर नाये २५॥

दो० विना अस्त्र लज्जित बदन नीचे हेरत नैन॥
अस्थिरह्वै रथ पासभे कह्योकृष्णते बैन २६

चौ० दीन बन्धु पाण्डवहितकारण। कपट युद्ध करि चाहहुमारण॥ अर्ज्जुनकियो शिखण्डी ओटहि। भीषम हृदय कियो शर चोटहि २७ पारथ बाण बज्र सम छूटहिं। भेदि सनाह अङ्ग महँ फूटहिं॥ गङ्गासुत यहि विधि ते कहई। ये शर नाहिं शिखण्डी गहई २८ शरमारत अर्ज्जुन मेरे हिय। यहै विचार कियो अपने जिय॥ घाव लगे तनु कम्पै कैसे। शिशिर काल महँ गोधन जैसे २९ तब पारथ कीन्ह्यो सन्धानहिं। हृदयताकि मारो सौ बानहिं॥ चरण कमल कीन्ह्यों तब घावहि। रस-

ना रटत निरंतर बामहि ३० रोम रोम यहि विधि शर मारा। बहे प्रबाह रक्त की धारा ॥ तीक्षण बाणऔर कर लीन्हों। ते शर चोट शीश पर कीन्हों ३१ ॥

दो० भीषम को बल थकितभो मारत अर्ज्जुनतीर ॥
तिल भरि देह न देखिये झाँझरभयो शरीर ३२

चौ० रथते गिरे गंगसुत धरणी। जगमें रही सदा यह करणी ॥ देखत सब कौरव दलधाये। हाहा शब्दाघात सुनाये ३३ द्रोण करण दुश्शासन अत्री। धनुष डारि रोवहिं सब क्षत्री ॥ करुणा करत कहत सब बैनहिं। अहो पितामह राखौ सैनहिं ३४ कुरुपति तब छाँड्यो निजस्यंदन। आयो जहँ गंगा के नन्दन ॥ सेनापति कै मुकुट बँधायो। आप कृष्ण कर अस्त्र गहायो३५ जीति स्वयम्बर कन्या लीन्हों। दोऊ बन्धु ब्याहकै दीन्हों॥ परशुराम ते युद्ध विचारो। उठिकै धनुषबाण कर धारो ३६ रोदन कै यहि भांति बखानत। बिधिचरित्र कोऊ नहिं जानत ॥ मेरे जिय यह बड़ो अँदेशो। पाण्डव सहित जीतिहौं केशो ३७ तुम पायो क्षत्रिय के धर्म्महिं। यह सब दोष हमारे कर्म्महिं ॥ तुम्हरे बलमैं कीन्ह लड़ाई। यासों नहिं कछुमोहिं स्वहाई ३८ ॥

दो० भीषम घेरे खेत महँ रोवत सबै नरेश ॥
सबलसिंह चौहान कहि देखन चलेनरकेश ३९

चौ० धर्म्मराज माधव सँग लीन्हें। रथते उतरि गमन तब कीन्हें ॥ अर्ज्जुन भीम और सब राजन। चले पितामह देखन काजन ४० यहि अन्तर गंगासुत बोले। सुन्दर अधर मनोहर डोले ॥ शरशय्या सब अंग

विराजत । लटकत शीश भूमि पर राजत ४१ कुरुपति कहो हमारो कीजै । उत्तम भांति शिरहनो दीजै ॥ कोमल तूल पिताम्बर भरे । आनि त्वरित शिरहानेधरे ४२ तब भीषम भाष्यो यह बानी । दुर्योधन यह बात न जानी॥ अर्ज्जुनसमय विचारोमनमें । उचित सहित शिरहानो रनमें ४३ सुनि अर्ज्जुन शारँगकर लीन्हे । तीनि बाण सन्धारण कीन्हे ॥ सम्मुखह्वै ललाट महँ मारे । भेदि शीश शर निकसे पारे ४४ ॥

दो० फाँक और शरपारह्वै गड़ेभूमि वहबान ॥
यहि विधि ते शरशय्यदिय भारतके मैदान ४५

चौ० धर्म्मराज रोदन बहु कीन्हों । भीषमसों कछुकहबै लीन्हों ॥ केवल दुर्य्योधन के पापहि । परशुराम दीन्हों निज शापहि ४६ ताते भयो मृत्युको कारण । सम्मुख दरशकरौ जगतारण॥हँसिभीषम यहबातबखानी। साधु नरेश परम सज्ञानी ४७ दक्षिणायन रवि नाशककहिये । ताते शरशय्यामें रहिये ॥ उतरायण रवि होइहि जबहीं । करिहौं देह त्याग निज तबहीं ४८ ॥

नरोत्तमदास ।

दीनताकावर्णन ॥

दो० विप्रसुदामा बसतहैं सदा आपने धाम ॥
भिक्षाकरि भोजनकरै हियेजपै हरिनाम १
ताकी घरनी पतिव्रता गहे वेदकी रीति ॥
सुबुधि सुशीलसलज्जअति पतिसेवासों प्रीति २
कह्यो सुदामा एकादिन कृष्ण हमारेमित्र ॥
करतरहैं उपदेशप्रिय ऐसो परम विचित्र ३

महादानि जिनकेहितू यदुकुल कैरवचन्द ॥
सो दारिद सन्तापको सहै रोजउठिदन्द ४
कह्यो सुदामा बामसुनु और बृथासब भोग ॥
सत्यभजन भगवानको सहितधर्म्म जपयोग ५

घनाक्षरी ॥ लोचनकमल दुखमोचन तिलक भाल मणिमय कुण्डल मुकुट बाँधे माथ हैं। ओढ़े पीत बसन गरेमो बैजयंतीमाल शङ्ख चक्र गदा और पद्मलिये हाथ हैं ॥ नरोत्तमकहै सुभग रूप सान्दीपिनके तुम्हीं कहौ हम वे पढ़ैया एक साथहैं। द्वारकाके गये दूर दारिद करेंगे पिय द्वारका के नाथ वै अनाथन के नाथ हैं ६ ॥

सवैया ॥ शिक्षकहौंसिगरेजगकोगुरु ताकहँ तूअबदेतहै शिक्षा। जे तप कै परलोक सुधारत सम्पतिकी तिनके नहिं इच्छा ॥ मेरेहिये हरिके पद पङ्कज बार हजार लै देखु परीक्षा। औरनको धन चाहिये बावरि ब्राह्मण को धन केवल भिक्षा ७ कोदौ सवाँ जुरतो भरि पेट तौ चाहती ना दधि दूध मठौती। शीत ब्यतीत भयो सिसियातही हौं हठती पै तुम्हैं न हठौती ॥ जोसुनती न हितू हरि सोंतुम्हें काहेक द्वारकै पेलि पठौती। या घरते न गयो कबहूँ पिय टूटो तवा अरु फूटी कठौती ८ छोड़ि सबै जक तोहिं लगी बक आठहु याम यही बक ठानी। जातहिं देहैं लदाय लढ़ाभरि ऐहौं लिये तू यही जिय जानी ॥ पावें कहाँते अटारी अटा जिनकोहै लिखी बिधि टूटिय छानी। जो पै दरिद्र ललाट लिखो कहु को त्याहि मेटि सकेगो अयानी ९ प्रीतिमें चूक नहीं उनके कछु मोकों मिलैं हरि कण्ठ लगायके। द्वार गये कछुदेहैं पै देहैं वै

द्वारका नायकेहैं सब लायके ॥ बातन बीतिगये पनद्वै अबतौ पहुँचो बिरधापन आयके । जीवनकेतक जाके लिये हरिके अब होउँ कनावड़ो जायके१० हूजै कनौड़े बार अपार हितू जोपै दीनदयालुसों पाइये । तीनिहुँ लोकके नायकहैं तिनके दरबार न जात लजाइये॥ मेरो कहो मनमेंधरिये प्रभु भूलि न और प्रसङ्ग चलाइये । औरके द्वारते कार्य्य नहीं अब द्वारकानाथके द्वारको जाइये ११ द्वारकाजाहुजू द्वारकाजाहुजू आठहु याम यहै बकतेरे । जोन कहो करिये तो बड़ोदुख जावैं कहां अपनी गति हेरे ॥ द्वार खड़े छड़िया प्रभुके जहँ भूपति जान न पावत नेरे । पांचसुपारी बिचारु तू देखिकै भेंटको चारि न अक्षत मेरे १२ ॥

दो०यह सुनिकै तियहर्षसों गईएकतिय पास ॥
पावसेर चावल लिये आई सहित हुलास १३
सिद्धिकरी गणपति सुमिरि बाँधि दुपटियाखूँट ॥
मांगत खातगयेचले मारग बाली बूट १४ ।
भाल तिलक घसिकै दियो लियो सुमिरनी हाथ॥
देखि दिव्य द्वारावती कियो अनाथ सनाथ १५

घनाक्षरी॥दृष्टिचकचौंधिगईदेखि सब स्वर्णमयी एकते सरस एक द्वारकाके भौनहैं । पूछेबिन कोऊकहूँ काहू से न करै बात देवतासे साधि सबबैठे करिमौनहैं ॥ देखत सुदामाजूको पुरजन धायगहे पाय बिप्र कृपाके कहांको कीन्ह्योंगौनहै । धीरज अधीर के हरन परपीर के बताओ बलबीरकेरे धाम यहां कौनहैं १६ ॥

दो०दीनजानि काहू पुरुष करगहि लीनोधाय ॥

दीन द्वारठाढ़ो कियो दीनबन्धु के जाय १७
सिंह पँवर पग धरतही रोंकि रह्यो प्रतिहार॥
कोहौ बिप्र चलेकहां कहु निजचित्तबिचार १८
घनाक्षरी॥ एक ग्रामबासीसदा रहत एकहीसङ्ग काहू याम जुदे न रहत एक मनके। एकही गुरूके पढ़ेविद्या बलबीरयुत एकसङ्ग खेलत न छूटे एकक्षनके॥ बीतेकछु काल आये द्वारकाको दीनबन्धु जात द्विजराज भेंटे चलेश्यामघनके। दीजैमोहिं जाय है सुदामा मेरो नाम सुनो हम औ कृपानिधान मीत बालापनके १९॥
दो० दीनबन्धुके बन्धुगुरु जानि परी मन माहिं॥
द्वारराखि प्रभु पहँ गयो द्वारपाल प्रभुपाहिं २०
सवैया॥ शीश पगा न झँगा तनमें प्रभुजानैकोआहि बसै क्यहिग्रामा। धोती फटीसी लटीदुपटी अरु पाँयउपानह की नहिं सामा॥ द्वारखड़ो द्विज दुर्ब्बल एक रहो चकि सों बसुधा अभिरामा। पूछत दीनदयालको धाम बतावत आपनोनाम सुदामा २१॥
घनाक्षरी॥बोल्योद्वारपाल सों सुदामानामपांड़ेसुनि छांड़े राजकाज ऐसीजीकी गति जानैको। द्वारकाके नाथ हाथजोरि धायगहे पाँय भेंटेलपटाय ऐसे और सुख मानैको॥ नयन प्रेमजल भरि पूछत कुशल हरि विप्रबोल्यो विपदामें मोहिं पहिचानै को। जैसी तुमकरी तैसी करैको दयाके सिन्धु ऐसीप्रीति दीनबन्धु दीननसोंमानैको २२॥
दो० भेंटि भली बिधि बिप्रको करगहि त्रिभुवनराय॥
अन्तःपुरको लैगये जहँ दूसर नहिं जाय २३

मणि मण्डित चौकी कनक ता ऊपर बैठाय ॥
पानी धरो परात में पग धोवनको आय २४
राजरमणि सोरहसहस सब सेवकिनि समेत ॥
आठौ पटरानी रहीं चकित चितै यह हेत २५
जिनकेचरणनकोसलिल हरत सकल सन्ताप ॥
पाँय सुदामा बिप्रके धोवत सो हरिआप २६
सवैया ॥ कैसे बिहाल ब्यवाइन सों भये कण्टकजाल गये पग जोये। हाय महादुख पायो सखा तुम आये इतै न किते दिन खोये ॥ देखि सुदामा कि दीनदशा करुणा करिके करुणानिधि रोये। पानी परातकोहाथछुयो पुनि नैनन के जल से पग धोये २७ ॥
दो०धोय चरण पटपीतसों पोंछ्यो श्री यदुराय ॥
सत्यभामा सों कह्यो प्रभु करो रसोई जाय २८
तंदुल तिय दीन्हें हुते आगे धरिबो जाय ॥
निरखिराजसम्पतिसुखद दै नहिंसकतलजाय २९
अन्तरयामी आप हरि जानि भक्त की रीति ॥
हृदय सुदामा मित्रको प्रगट जनाई प्रीति ३०
कछु भाभी हमको दियो सो तुम काहे नदेत ॥
चापि गाँठरी कांखमें रहे कहो क्यहि हेत ३१
सवैया ॥ आगे चना गुरुमातु दये ते लये तुम चाबि हमैं नहिं दीने। श्यामकहो मुसुकाय सुदामासों चोरीकी बात कहो जो प्रबीने ॥ गांठरी कांख में चापिरहे अब खोलत क्यों न सुधारस भीने। पाछिली बानि अजौं न गई तुम वैसेहीभाभीके तंदुल कीने ३२॥
दो०सकुचत छोरत गांठि को हरिहेरत त्यहि ओर ॥

जीरण पट छोरत फटो बिथरिपरे त्यहि ठौर ३३
यक मूठी हरि भरि लई दई स्वमुखमेंडारि॥
चबत चबाव लगे करन चतुराननत्रिपुरारि ३४
सवैया ॥ काँपि उठीं कमला जिय शोचत मोको कहा हरि को मन रोंको । सिद्धि छिपैं नव निद्धिछिपैं हरि ऋद्धि छिपैं यह ब्राह्मण धौंको ॥ शोरपरो सुरलोकहुमें जब दूसरी बार लियो भरिभ्कोंको । मेरु डरै बखशैं जनि मोहिं कुबेर चबाते चावर चौंको ३५ ॥
दो०मूठी तीसरिलेतही रुक्मिणि पकरी बाँह॥
तुम्हें कहा ऐसी भई सम्पति की अनचाह ३६
कह्यो रुक्मिणी कान्हसों यहधौं कौनमिलाप॥
करत सुदामा आपसम होत सुदामा आप ३७
याही कौतुक के समय कही सेवकिनि आय॥
भई रसोई सिद्धप्रभु भोजन करिये जाय ३८
बिप्र सहित असनान करि धोतीपहिरिबनाय॥
सन्ध्या करि मध्याह्नकी चौका बैठे जाय ३६
घनाक्षरी॥ रूपे के रुचिर थार पायस सहित घृत जीती जिन शोभा सब शरद के चन्दकी। दूसरे पहितिभात सोंधो सुरभी को घृत फूले फुलकान फल फूलद्युति मन्दकी॥ पापर मुँगौरी बरी बेसन अनेक प्रीति देवता विलोकि रहैं देवकीके नन्दकी। याबिधि सुदामा जीको अच्छे कै ज्यवाँय प्रभु पाछे कै पछावरि परोसी आय कन्दकी ४०॥
दो०सातदिवस यहिबिधि रहे प्रतिदिनआदरभाव॥
चित्त चलो गृह चलनको ताको सुनहुँबनाव ४१

देवेहुते सो दै चुके बिप्र न जानै गाथ॥
चलतीबार गोपाल जू कछू न दीन्हों हाथ ४२
रहियो आवत जातइत कहत न आई लाज॥
ऐसे आवन जानसों हौं आयों अबबाज ४३
हौंकब इत आवत हतो वाही पठयोपेलि॥
कहिहौं धनसों जायकै अबधनधरहुसकेलि ४४
और कहा कहिये जहां कञ्चनही के धाम॥
निपट कठिन हरिकोहियो मोकोदियो न दाम ४५
इन शोचन शोचत झखत आयो निज पुर तीर॥
दीठिपरी यकबारही हय गजेन्द्र की भीर ४६
सवैया॥ वैसही राज समाज बने गजराज घने मन सम्भ्रम छाये। वैसेई कञ्चन के सब धाम हैं द्वारकै माहिं मनों फिरि आये॥ भौन बिलोकि चको मन शोचत लोचतही सब गांव मँझाये। पूँछत पैज परी सब सों अब झोंपड़ी को कहुँ खोज न पाये ४७॥
दो० पहुँचिरहे निज भवन बहु दिवस लीन्ह सुखभोग॥
अन्तगये हरिपुर सहित निज नगरीके लोग ४८॥

नवलदासकवि॥

भक्तों की प्रशंसा॥

दो० भक्त एकते एक जग जनि कोउ करै गुमान॥
कोउ प्रकट कोउ गुप्तहै जानि रहे भगवान १
चौ० सुनहुँ उमा हरिप्रिय दुख माना। गयो त्वरितसुनि कृपानिधाना॥ रुक्मिणि वचन कहा कछु ऐसे। दीन सुमन सत्यभामहिं कैसे २ वहिते सरस फूलजो होई। तौ मेरेघर आवै कोई॥ फिरहु तुम्हार अरथ सब

पावा। जाहु जहां बैठी सतिभावा ३ प्रभु सुनित्व-
रित फिरे वहि पाँये। आय निकट अर्ज्जुनहिं बुलाये॥
तासों कहि अति वचन यथारथ। कदली बनहिं जाहु
चलि पारथ ४ फूल सुगंधराज लै आवहु। धावहु
त्वरित गहर नहिं लावहु॥ कसा निषङ्ग धनुष सम्भा-
री। सांझहि गमन कीन्ह धनुधारी ५ पहुँचे प्रात
वही बन माहीं। पारिजात जहँ बहुत बसाहीं॥ जगम-
गात जैसी फुलवारी। मानहुँ रवि शशि किरण पसारी ६
बिटप अनेक गगन लहिबाढ़े। फूलिफूलि नवपल्लव
काढ़े॥ पल्लव छाय रहे असमाना। सबुजरङ्ग जनु
गगन स्वहाना ७ ताबिच फूल नखत सम सोहा।
पारिजात रबि शशि मनमोहा॥ उदय अकाश बास
युत जोती। बहुत नखत जनु मणि गण मोती ८ फूल
अनेक गिरहिं तजि डारा। मनहुँ गगन घन टूटहिं ता-
रा॥ सुमन अनेक जातिफल काहीं। दूसर गगन म-
नहुँ कोउ नाहीं ६॥

दो० कोउ शुक्र कोउ वृहस्पति कोउ मंगलकीभांति॥
कोउकचपाचियन्हउदयघनसुमनअनेकनजाति १०

चौ० यह छबि देखि छकित भये पारथ। सुमन लेन
लागे हरिस्वारथ॥ बानर चारि रहहिं रखवारा। हनू-
मान के चौकीदारा ११ तोरत देखि शाखमृग धाये।
हनुमानहिं यह खबरि जनाये॥ मानुष एक धनुष शर-
ताने। तोरत फूल मनो नहिं माने १२ यहसुनि पवन-
कुमार रिसाना। क्रोधवन्त आयो बलखाना॥ आय क-
ह्यो कपि अति रिसपागी। यमपुर जावा चहत अभा-

गी १३ रे खल कुटिल अन्यायी चोरा । कहु काके बल फूलन तोरा ॥ तोरत फूल जाहि सुनि पाऊँ । ताहि त्वरित यमपन्थ पठाऊँ १४ ये रघुबर पूजा के कारन। तोरत मैं जानत संसारन ॥ दूसर और कौन अस आ- यो। खैंचौं खाल सुनै जिमि पायो १५ हनूमान या बिधि कहि बोले । पारथ क्रोधवन्त रव खोले ॥ डार डार में कूदत डोलत। मर्कट मूढ़ समुझि नहिं बोलत १६ फल भक्षक रक्षक निज काया । महाभटनसन बाद लगाया॥ वचन अनेक कहे बिन लाजा । वीरनसों कहुँ पस्यो न काजा १७ जो रघुबर निज इष्ट सुनायो । सो तिनकी महिमा हम पायो ॥ यहि बिधि कहत बहुत दुर्व्वादा। पुनि पुनि वर्णत सहित विषादा १८ ॥

दो० बड़े धनुर्द्धर तोर प्रभु शर को सरा न बांध ॥
गिरि ढोवत मर्कट मुये कहु कौने अपराध १९

चौ० तब हनुमत रघुबरहि बखाना। रे खल चोर मर्म्म नहिं जाना ॥ दीनबन्धु रघुबीर कृपाला । कहु त्यहिसमको दीनदयाला २० कल्प्यो माथ बेर दश रावन। तब शिव लङ्क दीन मनभावन ॥ जबहि विभीषण प्रभुपद चीन्हा। सहजहि सकुचि राम त्यहि दीन्हा २१ अरिहि मारि सुत लक्ष समेता। सो परिवार कौन कहै तेता ॥ एकहि बाण बालि जिन्ह मारा। सुग्रीवहि शिर तिलक निकारा २२ करैं राम सरितेश जो चहई। दल बल भार बाण नहिं सहई ॥ ताते आनि पषानन राखे। हनूमान या बिधि कहि भाखे २३ कहपारथ निज तेज सँभारौं। मैं शर पर संसार उतारौं ॥ कह कपि

राखु सबै संसारा। मोहिं चढ़ाय उतारु न पारा २४ मोहिंचढ़त करु पोढ़ बनाई। मानहु सैन्यउतरि सबआई॥ तब दोउ जने सिन्धु पहँ आये। हनूमान असबचन सुनाये २५ बांध बांधिके मोहिं देखावो। तो निज प्राण दान करि पावों॥ तब पारथ कीन्ह्यों धनुधारी। शर समूह को सकै विचारी २६ कोटिन अर्ब खर्ब शर छाँटे। शत योजन बाणन सों पाटे॥ बाण बांध निरखत हनुमाना। अपने जिय अचरज कै जाना २७॥

दो० यह कोउ योधा महाबल मोहिं परा नहिं जानि॥
कपट रूप मोसन रह्यो देखि बाँध भयमानि २८

चौ० ताहि प्रबोधि तहां बैठाये। तब हनुमान उतर दिशिधाये॥ पहुँचेजिंहिवन विविधपहारा। योजनसहस देहबिस्तारा २९ अयुतकोटि पर्व्वत हनुलीन्हों। रोम रोम सब बन्धन कीन्हों॥ करकाँधे कछु मेरुस्वहाये। धवला गिरिहि शीश धै लाये ३० याविधि रूप भयङ्कर कीन्हा। भूमि अकाश जातनहिं चीन्हा॥ चारिहजार कोश लहि काया। पैलि देह सब जगत देखाया ३१ बाढ़ि माथ रविमण्डल लागा। देखत सबै देवगण भागा॥ रवि छपि गयो भई अँधियारी। प्रलय होन चाहत जनुभारी ३२ गर्ज्जि तर्ज्जि तड़प्यो विकराला। धायो क्रोधवन्त जनु काला॥ गर्भ स्रवहिं तिय कूप सुखानी। रहिगा सिन्धु अकेलहि पानी ३३ अर्ज्जुन अन्धकार जब देखो। मन महँ अति अचरज करिलेखो॥ मन महँ शोच करत असभाखै। याके चढ़त बाँध को राखै ३४ राम भक्त हनु परम सयानो। नाहक मैं यासन अरु-

झानो ॥ अबतो राम रखावहु मोहीं । मैं जानत प्रभु एकै तोहीं ३५ बाना तोर मोर नहिं कोई । यह अपमान तोर प्रभुहोई ॥ मनहीं मन अर्ज्जुन अस भाषै । टूटत बाँध मोहिं नहिं राखै ३६ अब नाहीं प्रभु मोर उबारा । जस बूझै तस करहु विचारा ॥ जब कहुँपरत दास कहँ गाढ़ा । तब हीं होत राम तुम ठाढ़ा ३७ ॥

दो० पारथ भे अति बिकल तन देखि भयङ्कर कीश ॥
उर अन्तर सुमिरतखड़े तुम राखहु जगदीश ३८

चौ० तबश्रीपति अपने मनजाने । दूनौपरम भक्तअरुझाने ॥ कमठ शेष महिभार न सहई । बाणबाँध कौनी बिधि रहई ३९ जो हनुमान घातकै पावै । पारथको यमलोक पठावै ॥ मैंअसि युक्तिकरौं अबकोई । काहूकर अपमान न होई ४० भक्त मोर दूनौ अति प्यारे । यह कहि श्री जगनाथ सिधारे ॥ गुप्त रूप अति रची उपाई । जा बिधि रहै दुवौ सरसाई ४१ कमठ रूप जल भीतर कीन्हों । शरके हेठ पीठि प्रभु दीन्हों ॥ या बिधि प्रभु आये जल माहीं । हनु पारथ जानत कोउ नाहीं ४२ पवन तनय अर्ज्जुनहिं पुकारी । धरत पाँव शर बाँध सँभारी ॥ पुनि पारथ सहसा करि भाखो । जाहु निशङ्क बाँध हम राखो ४३ यह सुनि क्रोध हनोमन कीन्हों । आय पाँय शर ऊपर दीन्हों ॥ पीठिदबी सहि सक्यो न भारा । मुख ते छूटि रुधिर की धारा ४४ रक्त बर्ण सागर सब देखा । पवनकुमार अचम्भव लेखा ॥ है शर तर कोउ जीव लुकाना । जानित कचरि गयो गरुआना ४५ लाग्यो ध्यान करन त्यहि ठाईं । देखा शर तर बैठ गो-

साईं ॥ आयो लौटि त्वरित हनुमाना । त्राहि त्राहि मैं भेद न जाना ४६ मैं पशु मूढ़ काह यह कीन्हा । हरिके शिर ऊपर पगु दीन्हा ॥ जानि पाद नहिं धर्यो कृपाला । तुम जानत सबके उरहाला ४७ ॥

दो० त्राहित्राहिअब त्राहि मोहिं दीनबन्धु भगवान॥
मैं मतिमन्द न जान्यऊँ भयोमोहिं अभिमान ४८

चौ० भक्त तुम्हार एक ते एका । प्रगट गुप्त बहु भांति अनेका ॥ जो कोउ भक्त गुमान धरावै । सो प्रभु को सपन्यहु नहिंपावै ४९ कमठ रूप छोड़ा बनवारी । आये निकसि पिताम्बर धारी ॥ चरणन लोटि गये हनुमाना॥ धन्य धन्य प्रभु कृपानिधाना ५० मैं मतिमन्द अधम अपराधी । तुम प्रभु दीनानाथ अगाधी ॥ चूक मोरि क्यहि खोरि लगाऊं । अब क्यहि भांति माफ करि पाऊं ५१ माफ़ माफ़ नारायण भाखा । दूनौ कर दूनौ शिर राखा॥ नारायण अपन्यहिं मुखभाखे। दूनौभक्त बराबर राखे ५२ ताते पारबती सुनु ऐसा । हनु अर्ज्जुनहिं सो अन्तर कैसा ॥ बारबार सुनि मगन भवानी । कह मृदु बचनजोरि युग पानी ५३ ॥

हरि गीतिका ॥ तुम धन्यधन्य पुरारि जाहि मुरारि सरहत आपही । प्रभु तरण तारण जग उधारण मेटि सब सन्तापही॥ संसार तारण कार्य्यकारण चारुकीरति गाइये । पुनिभक्तहीके चरितसुन्दर और मोहिंसुनाइये५४॥

लल्लूजी लालकबि ॥

दृष्टान्त ॥

दो० भाव सरस समुझत सबै भलेलगे यहि भाय ॥

जैसे अवसरकी कही बाणी सुनत स्वहाय॥ १
नीकी पै फीकी लगै बिन अवसर की बात॥
जैसे वर्णत युद्धमें रसशृंगार नस्वहात॥ २
फीकीपै नीकीलगै कहिये समय बिचारि॥
सबके मन हर्षित करै ज्यों बिवाह में गारि॥ ३
जाही से कछु पाइये करिये ताकी आस॥
रीते सरवर पर गये कैसे बुझत पियास॥ ४
भले बुरेसब एकसे जौलौं बोलत नाहिं॥
जानि परतहैंकाकपिक ऋतु बसन्तके माहिं॥ ५
मधुरबचनतेजातमिटि उत्तमजनअभिमान॥
तनिक शीत जलसोंमिटत जैसे दूधउफान॥ ६
सबै सहायक सबलके कोइन निबल सहाय॥
पवन जगावत आगिको दीपहिदेत बुझाय॥ ७
प्रकृतिमिलेतेमिलतहै अनमिलतेनमिलाय॥
दूधदहीते जमतहै काँजीते फटिजाय॥ ८
परघर कबहुँन जाइये गयेघटतहै ज्योति॥
रविमण्डलमेंजातशशिक्षीणकलाछबिहोति॥ ९
मूरुखगुण समुझै नहीं तो न गुणी में चूक॥
कहाभयो दिनकोविभव देख्यो जो न उलूक॥ १०
मूर्खतहाँहीं मानिये जहाँ न पण्डित होय॥
दीपककी रविकी उदय बात न पूँछतकोय॥ ११
निपटअबुधसमुझैंकहाबुधजनवचनविलास॥
कबहूँ भेकनजानहीं अमल कमलकीबास॥ १२
क्योंकीजै ऐसोयतन जासोंकार्य्य न होय॥
पर्व्वतपर खोदैकुवाँ कैसे निकसै तोय॥ १३

सहज रसीलो होयजो करै अहितपर हेत ॥
जैसे पीड़ित कीजिये ईष तहूँरसदेत ॥१४
कबहुँकुसङ्ग न कीजियेकियेप्रकृतिकीहानि ॥
गूंगे को समुझायबो गूँगेकी गतिआनि ॥१५
कहाकरै कोऊयतन प्रकृति औरकी और ॥
विष मारै ज्यावैसुधा उपजै एकहिठौर ॥१६
धनबाढ़े मनबढ़िगयो नाहिंनमन घटहोय ॥
ज्योंजलसङ्गबढ़ैजलजजलघटिघटैनसोय ॥१७
सबसे लघुहै माँगिबो यामेंफेर न सार ॥
बलिपै याँचतहीभये बामनतन करतार ॥१८
होतसुसङ्गति सहज सुख दुख कुसङ्ग केथान ॥
गन्धीऔर लोहार की देखौ बैठि दुकान ॥१९
ठौरछुटेसे मीतहू ह्वै अमीत सतरात ॥
रबिजल उखरे कमलको जारत गारतजात ॥२०
गुणवालो सम्पतिलहै लहै नगुण बिनकोय ॥
काढ़ैनीर पतालते जो गुण युत घट होय ॥२१
अरिछोटो गनियेनहीं जातेहोत बिगार ॥
तृणसमूहको क्षणकमें जारत तनकअँगार ॥२२
पण्डितजनकोश्रममरमजानतजेमतिधीर ॥
कबहूँ बाँझ न जानही तनुप्रसूतकीपीर ॥२३
गाहकसबै सुपूतके सारैकाम सुपूत ॥
सबको ढांपन होतहै जैसे बनकोसूत ॥२४
करतकरत अभ्यासके जड़मतिहोतसुजान ॥
रसरी आवत जातते शिलपर परतनिशान ॥२५
कहरसमें कहरोसमें अरिसोंजनि पतियाय ॥

जैसेशीतल तप्तजल डारत अग्निबुझाय ॥२६
सुखसज्जनके मिलनको दुर्ज्जनमिलेजनाय॥
जानैऊख मिठासको जबमुख नींबचबाय ॥२७
जाहिमिले सुखहोतहै तिहिबिछुरे दुखहोय॥
सूरउदय फूलेकमल ताबिन सकुचैसोय ॥२८
खाय न खरचे शुद्धमन चोरसबल लैजाय॥
पीछे ज्यों मधुमक्षिका हाथमलै पछिताय॥२९
उत्तमविद्या लीजिये यदपि नीचपैहोय ॥
परोअपावन ठौरमें कञ्चन तजै न कोय ॥३०
अरिके करमें दीजिये अवसरको अधिकार॥
ज्योंज्यों द्रव्य लुटाइहै त्योंत्यों यशविस्तार॥३१
जाहि बड़ाई चाहिये तजै न उत्तमसाथ॥
ज्योंपलाश सँगपानके पहुँचै राजाहाथ ॥३२
बदन श्रवण अरु नासिका सबहीके यकठौर॥
कहबो सुनबो देखबो चतुरनको कछुऔर ॥३३

गिरिधरराय कवि॥

सामयिक बार्ता॥

कुण्डलिका ॥ बैरी बँधुआ बानियाँ ज्वारी चोर लवार। व्यभिचारी रोगी ऋणी नगरनारि को यार॥ नगर नारि को यार भूलि परतीति न कीजै। सौ सौगन्दे खाय भूलिकै चित्त न दीजै॥ कहि गिरिधर कविराय घरैआवै अनगैरी। मुखसोंकहै बनाय चित्तमें पूरोवैरी १ विना विचारे जो करै सो पीछे पछिताय। काम बिगारै आपनो जगमें होत हँसाय ॥ जगमें होत हँसाय चित्त में चैन न पावै। खान पान सन्मान राग रँग मनहिं न

भावै ॥ कहिगिरिधर कविराय दुःख कछु टरै न टारे । खट-
कट है दिन रात कियो जो विना बिचारे २ साईं ये न बि-
रोधिये गुरु पण्डित कवियार । बेटा बनिता पवँरिया य-
ज्ञ करावनहार ॥ यज्ञकरावनहार राजमन्त्री जो होई ।
बिप्र परोसीवैद्य आप को तपै रसोई ॥ कहि गिरिधर क-
विराय चतुर की यह चतुराई । इन तेरह ते तरहदिये ब-
निआवे साँईं ३ साईं अपने चित्त की भूलि न कहिये
कोय । तब लगु मनमें राखिये जब लगु काम न होय ॥
जब लगु काम न होय भूलि कबहूँ नहिं कहिये । दुर्ज्जन
तातो होय आप सीरे ह्वै रहिये ॥ कहि गिरिधर कविराय
बात चतुरन की ताईं । करतूतिन कहि देत आप नहिंकहि-
ये साईं ४ चिन्ता ज्वाल शरीर बन दव लागे न बुझाय ।
प्रकट धुआँ नहिं देखिये उर अन्तर धुँधुवाय ॥ उर अन्त-
र धुँधुवाय जरै जस कचकी भट्टी । जरिगौ लोहूमाँस रहि-
गै हाड़की ठट्टी ॥ कहिगिरिधर कविराय सुनो हो मेरे मि-
न्ता । वै नर कैसे जियें जाहि तन ब्यापै चिन्ता ५ राजा
के दरबार में जैये समया पाय । जाय वहाँ नहिं बैठिये जहँ
कोउ देय उठाय ॥ जहँ कोउ देयउठाय बहुत अनबोल
न रहिये । हँसिये नाहिं हहाय बात पूछे पर कहिये ॥ क-
हि गिरिधर कविराय समय को करिये काजा । अति
आतुर नहिं होय बहुरि अनखैहैराजा ६ साईं अपने
भाइ को कबहुँ न दीजे त्रास । पलक दूरि नहिं कीजिये
सदा राखिये पास ॥ सदा राखिये पास त्रास कबहूँ नहिं
दीजै । त्रास दियो लङ्केश तासु की गति सुनिलीजै ॥ कहि
गिरिधर कविराय राम सों मिलिगो जाई । पाय वि-

भीषण राज्य लङ्कपति बाजो सांई ७ साईं बेटा बापसों बिगरे होत अकाज। हिरण्य कशिपु अरु कंस को गयो दुहुन को राज॥ गयो दुहुन को राज बाप बेटेसों बिगरी। दुशमन दावागीर हँसै सब मण्डल नगरी॥ कहि गिरिधर कविराय उन्हें काहू न बताईं। पिता पुत्र के बैर कहो सुखकैसे सांई ८॥

बिहारीलाल कबि॥

सामयिक॥

दो०कैसे छोटे नरन ते सरत बड़ेन के काम॥
मढ़े दमामे जात हैं कहुँचूहे के चाम॥ १
दुसहदुराजप्रजानको क्यों न बढ़ै अतिदंद॥
अधिकअँधेरोजगकरत मिलिमावस रवि चंद २
बसै बुराई जासु तनु ताही को सन्मान॥
भलो भलो कहि छाँड़िये खोटे ग्रह जपदान॥ ३
गुणी गुणी सबकोउ कहत निगुणीगुणी न होत॥
सुन्यों कहूँ तरु अर्कको अर्क समान उदोत॥ ४
सङ्गति सुमति न पावहीं परे कुमतिके धन्ध॥
राखहु मेलि कपूर में हींग न होत सुगन्ध॥ ५
सोहत सङ्ग समान सों यहै कहैं सब लोग॥
पान पीक ओठन बनी काजर नयनन योग॥ ६
को कहि सकै बड़ेन सों लखे बड़ीयो भूल॥
दीन्हों दई गुलाब को इनडारन वै फूल॥ ७
शीतलताइ सुवास की घटै न महिमा मूर॥
पीनसवारे टारि दिय सोरा जानि कपूर॥ ८
नरकी औ नलनीरकी गति एकै करि जोइ॥

जेतो नीचो ह्वै चलै तेतो ऊँचो होइ ९
बढ़तबढ़त सम्पति सलिल सब सरोजबढ़िजाइ॥
घटत घटत पुनिनहिंघटै बरुसमूलकुम्हिलाइ १०

अन्यदासकवि॥

गृहस्थ और राजाओंका योग॥

पद्धटिका॥ का होत मुड़ाये मूड़बार। का होत रखाये जटाभार॥ का होत भामिनी तजेभोग। जौलों न चित्त थिरजुरैयोग १ थिर चित्तकरै सुमिरन मँआर।ऊपरसाधै सबलोकचार॥ यह राजयोग सुखको निधान।कोइज्ञान-वन्त जानत सुजान २अर्ज्जुनरु जनक पृथुआदिलोग। राजन साध्यो सब राजयोग॥ सुखराज कियो और भोग सिद्ध। को अतिथि भयो इन सम प्रसिद्ध ३ यह अतिथिनहूँ ते अतिअनूप। सुनु राजयोग सिद्धान्त भूप॥ सुख मारग यह पृथिचन्दराज। यहि सम न आ-न तम है इलाज ४ यह राजयोग है भक्ति ज्ञान। मनसा सुमिरन धुनिरूप ध्यान॥ जो यह न सधै धुनि ज्ञानगूढ़। तो अजपा साधन श्वाससूढ़ ५ जो यह न सधै अजपा उचार। तो इष्टदेव धरि ध्यान सार॥ जो ध्यान न आवै विना देख। तो प्रतिमा थापै इष्टवेष६नित प्रतिमापूजन दरशनित्त। सोइमूरति राखै ध्यान चित्त॥यहिभांति ध्यान उर बसै आनि। यह ध्यान राह नरनाह जानि७जो ध्यान न सधै न लगै चित्त। तो नेम सहित जप मन्त्र नित्त॥ जो मन्त्र न विधिसों सधै राउ। तो पावनप्रभु को लेय नाउ ८ तनु शुद्ध होय मुख शुद्ध बानि। मन शुद्ध होय सर्व्वज्ञ जानि॥ मन को स्वभाव अमिबो अकत्थ।

तिहि सुमिरन साधन ज्ञान गत्थ ९ मुख को स्वभाव बकिबो नरेश । तिहि नाम भजन चरचा सुदेश ॥ करि भक्ति भजन सुमिरन सुबुद्धि । मेटहिं मनकी भ्रमना कुबुद्धि १० जित जित मनसा भरमै अनन्त । तित तित सुमिरन साधन करन्त ॥ कछु दिन साधन करनै उपाय। परिजात बहुरि मनसा स्वभाय ११ मनसा सुमिरन धुनि सहज लीन । यह राजयोग जानहु प्रवीन ॥ जो राजयोग यह सधै राज । तो मन वाञ्छित सब होहिं काज १२ अरु कर्म्म लिप्त कबहूँ न होत । जग जीवन मुक्ति सदा उदोत ॥ यह ज्ञान भेद अरु वेद साखि। अक्षर अनन्य सिद्धान्त भाखि १३ ॥

दो॰ राजयोग सिद्धान्तमत जानि राजपृथिचन्द ॥
यहिसममत नाहिंदूसरो खोजिशास्त्रबहुछन्द १४
जो चाहो संसार सुख अरु सिद्धान्त प्रकास ॥
तौ साधो सर्व्वज्ञ यह योग सदा अनयास १५

रघुनाथदास कवि ॥

राम नाम की प्रशंसा ॥

दो॰ राम नाम की वन्दना करौं प्रथम शिरनाय ॥
जासु कृपा से सिद्ध सब भये सुखद समुदाय १

कुण्डलिका ॥ रामसनेही साधु सोइ करै रामसे नेह । वेद मते रघुनाथभनि पन्थ पुरातन येह ॥ पन्थ पुरातन येह खेह ताके मुख परई । राम नामके बीच नीच जो संशय करई ॥ करै न वचन प्रमाण कहै जो जनक विदेही । कलिमें तुलसीदास भये पुनि रामसनेही २ ॥

घनाक्षरी ॥ राम नाम जपत महेश शेश औ गणेश

नाम जपि उमा आवागमन मिटावहैं। राम नाम जपत अनन्त सन्त सनकादि नाम जपि ध्रुव धाम अचल सो पाव हैं॥ राम नाम जपि मुनि बालमीकि ब्रह्म भये बड़ोई प्रभाव वेद नेति कहि गावहैं। कहै रघुनाथ सोई राम नाम भल मध्य ताहि जो विदूषै सो तो मूढ़न को रावहै ३ गज की चलनि कहा जानै खर कूकर औ भोगी कहा जानै योग रङ्कसुख राव को। गोमल को जीव कहा जानै बास पङ्कज की को लखत दासी पतिव्रता केरे भाव को॥ कूपकेरे दादुर ते जानैं कहा सागर को नर की सो रङ्ग काक हंस के स्वभाव को। कहै रघुनाथ ऐसे कूर नर मूढ़ जौन तौन कहा जानैं राम नाम के प्रभाव को ४॥

सवैया॥ रामके नामके अक्षर द्वै महिमा कहि शेष सकैं न करोरी। जासु प्रसाद सुरासुर में हर हर्षि हलाहल पान करोरी॥ जनरघुनाथ के माथ स्वई जो सजीवन सार सुधारस कोरी। रकार श्रीराजकुमार उदार मकार सो श्रीमिथिलेशकिशोरी ५ सत्य रकाररहै जो सदा अरु चित्त अकार सचेतन जोरी। आनन्द रूप मकार मिदं हरि नाम सच्चिदानन्द कहोरी॥ जन रघुनाथके माथस्वई शिव वाक्य महारामायणकोरी। रकार श्रीराजकुमार उदार मकारसो श्रीमिथिलेशकिशोरी ६ नामप्रभाव गुनै न सुनै फुर फेरि न देखिये ता मुखओरी। और विलोकत खोरिलगै इमि ब्रह्मपुराणके माहिं लखोरी॥ जन रघुनाथके माथस्वई जो करै शुचि शीघ्र सुलम्पटकोरी। रकार श्रीराजकुमार उदार मकार

सो श्रीमिथिलेशकिशोरी ७ ब्रह्ममें रेफ रमी पुनि धर्म्म में कर्म्म में रेफ प्रसिद्ध न चोरी । राधाकेनाममें आदि रकार नारायण मध्य रकार लसोरी ॥ जन रघुनाथ के माथस्वई सब नामनको कृतपूरण जोरी । रकार श्री-राजकुमार उदार मकार सो श्रीमिथिलेशकिशोरी ८ सप्तऋषय उपदेशसे वे सदई कवि कोकिल त्यागि ठगोरी । नाममरा विपरीत पुकारि भयेनिष्पापऋषय शिरमोरी ॥ जनरघुनाथके माथ स्वई ज्यहिहेतु चरित्र बनो शतकोरी । रकार श्रीराजकुमार उदार मकारसो श्रीमिथिलेशकिशोरी ९ रामचरित्र लगे शिव बाँटन बाँटजु तेंतिस तेंतिस कोरी। तेंतिस लाख सहस्रतथोपरि तेंतिस तेंतिस वर्ण दशोरी ॥ जनरघुनाथ के माथ स्वई युगअङ्क बचेलिये आप निहोरी । रकार श्रीराजकुमार उदार मकार सो श्रीमिथिलेशकिशोरी १० ॥

दो० सिफ़तकरै जोखाँड़की धरै न मुख अभिराम ॥
लहैस्वादु रघुनाथकिमि तिमि सुमिरनबिननाम ११
सङ्केतन परिहासयुत अस्तोभन हेलन्न ॥
जपै नाम रघुनाथ सोउ दलै पापअमितन्न १२
स्वइज्ञानी ध्यानी स्वई दाता शूर सुजान ॥
अतिपवित्ररघुनाथस्वइ जो सुमिरैभगवान १३
शठअशिष्य विषपाठकी तिन्हैं न कहियेयेह ॥
रामउपासक सों कही जोसुनि उरधारिलेह १४

मलूकदास कवि ॥

हरिगुणवर्णन ॥

चौ० वामनह्वै गये बलिकेद्वारे । दीनवचन हरिजाय

पुकारे ॥ माँगुमाँगु बलिराजा बोले । मनेकीन्ह गुरुवचन अगोले १ साढ़ेतीनि पैग भुइँ माँगी । राजाकह तुम बड़ेअभागी ॥ तुमकछु दक्षिणा माँग न जानी । मैं दैत्योंआधी रजधानी २ तबवहिं कहाकर्म्म कर हीता । नापिलेहु मैं यह वरदीना ॥ बढ़ेकृष्ण तबलागि अकाशा। चकितभये बलि देखितमाशा ३ तीनलोक तीन्हें पग कीना । बलिछलि राज्य इन्द्रकहँदीना ॥ आधे पगको पृष्ठनपाई । तब रीझे गोविन्देराई ४ तबहरि कह्योमाँगु वरराजा । सबविधि पुरवौं तोरेकाजा ॥ तबबलि कह हरि इतनाकीजै । सदाआपमोहिं दर्शनदीजै ५ ऐसे राम वचनके गाढ़े । राजा बलिके द्वारे ठाढ़े ॥ जहँ जहँ परै दास को गाढ़ा । मानहुँ राम कालिह ते ठाढ़ा ६ ॥

मोतीलाल कवि ॥

शुक्राचार्य्य के जन्म की कथा ॥

चौ० एक समय गिरिवर कैलासा । सहित शिवा शिव करैं विलासा ॥ करि कछु काल राम गुण गाना । महादेव उठिगये अन्हाना १ बैठीं गिरिजा सदनसुहाये । ताही समय देवऋषि आये ॥ उठिके उमा विनय बहुकीन्हा । पाद्यारघ दै आसन दीन्हा २ बैठे नारद अतिसुख पाई । तबहिं उमा मृदु वचन सुनाई ॥ धन्यभाग्यमुनि आजु हमारे । कृपा कीन्ह इहवाँ पगु धारे ३ कयहि कारण आगमन तुम्हारे । कहु ऋषि सो अब करी विचारे ॥ यह सुनि नारद वचन उचारे । चित दै सुनिये हाल हमारे ४ ॥

दो० बहु दिन बीते ब्रह्मपुर मनमहँ भयो उदास ॥

शिवदर्शन के कारण चलि आयों कैलास ५

चौ० शम्भु कहाँगये शैलकुमारी। सो हमसों तुम कहौ विचारी॥ बोलीं वचन उमा हितकारी। मज्जन करन गये त्रिपुरारी ६ पुनि नारद कह वचन बखानी। सुनहु एक आश्चर्य्य भवानी॥ नर शिरमाल शम्भु उरजेऊ। तुम जानहु कछु तिनकर भेऊ ७ उमा कहा मुनि मैं नहिं जानउँ। मिथ्या तुमसन काह बखानउँ॥ तब नारदकह वचन रसाला। तुम्हरे शिर की है वह माला ८ तुम ते कछु शिव अन्तर राखा। जो यहबात कबहुँ नहिं भाखा॥ जब आवैं शिव करि असनाना। तब तुम पूछेहु सकल विधाना ९॥

दो०यह कहि नारद नाय शिर भवन गये सुखपाय॥
तब मुनिवरके वचन सुनि उमाबैठिबिललाय१०

चौ० यहि अन्तर शङ्कर चलि आये। देखी उमहिं विषाद बढ़ाये॥ तबहिं शम्भु बोले मृदु बानी। क्यहि कारण दुख कीन भवानी ११ तबहिं उमा कह पद शिर नाई। संशय एक सुनहु ममसाँई॥ तुम्हरे हृदय मुण्ड कीमाला। सो क्यहिके शिर कहहु कृपाला १२ तब शङ्कर बोले मुसुकाई। को तुम्हारि यह मतिभरमाई॥ मुण्डमालममहृदय भवानी। कथा ताहि की सुनहुसयानी १३ जब जब जन्म तुम्हारो होई। रामकृपा ते ब्याही सोई॥ समय पाय जब त्यागहु देही। तब तब शिर को माल करेही १४॥

दो० जेते जन्म तुम्हार भे देह तजे करि भोग॥
तेते शिर की माल किय प्रिया तुम्हारे शोग १५

चौ० यहसुनि गिरिजा गिरा उचारी। सुनहु वचन मम नाथ पुरारी॥ तव अवतार भयो प्रभु एका। क्यहि कारण मम जन्म अनेका १६ मोरे मन प्रभु भयो अँदेशा। सो समुझाय कहहु विश्वेशा॥ तब शिव बोले गिरा स्वहाई। हृदय सुमिरि निजप्रभु रघुराई १७ बीज मंत्र रघुनायक केरो। सो मम हिय किये सदा बसेरो॥ ताते मोर होइ नहिं नाशा। डरै काल तममन्त्र प्रकाशा १८ बीजमंत्र तुम जानत नाहीं। ताते जन्म धरहु विपुलाहीं॥ तब गिरिजा बोलीं कर जोरी। विश्वनाथसुनु बिनती मोरी १६ दासी जानि कृपा अब कीजै। बीजमंत्र हमको प्रभु दीजै॥ प्रेमसहित हम सुनब कृपाला। यासों कहिये दीन दयाला २०॥

दो० शङ्कर बोले वचन तब सुनहु प्रिया ममबानि॥
विपुलजीवसबशैलपर क्यहिविधिकहौंबखानि २१

चौ० जो यह मंत्र सुनै कोइ पावै। ताके काल निकट नहिंआवै॥ अजर अमर सो होइ भवानी। ताते क्यहि विधि कहौं बखानी २२ तब गिरिजा कह वचन स्वहाई। जीव सकल प्रभु देहु भगाई॥ तब शङ्कर चितयो करि क्रोधा। भागे जीव विकल चहुँकोधा २३ आदि पिपील जीव जहँताई। सो चट पट सब गये पराई॥ जीवरहित गिरि देखि कृपाला। बैठि बिछाय नागरिपु छाला २४ ढिग बैठीं गिरिजा अनुरागे। तब शिव बीज सुनावन लागे॥ जिहि तरुतर बैठे गिरिनाहा। तहँ यक नीड़ कीर कर राहा २५॥

दो० तिहि मन्दिरसों अण्ड यक धरिखग गयोउड़ाय॥

जो भावी सो ना मिटै सुनहु युधिष्ठिर राय २६

चौ० अण्डा जीव सुनै मनलाई। बीजमंत्र शिव उमहिं सुनाई॥ कहत सुनत उपजत सुख नयऊ। बारह वर्ष बीति तब गयऊ २७ जो २ मंत्र उमहिं शिव दीन्हा। अण्ड फूटि सो सब सुनि लीन्हा॥ द्वादश वर्ष बीति जब गयऊ। निद्रावश गिरिजा तब भयऊ २८ सोवत जानि गिरीशकुमारी। तब ते कीर दई हुङ्कारी॥ यहि अन्तर कहि कथा सिरानी। शिव देखा गइ सोय भवानी २९ उमहिं जगाय कहा शिव बानी। कहँलगि सुन्यो सो चीज सयानी॥ जहँ लगि सुना कहा सबगाई। अन्तर लखि शिव कह अनखाई ३० कथा पुराण मैं कहाबखानी। हुङ्कारी को दीन भवानी॥ उमा कहा प्रभु मैं गइ सोई। देखहु नाथ जीव कोउ होई ३१ तब शङ्कर देख्यो करि ध्याना। सुन्यो बीज खग कीर सुजाना॥ कर त्रिशूल लै उठे रिसाई। देखि कीर उड़ि चल्यो पराई ३२॥

दो० पाछे शिव धावत फिरैं किये क्रोध सुख मूल॥
भावीवश नृप कठिनहै छूट न शम्भु त्रिशूल ३३

चौ० जहां जहां खग शरणहिभाखी। शिव तस्कर लखि सकै न राखी॥ भाग्यो खग व्याकुल अति शोका। भ्रमत फिर्यो सारे त्रैलोका ३४ जब अति विकलकीर मन भयऊ। उड़त उड़त व्यासाश्रम गयऊ॥ व्यास नारि त्यहि समय भुवारा। मज्जन करि तब रविहि निहारा ३५ ताहि तबै आई जँभुआई। वदन पन्थ खग जठर समाई॥ पाछे शम्भु पहूँचे आई। शम्भु देखि त्रिय माथ नवाई ३६ बोले शिव सुनु ऋषि की नारी।

चोर हमार तु देहु निकारी ॥ सुनि त्रिय कहा नाथ नहिं जानौं । यहां चोरको मर्म्म बखानौं ३७ तब तियसों कह शम्भुसुजाना । जठर तुम्हारे चोर समाना ॥ ताही को हम ढूँढ़त अहई । मृषा न बात सत्य हम कहई ३८ ॥
दो० देनिकारि रिपुमोरहै करहु वचन विश्वास ॥
नहिंतोअबहीं मुनित्रिया करौं तुम्हारोनास ३९
चौ० यहि अन्तरहि व्यासमुनि आये । देखि शिवहिं पद शीश नवाये ॥ समाचार सुनि कहा मुनीशा । वचन हमार सुनौजगदीशा ४० त्रिया जाति प्रभु वध ना कीजै । बालक होइ तुम्हहिं सो लीजै ॥ मुनिके वचन सुने अतिहेतू । भये प्रसन्न तबै वृषकेतू ४१ पुनि मुनि सों तब कह्यो महेशा । दिह्यों पुत्र त्वहिं तजोअँदेशा ॥ पाणि जोरि मुनि बिनतीकीन्हा । ह्वैप्रसन्नतबशिववरदीन्हा ४२ होइहि पुत्र महाविज्ञानी । तासुचरित्र तिहूँपुर जानी ॥ वरदैशम्भुगयेकैलाशा । मुनिहिंपुत्रकीउपजीआशा ४३॥
दो० पूरणदिनबालक भयो शुकते सुनहुँ भुआरि ॥
शुकाचार्यअसनामतिहिराखाव्यासविचारि ४४

कृपाराम कवि ॥

कृपणता सहनशीलता और मनोबन्धनता का वर्णन ॥

चौ० सुनि उद्धव के मृदु शुभ वचना । जनु पियूष साने बहु रचना ॥ अतिकृपालु सन्तन सुखदायक । बोले गिरा मधुर यदुनायक १ हे उद्धव ऐसो नहिं कोई । दुर्ज्जन वचन क्षुभित नहिं होई ॥ मर्म्म बाण लगि अस दुख नाहीं । दुष्टवचन जस घाव पिराहीं २ दुर्ज्जन वचन सहै जो साधू । उन को यश गुणशील

अगाधू ॥ सहनशील बिन साधु न होई । है अतिकठि-
न सहै जन कोई ३ पर मैं तोहिं उपाय बताई । सहन
शीलता उर ठहराई ॥ मोसों सुनहु एक इतिहासा ।
जा सुनि होय हिये परकासा ४ भिक्षुक एक ज्ञान मय
भाखी । ताकी तोहिं सुनावों साखी ॥ दुष्टन कियो बहुत
अपमाना । ताड़न गारि देहिं विधि नाना ५ तिन भिक्षुक
गाथा यकगाई । कुमति आपनी धोय बहाई ॥ सो अब
सुनौ सुचितह्वैमोसों । निजजनजानि कहतहौंतोसों ६ ॥
दो०मालव देश सुवेश अति भूसुर यक धनवन्त ॥
कृषी वणिज सन्ततकरै कामी कृपण असन्त ७
चौ० अति लोभी क्रोधी यश हीना । घनो द्रव्य रह
सदा मलीना ॥ जो नर होइ बहुत धनवन्ता । सुखजासों
पुनि लहै न सन्ता ८ निज तनु को पीड़ा पुनि देई । पुत्र
दार हित करैं न तेई ॥ देव पितर गण सन्त न पोषै ।
भगिनिहिं भूलि कबहुँ नाहिं तोषै ९ सो कदर्य्य जामें
गुण ऐसो । यहि ते पापरूप कहु कैसो ॥ वह कज्जी
भूसुर अतिभयऊ । सबजगमें अतिअपयशलयऊ १०
बन्धु ज्ञाति भिक्षुक निज तनहूँ । इनहुँ हेतु धन खर्च न
कबहूँ ॥ पुत्र आदि कलपैं बहुभांती । ज्ञाति भृत्य दुख
सहैं दिन राती ११ कन्या अरु कलत्र कुलसारा । जे
सम्बन्ध सगे संसारा ॥ ते सबद्रोह निरन्तरगरहीं ।ताको
प्रिय नहिं कोऊ चरहीं १२ ऐसो पापदेखि अति ताको।
धनदसमान वित्तहै जाको ॥ धर्म्म कामते सबविधिहीना॥
दुहूँ लोकके सुखकरिछीना १३ जिन हित पञ्चयज्ञ जन
करहीं । गेही सकल दण्ड नित भरहीं ॥ सकल देव

तासौंकरि कोपा। तिन करि भयो विप्र धन लोपा १४॥
दो० कछु धन चोरी ते गयो कछु ज्ञातिन हरिलीन्ह॥
कछुधन पावक ते जस्यो भयो काल तनहीन १५
सो० विप्रभयो अतिदीन राज दण्ड बहु धनगयो॥
यहिविधिसबधनछीन भयोतासुअपमानबहु १६
चौ० बहुत कष्टकरि धन उपराजा। दियों न खायों मों बिनकाजा। तबत्यहि उपजीचिन्ताभारी॥ निशिदिनधन हिंत भयो दुखारी १७ महाताप तापित सो भयऊ। नयन प्रवाह रोग उर छयऊ॥ ऐसी विधि उपजा वैरागा। होइजासु करि जग दुख त्यागा १८ तब सो द्विज बोला अकुलाई। धिक २ अधम न मोसम भाई॥ अहोवृथा मैं बहु श्रम कीन्हा। आप आपको दुख बहु दीन्हा १९ मैं धन कीन्ह बहुत श्रम पाई। शोभा जस सपने सुख जाई॥ मैं खायों नहिं दियो न काहू। केवल अपयश भा यहिलाहू २० इतसुख लहै न उत सुखहोई॥ उभय लोक निजकर तिनखोई। बहुत झूँठ कहि जिनधन जोरा। तिनकहँ यमपुर विपतिकठोरा २१ परमयशस्वी बहुगुणवन्ता। पण्डित अरु जे बड़कुलवन्ता॥ सकलशिरोमणि जग सबजाना। अतिकमनीयरूप जगमाना २२॥
दो० ऐसे नर जो जगत में जो यद्यपि कछु लोभ॥
तौ सबगुणअवगुणभयेत्यहिपुनिकछुअनशोभ २३
चौ० जैसे रूपवन्त नर होई। कौन्यहुँ अंग विघ्न नहिं कोई॥ होत कुष्ठ रञ्चक भा जाही। सकल रूप शृङ्गार बताही २४ ऐसहि थोरौ भा ज्यहि लोभा। मिटै सकल गुण रूपन शोभा॥ जबते धन हित उद्यम करई। बढ़न

हेतु सुखसब परिहरई २५ तबते शोक त्रास भय पावै। चिन्ता पावक नितहि दहावै ॥ सिद्ध भये अरु राखन हेतू। पुनि ते सहैं कष्ट अघकेतू २६ भोग न करै नाश जब होई। तब पुनि बहु दुख पावै सोई ॥ हिंसा दम्भ मृषा अरु चोरी। काम क्रोध मद गर्व्व बहोरी २७ वैर भेद अरु गत विश्वासा। बहुत स्पर्द्धा कै हरिदासा ॥ पुनि तिय संग द्यूत मद पाना। पन्द्रह महा अनर्थ बखाना २८ षट हिंसादि प्रथम धन हेतू। होहिं अनर्थ महा धन केतू ॥ भये अर्त्थ नव अनरथ होई। मद ते आदि कहे सब जोई २९ जो चाहै कोउ निजहित कीना॥ इनहिं दूर करि देय प्रवीना॥ अर्त्थ नाम सुनि भूलहिं लोका। बिन विचार पावैं दुख शोका ३० भ्राता पिता पुत्र अरु दारा। स्वजन सुहृद जे निजपरिवारा॥ कौड़ी बीसलागिअज्ञानी। वैरकरहिं सुखतजि अभिमानी ३१

दो०आप आप मैं वैर करि युद्ध करैं नर मूढ़॥
तिहिमारैं आपन मरैं समझैं अर्त्थ न गूढ़ ३२

सो०धनहित निजप्रियप्रान तजहिंतहित्टणसदृशाते॥
अतिअघदोषनिदानजाहिंमूढ़पुनिअधमगति३३

चौ०जातनकोयाचहिंनितदेवा।मिलै न सो लाबहिं नित सेवा॥सो नर तन तामैं द्विज जाती।सो तनु पाय बहुरि दिन राती ३४ भज्यो न कृपासिन्धु सुखधामाहिं। खोवै मूढ़ रत्न बिन कामाहिं ॥ निज हित करै न नरतनु पाई। दुख बहु सहै अधोगतिजाई ३५ यह नरदेह मुक्ति कर द्वारा। ताहि पाय कस भूलुगँवारा ॥ जो अनर्त्थतामहँ मन लावा। मूढ़ जन्म तिन व्यर्त्थ गवांवा ३६ देव पि-

तर ऋषि भूत सहाया। पुत्र मित्र गुरु स्वजनरु जाया॥ घर धन होइ तोषि नहिं इनहीं। जाहिं अधोगति बड़ दुख तिनहीं ३७ सो तनु धन में व्यर्थ गँवायों। भव दुख ते नहिं आप बचायों॥ अब जप तप करि अङ्ग सुखाईं। भजों सुहरि पद मन चित लाईं ३८॥

दो० अनुमोदन जो करहिं सुर तौ सम कारज होइ॥
यद्यपिमैंअतिवृद्ध हौं हरिपद दूर न कोइ ३९

चौ० नृप खट्वाङ्ग घरी द्वै माहीं। प्रभुपदगयो न जहँ जग जाहीं॥ प्रभुसम को कृपालु जग आही। जन को प्रकट होत पलमाही ४० मन वच काय भजों अब ताही। दीनबन्धु श्रुति कह नित जाही॥ निश्चय करि ममता तजि भूरी। भिक्षुक भयो बुद्धि अब रूरी ४१ क्षिति विचरै मन गहि एकाकी। इन्द्रिय युत निग्रह अति जाकी॥ भिक्षा हेतु जाय सब ठामा। फिरै अल-क्षित पुर गृह ग्रामा ४२ भिक्षुक विप्र वृद्धको जानी। दुष्टन तिरस्कार बहु ठानी॥ कोऊ दण्ड छीन ले तासू। कहि दुर्व्वचन देय कोउ त्रासू ४३ पात्र कमण्डलु कोउ ले छीनी। मारग रोंकि गारि बहु दीनी॥ कोउ कन्था को करि परिहारू। हरहिं चीर कोउ बिनहिं विचारू ४४॥

हरिगीतिका॥

कोउ देत गारि पुकारिबहु विधि कहहिं मंद अचेत है।
कोउ देत बासन बसन फेरि सुलेत बहु दुख देत है॥
कोउ भजत भिक्षा अशनलै तिहि मांझ कोउ थूकेघनो।
कोउ मूति शिरपर धूरि डारैं तरजि बांधि पशू मनो ४५

दो० कहहिं मूढ़ तें बोलुरे जब वह मौनी होइ॥

नहिं बोलै तौ ताहिसब मारहिं नर पशुसोइ ४६
सो०एक तर्ज्जि कहि ताहि चोर चोर यह मन्द है॥
कोउ डारैं पुनि वाहि एक कहैं यह शठ महा ४७
चौ० भयो सकल धनहीन अभागा। तब ग्रहि शठ कहँ भयो विरागा॥ सकल कुटुम्ब त्यागि यहि दीना। उदर निमित्त वेष धरि लीना ४८ देखौ यह कैसो है मोटो। महाप्रबल अन्तरको खोटो॥ देखौ हम पचिसगरे हारे। यहि के मन न भयो दुख भारे ४६ धीरजवन्त अचल यह कैसो। पवन प्रचण्ड मेरु गिरि जैसो॥ भौतिकादि दुख भाषे जैसे। तिन बहु भांति रहैं सब्र तैसे ५० वर्षा शीत उष्ण दुख जेते। ये दैविक दुख जानहुँ तेते॥ ज्वर अरु ताप उदर बहुरोगा। शिर अरु व्रण बहु दैहिक शोगा ५१ ऐसे बहुविधि दुख तिन पावा। सुख नहिं कबहूँ तिहि ढिग आवा॥ पर तिन कछू न मन में आने। अपने करे कर्म्म तिन माने ५२ तब तिन भाषी गाथा नीकी। पावन परम सुखद सब जीकी॥ सुख दुख देनहारको मोही। यह नर आप आपनो द्रोही ५३ नहिं दुख देनहार ये लोगा। नहिंयह देहन ग्रहसंयोगा॥ नहिं सुर कर्म्म नहीं कोउ काला। ये सुख दुख सब मन जञ्जाला ५४ जगतचक्र में मन लै डारै। दुख सुख मन पुनि आप विचारै॥ मन सब्र करै विषय नित भोगा। ताहित होइ कर्म्म संयोगा ५५ पुनि सत रज तम बहु विस्तारा। ताते योनि विविध परकारा॥ देह योग ते बहु दुख होई। मन बिन तन दुख देहन कोई ५६ दुख-दायकयह मननिरधारा। कहैंसन्तश्रुति विविध प्रकारा॥

मनकेहारेहारहिंलोका। मनहीसोंजनहोहिंविशोका ५७
दो० अव्यय अविकारी सदा ईहा रहित प्रकास॥
विद्यायुतयहआतमा मनकरिभवदुखत्रास ५८
चौ० मन सों बँध्यो अविद्या माहीं। निज बन्धन सुधि अहै न ताहीं॥ विषया विष सम लखै न सोई। खाय सुधासम पुनि दुख होई ५९ ब्रह्म सखा यह जीव कहावै। मनके सङ्ग घनो दुख पावै॥ मन विषय कर जब परिहारू। तबहिं शुद्ध है ब्रह्म विचारू ६० निज अपनो मन वश करि लीना। नहिं करनो कछु ताहि प्रवीना॥ जिन अपनो मन वश नहिं कीना। तिन करि कर्म्म कहा फल लीना ६१ षोड़श महा दान जो देई। एकादशी कोटिकरि लेई॥ अरु निज धर्म्म करै बहु भांती। यम अरु नियम करै दिन राती ६२ श्रुति पुराण बहु भांति निरूपा। औरो सकल धर्म्म अनुरूपा॥ किये सकल साधनयुतनेमा। मनवश विना वृथा सबप्रेमा६३ मनवशकरणहेतुसबवेदा। साधनविविधकहैं तजिखेदा॥ मननिग्रहते सबफलदाई॥बिनमननिग्रहसकलनशाई ६४
दो० मनवशभयो सुजाहिको विधिकछु ताकोनाहिं॥
जाकोमनवशहै नहींविधिसबहीवहिताहिं ६५

क्षेमकरण कवि॥

भोजन प्रकार वर्णन॥

नरिन्द छन्द॥

भै ज्यवनार तयार तरहते रघुवर करत बिआरी। अनुज समेत मनुजपति मन्दिर सुर नर मुनि मनहारी॥ बैठिवरासन आसन पासन बासन की अधिकारी। गेडुआ थार

कटोर कटोरी पञ्चपात्र अरुझारी १ तिनमहँ भोजन वस्तुप्रकाशित शीतल सरयूवारी। मुरवा मेव मिठाइविविधविधि व्यञ्जन अरु तरकारी॥ पूरी पापर पुआ कचौरी फुलका भांति सँवारी । खीर महीर दूध दधि सुन्दर नूतनघृतहितकारी २बराविरञ्जबरीबरियांबहुमुँगुछमसरँगीपारी। अँबवाआँबिलियापनवाँभँटवापहितीपरमपियारी।खरिकाखँडररसाजैरैतुआछिमियाँकीछलकारी॥परवर पनस तरोइ करैला बन्तक सेमि सँवारी ३ मेथी मरस चना चौराई सोवा सर्षप भारी । पालक पोय बयरँबुआ कुलफा बथुआआदि सँभारी॥फल औ फूल मूल पत्रनके सालन विविध प्रकारी । अमित अँचार भांतिभांतिन के चटनी की चटकारी ४ सिरका शक्कर कन्ददई पुनि मिसिरी चूरण चारी। खाजा खुरमा पेर पिराकैं माठमठुलियाँ न्यारी ॥ गुनी ग्यँदौरा ल्यडुआ बरफीबुँदियाँ बहुत करारी। पाक प्रकार कवनि विधि वरणौं जहँसिय सिज्जंन हारी ५ जेंवत आप ज्यँवावत भाइन कहि२ स्वादु प्रचारी। तनिक अवर जेंवहु मोरे लालन कहि परसत महतारी॥ यहि विधि जेंइयतनते अँचइनिपगु पलँगा पर धारी। लवँग कपूर जायफल जात्री एलाफालसुपारी ६ पान पाय परिपूर मसालन उचित २ अनुसारी। पाँय पलोटत भरत भरत सुख लक्ष्मण पवन सँचारी॥ पीकदान रिपुदमन लिये कर सीता पान प्यटारी । दासी दास अनेक त्यहूँ पर सेवतहैं ये चारी ७ यामिनिगत युग याम जानि प्रभु नयन उनींद निहारी। प्रभु अनुशासन पाय बन्धु सब निज २ शयन सिधारी॥ अज

अद्वैत भक्तहित तनुधरि दशरथ सदन बिहारी। क्षेमकरण सिय रामस्वामिकी बार २ बलिहारी ८ ॥

सीतारामदास ॥

रामनवमी की प्रशंसा ॥

सो० शेषन पावहिं पार राम जन्म उत्सव महा ॥
आई करन जुहार मुदमङ्गल तिहुँ लोककी ॥ १
हरणपाप दुखजाल मुक्तिदानि सरयूनदी ॥
कियोभक्तकोमाल सेवक सीतारामतहँ ॥ २

चरणदासकवि ॥

स्वरोदय ज्ञान वर्णन ॥

दो० चारि वेद को भेद है गीता को है जीव ॥
चरण दास लखु आपमें तौ में तेरा पीव ॥ १
सबयोगन को योगहै सर्व्व ज्ञानको ज्ञान ॥
सर्व्व सिद्धिकीसिद्धिहैतत्त्वस्वरनको ध्यान ॥ २
ब्रह्म ज्ञान की जापहै अजपा सोहं साध ॥
परम हंसकै जानिहैं जाको मतो अगाध ॥ ३
भेदस्वरोदय सोलहै समुझैश्वासउश्वास ॥
बुरी भली तामें लखै जो न सुरतिपरकाश ॥ ४
शुक्राचार्य्यगुरुकृपाकरिदियोस्वरोदयज्ञान॥
तबसों यहजानी परी लाभ होयकीहान ॥ ५
इँगला पिंगला सुषुमना नाड़ी तीनिविचार॥
दहिने बायें स्वर लखै लखै धारणा धार ॥ ६
पिंगला दहिने अङ्गहै इँगल सुबायें होइ ॥
सुषुमन बीचोबीचहै जबचालै स्वरदोइ ॥ ७

भिषारीदासकवि ॥

छन्द सङ्ख्या का वर्णन ॥

दो० द्वै कलके द्वै भेद हैं जानौ श्रीमधुछन्द ॥
महीसारु अरुकमल ये तीनित्रिकलकेबन्द ॥ १
चारि मत्त प्रस्तार में पांच वृत्ति निरधारि ॥
कामारमणिनरेन्द्रअरुमन्दरहरिहिविचारि ॥ २
सो० पंचमत्त प्रस्तार आठ भेद युत हरि प्रिया ॥
तरुणचारुपञ्चार वीरबुद्धिनिशियमकशशि ॥ ३
दो० तालीरमानगानिका जानिकलाकरताहि ॥
मुद्राधारी वाक्य अरु कृष्ण नायको चाहि ॥ ४
हरअरुविष्णुमदनगनोअधिकोहोतनिमित्त ॥
षटकल तेरह भेदके प्रकट तेरहौ वृत्त ॥ ५
सातमात्र प्रस्तार को शुभ गतिजानो छन्द ॥
वृत्त यकीस प्रकार हैं चारि भाँति गतिबन्द ॥ ६
आठमत्त प्रस्तार में तिन्नादिक उनमानि ॥
सहितहंसमधुभारगति चौंतिसवृत्तबखानि ॥ ७
नवमात्राकीअमितगतिपचपनवृत्तविचारि ॥
कर्णयगनहारी गनौ तसबसुमती निहारि ॥ ८
दश मात्रा के छन्दमें वृत्ति नवासी होय ॥
सम्मोहादिक गतिनसँग वर्णतहैंसबकोय ॥ ९
ग्यारह कलमें एकसै चौवालिस गतिवृत्ति ॥
तहँअहीरलीलाअपर हन्तमालगनिमित्ति ॥ १०
बारहमात्राछन्दगतिबरण्योअमितफणीश ॥
होत किये प्रस्तार के वृत्त दुसै तैंतीस ॥ ११
मराचिकादिक तेरहै कलकी गति गनिलेहु ॥

वृत्ति बूझिकै तीनिसै सतहत्तरिं कहिदेहु ॥१२
चौदहमात्राछन्दगति शिष्यादिकअवरेखि ॥
भेद छसै दश होतहैं प्रस्तारो करि देखि ॥१३
पन्द्रह मात्रा छन्दगति आदि चौपई जानि ॥
नवसै सत्तासी कहत वृत्तभेद उनमानि ॥१४
सोरह मात्रा छन्द गति रूप चौपई लेखि ॥
पन्द्रह से सत्तानवे जानौ भेद विशेखि ॥१५
सत्रह मात्रा छन्द में धारी त्रिजयोनीक ॥
बाला तिरग पचीस सै चौरासी हैं ठीक ॥१६
प्रकट अठारह मत्त को रूपामाली होइ ॥
वृत्तिसुइकतालीस सै इक्यासी जियजोइ ॥१७
उत्तम उनइस मत्त मैं रति लेखादि विचारि ॥
सतसाठिसै पैंसठि कहत वृत्तिभेदनिरधारि ॥१८
होत हंस गति आदि दे छन्द निमित्ती बीस ॥
दश हजार नवसै उपर गनौ भेदछयालीस ॥१९
पवङ्गादि इक्कईस में कीजे छन्द विचार ॥
सत्रह सहसरु सात सै इग्यारहप्रस्तार ॥२०
मालती मालादि दे छन्द बाइसै मत्त ॥
भेद अठाइस सहस पर छसै सतावन तत्त ॥२१
हीरक दृढ़ पद आदि दै तेइस मत्त अनंत ॥
छ्यालिससहसरु तीनिसैअठसठभेदकहंत ॥२२
लीलादिकअहिपतिकह्यो छन्दमत्तचौबीस ॥
दश पचहत्तर सहस पर जानौवृत्तिपचीस ॥२३
गगनाङ्गादि पचीस कल भेद होतहैं लाख ॥
इकइस सहसरु तीनिसै तिरानबे पुनिभाष ॥२४

छब्बिस कलमें चंचरीआठ लाख गनिलेहु ॥
सहस छानबे चारिसै अट्ठारह कहिदेहु ॥२५
हरिपद आदि सताइसे जानै छंद अनेक ॥
तीनि लाख सत्रह सहस आठैसै दशटेक ॥२६
अट्ठाइस में गीतिका आदिक कह्यो फणीस ॥
पांच लाख चौदह सहस द्वैसे पर उनतीस ॥२७
उनतिस मात्रा भेद में मरहट्ठादिक देखि ॥
आठलाखबत्तिससहसचालिसभेदविशेखि ॥२८
तीसमत्त में सारँगी चतुरपदोचौबोल ॥
तेरह लखछ्यालिससहस छुसैबहत्तरिडोल ॥२९
यकतिस मात्रा भेदमें छन्द सवैया जोहि ॥
एकलाख अठहत्तर सहस तीनसै नोहि ॥३०
रूप सवैया बत्तिसे कला लाखपैंतीस ॥
चौबिससहसरुपाँचसैअठहत्तरिविधिदीस ॥३१
इमि द्वैते बत्तीस लगि वृत्ति बनावे लाख ॥
सत्ताइस हज्जार पर चौसै बासठिभाष ॥३२

अथ वर्ण वृत्तानि ॥

स० ॥ एकवर्णको उक्ता प्रकरण तासु भेदद्वैकीजैपाठ। द्वै अत्युक्ताभेदचारिहैं मध्यातीनिभेदहैं आठ ॥ चारिप्रतिष्ठा सोरहविधि पाँचैसुप्रतिष्ठाभेदबतीस । षटगायत्रीचौंसठि सातै उष्णिक सापैअट्ठाइस ३३ आठै वर्ण अनुष्टुप द्वैसैछप्पनभेदकहतफणिराउ । नव अक्षरकोबृहतीप्रकरण भेद पाँचसै बारह ठाउ ॥ दशै वर्ण को पंक्ति प्रकरण भै दस सहस ऊपर चौबीस। ग्यारहकोत्रिष्टुप प्रकरणगनि द्वैहजारअरु अठतालीस३४ बारहकोजगती प्रकरणत्य-

हि भेद हजारचारिछानवे। तेरह अक्षरको अति जगती इक्यासी शतपैबानवे॥ चौदहकीशक्करीसोरहसहस ती निसै चौरासीय। पन्द्रहअति शक्करीसहस बत्तीस सात सैअठसठकीय ३५ सोरहअष्टसहसपैंसठि शत पांचछ-तीसाधिकलैधरी। सत्रहको अत्यष्टलाखपरयकतिसस-हस बहत्तरि करी॥ अट्ठारहधृतिछब्बिस यतुइकीस सेऊ पर चौवालीस। बावनअयुत बयालिससै अष्टासी विधि अतिधृति उनईस ३६ बीस वर्णको कृतिप्रकरणहै तासु भेद गनिलेदशलाखु। अठतालीस सहस्र पांचसै और छहत्तरि ऊपर राखु। इकइस वर्णप्रकृति प्रकरणहै बीस लाखपहिलेसुनुमित्त। सत्तानवेसहस्र एकसै बावन ऊप-र दीजै चित्त ३७ छंदहोइ बाईसवर्णको अतिकृतिप्रक-रण जानिअखेद। यकतालीसलाखचौरानवे सहसतीनि सैचारैभेद॥छंदकहावे विकृतिप्रकरणतेइसवर्णहोहिंजि-हिमाह। लाखतिरासीसहस्रअठासी छासैआठगनैअहि नाह ३८ संस्कृतिं नामवर्ण चौबिसको तासु भेदहैं एक करोरिसतसठिलाख हजारसत्तरिद्वैसैऊपरसोरहजोरि॥ अतिकृतिप्रकरण वर्ण पचीसै तीनकरोरिलाख पैंतीस। चौवन सहस चारिसै बत्तिस भेद विचारि कहत फणि ईश ३९ उत्कृति होत वर्ण छब्बिसको भेद छकोटि इ-खत्तरि लक्ष। आठहजार आठसै चौंसठि क्रमते द्विगुण बढ़ै प्रत्यक्ष॥ तेरह क्रोरि बयालिस लक्षो सत्रह सहस सातसै होइ। छब्बिस अधिक जोरि सब भेदन ठीक-दियो चाह जो कोइ ४०॥

रामनाथ प्रधान कवि॥

घोड़ेकी प्रशंसा॥

दोवैछन्द॥ जगबन्दन जिहिनाम जाहिरो रघुनंदन को बाजी। ताको गुण छविकहँलगु वर्णों जोहि होतमन राजी॥ भूषित भूषणअङ्गअदूषण पूषण हयलखिलाजैं। चोटिन तनियाँ गुथी सुमनियां पगु पैजनियाँ बाजैं १ जटित जवाहिर जीनजरी की जरबीली अतिसोहै। पूँजी पटाकी छटाकहै को कामलटा मनमोहै॥ जेरबन्द मन फन्द बसनको तङ्गसुरङ्ग सुहावै। जरकसि पेटी लसी लपेटी भुकिझालरि छविछावै २ ललित लगामदाम बहुकेरी अङ्कित नाम विराजै। सुछवि उमङ्गी भुकीत्रिभङ्गी माणिन कलङ्गी छाजै॥ जितरुखपावै तितपहुँचावै क्षण आवै क्षण जावै। जमि२थमि२ थरकि पुहुमिपर गतिनाति तिन दरशावै ३ चलतचमाकै इतउत ताकै विविध कलाकै भावै। जनुनभ नाकै करत उजाकै रामरजाय न पावै॥ खीनी कटिपीनी खुरथालैं बँधी नवीनी नालैं। लेत उतालैं सिंहउछालैं करत समुद यक फालैं४ जब उड़ि टापैं धरत धरापैं रवि बाजिन उरकापैं। जलपै थलपै अनिलअनलपै जात न कबहुं डरापैं॥ धावत पवन न पावत पीछू गरुड़हु गर्व्व गँवावै। रघुनायक को बाजिलड़ैतो अनुपम कला देखावै ५ नामसमुद मुद देत जननको जापर भरत बिराजैं। श्री रघुनन्दन की दहिनी दिशि चलत चपल गति साजैं॥ रोंकत बागैं अतिरिसरागैं गर्व्वित भुरकन लागैं। झमकि झमाकी लै गति बांकी दै झांकी सुख पागैं ६ कहुँ-

नभ जावै सुरन छकावै कहुँ महि खोदमचावै । अव-
नी ते औ आसमानलौं जनु सोपान लगावै ॥ फाँदत
चञ्चल चारु चौकड़ी चपलाहू चषझाँपै। भरत कुँवर
को तुरँगरँगीलो वर्णिजाय कहुकापै ७ चम्पानामचाल
चटकीला जिहिपर रिपुहनभाये । सबसमाज के आगे
निरतै मोर कुरङ्ग लजाये ॥ जोकहुँनेकहुँ हाथ उठावत
कई हाथ उड़िजाता। बार बार चुचुकार दुलारत ताहूपै
न जुड़ाता ८ जबगहि तालै झमकत हालै गानि २ धरत
सुफालै। तकित्यहि चालैसुरमुनिजालै चितवत चकित
बिहालै॥ गजन मध्य घुसिपरत डरतनहिं जरतबरत पगु
धारै । रिपुसूदनको बाजिबाँकुरो कोटिनकला पसारै ९
लाखीघोड़ा लषनलालको बाँको निपटचलाको। उड़ि२
जाय बायुमण्डलको परत न महि पगुताको॥ क्षणक्षिति
पर क्षणआसमानपर क्षणछविकीछविछावै । क्षणमहँछ
म२नाचिनई गति सिगरे जनन छकावै १० तरफरायउ
ड़िजायपरतहै लक्ष्मीनिधिहयपाहीं। उचित विचारिहँसैं
रघुवंशीरामहुँमृदुमुसुकाहीं ॥ मेघघटापैमारिसुटापैबिच-
रेविबुधअँटापै। केश जटापै बाजिनढाँपै जनुरतिमण्डल
नापै ११ तोप तुपक छूटै जहँ जूटे तहँ जाय सोटूटै।
रण रस छूटै बैरिनकूटै बीरनमें यशलूटै ॥ हूतकरत पु-
रुहूत डरतजिय महाबूतबलजाके। जकिसेरहे जनकपु-
रवासी जोहिजोरजबताके १२ चिक्कन चोटी सुभगसको
टी मोटीकटि छविपावै। रेशमतारन जालसमारन बारन
ऊपरधावै॥फुलझरियासी झरतधरत डग करतअनेकत
मासो।ठुरकनिमुरकनिथरकनितरकनिवर्णिजायकहुका-

सो १३ ताकितुरगकी चञ्चलताई लषनकि देखिचढ़ाई। निमिवंशी रघुवंशी सिगरे ठगिसे रहेत्रिकाई॥ रामआदि जे कुँवर लाड़िले ते लखिभरे उछाहैं॥ रीझिरीझि तहँ लषण लालको बारहि बार सराहैं १४ इमिमगहोत विलास विविधविधिविपुलबाजनेबाजैं। सुनत न कोउ पुकार नगर तिय कढ़ि बैठीं दरवाजैं॥ कोउतियनिरखिब दनकी सुखमा अतिसुअमा सों पागी। भरी सनेह देह सुधिभूली रामरूप अनुरागी १५॥

क्षेमकरण कवि॥

हाथी की प्रशंसा॥

घनाक्षरी। मद्रभद्र मृगगिरि जातिजाति भाँतिभाँति उनमत्त सदामद मदके पनारे हैं। झोंकदार नोकदार दारक दरदहूके समैपाय समैपाय सङ्गर बिदारे हैं॥ क्षेमकरमहराज कोशलेश के करीश गुण के अगारे शोभा सकल सँभारेहैं। दंत उजियारे ओरे ओरिनके फन्द फारे देश देश के नरेश देखि हियहारे हैं १ आईहै बरात कोशलेश की विदेह पुर बसती के बालक तुरन्त उठि धाये हैं। देखि आये साजकी समाजकी बिभूति भूति सेना चतुरङ्ग रङ्ग रङ्गसे सोहाये हैं॥ पूछैं पितु मातु आयोभूप कुँवर काहे पै क्षेमकर सोई बात बंदिकै बताये हैं। मातेमतङ्गजमहि दारिददबाय जात वापैदशरथ के दुलारे चढ़िआये हैं २ हरित मणि हीरा औ पद्मराग-हाटक के हौदन में कोरि कोरि कुसुम बनाये हैं। तैसही विचित्र जीव बिरचे सजीव मानो ताकेबीच बीचन सुभाव छवि छाये हैं॥ झूलझाँपे झल झलात झालरि-

औ भब्बों ते मुक्ता नेकतूल समतूलसे सजायेहैं । क्षेमङ्कर घण्टनके राव सुने रावहोत राव दशरथके दँतारे द्विप आयेहैं ३ दंत द्युति देखतही दारिद दबाय जात दानीहोत दान देखि दीनता दुरायेहैं । फाल फैलावतफ़की रिनि फिकिरि होत तुण्डकी समेतशोच शत्रुनपठाये हैं ॥ क्षेमकर छोहसे भरे छबीलेछोटे छके क्षोणीपति महाराज कोशलेश लायेहैं । कुंजर करारी भारी घटासे अमारीदार मानौं पाद चारी धरा धारी धरि आये हैं ४ झूमतझबाऊ झाल झटकैं जँजीर जाल मत्तमदबहतबनै सबैसबीलसे । चिक्करैं सगरद उड़ाय शुण्ड मुण्ड पर फटकतश्रवण उड़ाय भृंग हीलसे ॥ क्षेमकर अमरईश दन्ती दुराय देत धसकतधरणिधरतपावँढीलसे । ऐसेअवधेशकेअसील पीलखाने पीलपेखत अपर पील लागतपिपीलसे५ ॥

महाराजमानसिंहकवि ॥

वसन्तऋतुवर्णन ॥

स० सोधे समीरन को शिरदार मलिन्दनको मनसा फलदायक । किंशुक जालन को कलपद्रुम मानिनी बालनहूंको मनायक॥कन्तअनन्त अनन्तकलीनको दीनन के मनको सुखदायक । साँचो मनोभव राजकोसाज सों आवत आजु इतै ऋतुनायक १ वायु बहारि बहारि रहैं क्षिति बीथी सुगंधन जाती सिंचाई । त्यों मधुमाते मलिंद सबै जायके करखान रहे कलुगाई॥ मंगलपाठ पढैं द्विजदेव सबै विधि सों सुखमा उपजाई । साजि रहे सब साज घने वन में ऋतुराज की जानि अवाई २ ॥

घनाक्षरी चहकि चकोर उठे शोरकरिभौंरउठे बोलिठौर

ठौर उठे कोकिल सुहावने। खिलि उठीं एकै बार कलिका अपार हिलि हिलि उठे मारुत सुगन्ध सरसावने ॥ पलक न लागी अनुरागी इननैननपै लपटि गये धों कबै तरु मन भावने। उमँगि अनन्द आंसुवानलों चहूँघा लागे फूलि फूलि सुमन मलिन्द बरसावने ३ होन लगे शोर चहूँ ओर प्रति कुंजन में त्योंहीं पुञ्जपुञ्जन परागनभ छायगो। फूल फल साजनको आयसु विपिन माहिं शीतल सुगन्ध मन्द पौन पहुँचायगो ॥ द्विजदेव भूलभूले फिरत मलिन्दन की सुखमा विलोकि हिये सुखसरसायगो। आये हुते आगे ते हरौलन के लोग इत आवत हमारे उत ऋतुपति आयगो ४ ॥

क्षेमकरण कवि ॥

फूलेकचनार सहकार औ अपार वन शीतल सुगन्धमंद मारुत कँपायोरी। चंदनके गार और सुमन सुगंध सार हार मुकुतान के वितान तन तायोरी॥क्षेमकरण चञ्चरीक गूँजैं औरकूँजैं पिकआछे सेज अशन बसन्त मोंनभायोरी। आयो मधुमास मोहिं करै उपहास मधु मधुपुरमेंमाधव बसंत हूँ न आयोरी १ पल्लव पील पालकी नगारे कूक कोयलकी सुमन सिपाही सैन्य साजिकै सिधायोहै। मधुवन नकीब बोलै बोलै वायु चोपदार तोपदार तरुवर तयारीकरितायोहै ॥क्षेमकरणचांदनीचमकी चावदेतो है लेतोहै अँकोर नाहिं हरवल शशिआयोहै। बैरीयावसंतवरजोरीब्रजराजबिन मदन महीपमतमारैउठिधायोहै २

अयोध्याप्रसाद कवि ॥

सेवती निवार सेत हीरन के हार जूही यूथ और

अनार मोती बिद्रुम लसन्त भो। पन्ना पुखराज पत्र चम्पक समाज फाव माणिक गुलाबनील इंदीवर गन्त भो॥ माधवी न सूनो गऊमेद कल सूनो दूनो औध बाटिका बजार पूनो बिलसन्त भो। यतन जलूस जोर रतन रसाल रङ्ग अतन अनंद हेत जौहरी बसंत भो १ खाती हरषाती रस जाती मदमाती हिय कातीसी लगाती टेर बिरही बिघाती की। जाती लै किराती मन आती न दयाती न चुपाती ताल गाती न पिराती उतपाती की॥ पाती केहू भाँती तौ बिसाती जो पोसाती औ घराती सियराती जो व्यथाती ताती छाती की। न्हाती स्रुत जाती मैं नोचाती रोमपाती काढ़ि बाती लै जलाती जीभ कैलिया कुजाती की २॥

शिवप्रसन्नकवि॥

ग्रीष्मऋतुवर्णन॥

धौरहर धौल धूप धामहू धँसै न जामैं चहुँघा दुआर के सुगंध सारशालासे। मणि दीप माला मणि भषण बलित बाला खासे परयङ्क बासे सुमननिमालासे॥ व्यंजन उशीर नीर मलयज समोये छै पर्शत समीर है सरस शीत कालासे। जिनहेतु बिरचे बिरञ्चि हैं मसालाऐसे व्यथित न होत ते निदाघ जात ज्वाला से १॥

अयोध्याप्रसाद कवि॥

वर्षाऋतु वर्णन॥

वाटिकाबिहङ्गन पै बारिगातरङ्गनपै वायु वेग गङ्गनपै बसुधा बगार है। बांकी बेनु तानन पै बँगले बितानन पै बेस औध पाननपै बीथिन बजार है॥ बृंदावन बेलिन पै

बनिता नवेलिन पै ब्रजचंद केलिनपै बंशीबट मा रहै। वारिके कनाकन पै बद्दल बांकन पै बिज्जुली बलाकनपै बरषा बहार है १ हरषे हरौल कै अमरसै अनङ्ग हेत करषे कलापी चोपि चातक चमूपिली। उमड़ेघटाहैंमानि करने छटाहैं छटा फेरत पटाहैं ठटाशूरकी हटा किली॥ घेरिकै अड़ेहैं बिन बूंदनलड़े हैं औध आनँद खड़ेहैं देखि दादुर बड़े दिली। कादर वियोगीहारिचादरिबलाकफेरि बादरबहादुरकोनादिरफतेमिली २॥

महेशदत्त॥

एरी ऋतु पावस में मोरघोर रोर करैं ठौर ठौर मण्डुक कठोरशोर वैरह्यो। देखिकै बकालीरी कपालीअरिजाली हाली आली वनमाली बिन काली मोहिं कैरह्यो॥ दामिनी दमङ्कबीचयामिनी बिलोकि नित कामिनी सकात बात मुखपैनधैरह्यो। झिली झनकारैं मेघ बारि धारझारैं पिक कोकिल पुकारैं यों महेशदत्त कैरह्यो १

श्रीपतिकवि॥

जलभरे झूमैं मानौं भूमैंपरशतआय दशहूँदिशान घूमैं दामिनी लये लये। धूरधार धूसरित धूमसे धुधारे कारे धारे धुरवानधावैं छविसों छयेछये॥ श्रीपति सुकवि कहैघरीघरी घहरात तावत अतन तनतापसों तयेतये। लालबिन कैसे लाज चादर रहेगी अब कादर करतमोहिं बादर नये नये १॥

पद्माकरकवि॥

मल्लिकान मञ्जुल मलिन्द मतवारे मिलै मन्द मन्द मारुत मुहीम मनसाकी है। कहै पदमाकर सुनादतन-

दीन नित नागरि नवेलिनि की नजरि निशाकी है ॥ दौरत दौरे देत दादुर सुदुदें दीह दामिनी दमंकनि दिशनि में दिशाकीहैं । बद्दलनि बुंदनि विलोक्यो बगुलानिबाग बँगलन बेलिनि बहार बरसाकी है १ ॥

श्रीपति कवि ॥

शरदऋतुवर्णन ॥

फूले आस पास काश विमल अकाश भयो रही न निशानी कहूँ महिमें गरदकी । गुञ्जत कमल दल ऊपर मधुप मैन छापसी दिखाई आनि विरह फरद की ॥ श्रीपति रसिकलाल आली वनमाली बिन कछू न उपाय मेरे दिलके दरदकी । हरद समान तन जरद भयो है अब गरद करत मोहिं चाँदनी शरदकी १ ॥

पद्माकर ॥

हिमऋतुवर्णन ॥

अगर की धूप मृगमद को सुगन्ध वर वसन विशाल जाल अंग ढाँकियतु हैं । कहैं पदमाकर सुपौन को न गौन जहां ऐसे भौन उमँगि उमंगि छाकियतु हैं ॥ भोग औ सँयोगहित सुरत हिमन्तही में येते सब सुखद सुहाये बाकियतुहैं । तानकी तरंग तरुणापन तरणि तेज तेल तूल तरुणि तमूल ताकियतुहैं १ ॥

पद्माकरकवि ॥

शिशिरऋतुवर्णन ॥

गुलगुली गिलमैं गलीचा हैं गुनीजन हैं चिकैं हैं चिराकै हैं चिरागन की माला हैं । कहै पदमाकर हैं गजक गिजाहू सजी शय्या हैं सुराहै हैं सुराही हैं सुप्या-

ला हैं॥ शिशिर के पाला को न व्यापै कसाला तिन्हें जिनके अधीन येते उदित मसाला हैं। तान तुक ताला हैं विनोदके रसालाहैं सुबालाहैं दुशाला हैं विशाला चित्रशालाहैं १॥

केशवदासजी॥

श्रीरामचन्द्र और परशुरामका मिलन॥

दो०विश्वामित्रबिदाभये जनक फिरे पहुँचाय॥
मिलेआगिलीफौजको परशुरामअकुलाय १॥

चंचरी। मत्त दन्ति अमन्त ह्वै गये देखि २ न गज्जहीं। ठौर २ सुदेश केशव दुन्दुभी नहिं बज्जहीं॥ डारि २ हथ्यार शूर जे जीव लैलै भज्जहीं। काटिके तनु त्राण यक तिन नारि वेष न सज्जहीं २॥

दो०वामदेव ऋषि सों कह्यो परशुराम रण धीर॥
महादेव के धनुष को कहु तोस्यो बलबीर ३॥

परशुराम॥

संयुता। यह कौन को दल देखिये।

वामदेव॥

यह रामसों प्रभु लेखिये॥

परशुराम॥

कहु कौन राम विचारिये।

वामदेव॥

शरताड़का ज्यहि तारिये ४॥

परशुराम॥

त्रिभङ्गी॥

ताड़का सँहारीत्रियनविचारीकौनबड़ाई ताहि हने।

वामदेव ॥

मारीचहु तौ संग प्रबल सकल अंग अरु सुबाहु काहू ने गने ॥ करि क्रतुरखवारी गुरुसुखकारी गौतम की तियशुद्ध करी । जिनरघुकुल मंड्यो हरधनुखंड्यो सीय स्वयम्बरमांझवरी ५ ॥

परशुराम ॥

स० । बोरौं सबै रघुवंश कुठार की धारमें बाणन बादर सत्थहि । बाण की वायु उड़ाय कै लक्षन लक्ष करौं अरिहा समरत्थहि ॥ रामहिं बाम समेत पठै वन कोप के भारमें भूजौं भरत्थहि । जो धनुहाथधरैं रघुनाथ तो आजु अनाथकरौं दशरत्थहि ६ ॥

तोमर । सहभरत लक्ष्मणराम । बहुकिये आनिप्रणाम ॥ भृगुनन्द आशिषदीन । रणहोहु अजय प्रवीन७॥

मदिरा । तोरि शरासन शङ्करको शुभ सीय स्वयम्बर मांझवरी । तातेबढ्यो अभिमान महा मन मेरियो नेकु न शङ्क धरी ॥

रघुनाथ ॥

सो अपराध अगाध पस्यो अब क्यों सुधरै तुमहूं धौं कहौ।

परशुराम ॥

बाहुदै दोऊ कुठारहि केशव आपनेधामको पन्थगहौ८॥

रघुनाथ ॥

कु० टूटै टूटनहार तरु वायुहि दीजै दोष । त्यों अब हरके धनुषको हमसों कीजतरोष ॥ हमसों कीजत रोष कालगतिजानिनजाई । होनहारह्वैरहैमिटै मेटे न मिटाई॥

होनहार ह्वै रहै मोह मद सब का छूटै। होय तिनूका वज्र वज्र तिनुका पै टूटै ६॥

परशुराम॥

विजया। केशवहैहयराजकोमासु हलाहल कौरनखाय लियोरे। तालगि मेदमहीपनकेघृत घोरिदियोनसिरानो हियोरे॥ मेरो कहोकरु कोपकराल जोचाहतहै चिरकाल जियोरे। तौलौनहीं सुख जौलहु तैं रघुवंशकाशोनुसुधान पियोरे १०॥

भरत॥

तन्त्री। बोलतकैसेभृगुपतिसुनिजै सोकहिजैतनबनि आवै। आदिबड़ेहौ बड़पनराखौजातेसबजगसुखपावै॥ चंदनहूं में अतितन घरखै आगि उठै यह गुणसुनि लीजै। हैहयमारे नृपति सँहारे सो यशलै किन युग जीजै ११॥

परशुराम॥

नराच। भलीकही भरत्थते उठाय आंगिअंगते। चढ़ाव चोपि चाप आप बाण लै निषंगते॥ प्रभाव आपनो देखाव बाल भाव छाँड़िकै। रिझाव राजपुत्र सोहिं रामलै छिड़ाइकै १२॥

सो०लियेचाप जब हाथ तीनिहुँ भैयन रोषकै॥
बरज्यो श्रीरघुनाथ तुम बालक जानौकहा १३॥

दो०भगवन्तनसों जीति पै कबहुँ न कीजै शक्ति॥
जीती एकै बात ते कीने केवल भक्ति १४॥

तोमर। सुनु राम शील समुद्र। तव बन्धुजो अति क्षुद्र॥ मम बाड़वानल कोप। अब कियो चाहत लोप १५॥

शत्रुघ्न ॥

दोधक। हौंभृगुनन्द बली जगमाहीं। रामबिदाकरिजै घरजाहीं ॥ हौं तुम सों पुनि युद्धहि माड़ौं। क्षत्रिय वंश को बैर लै छांड़ौं १६ ॥

तोटक। यह बात सुनी भृगुनाथ जबै। कह रामहिं लै घरजाहुअबै ॥ इन पै जग जीवत जो बचिहौं। रण हौं तुमसों फिरकै सचिहौं १७ ॥

स०। भूतल के सब भूपन को मिरि भोजनतौ बहु भाँति कियोई। मोदसों तारक नन्दन मेदपछयावरि पान सिरायो हियोई ॥ षीर षडानन को मद केशव सो पलमें यहि पान लियोई। राम तिहारेही कंठको शोणित पानी को चाहै कुठार पियोई १८ ॥

रघुनाथ ॥

छप्पैछंद। मग्नभये हरधनुष शाखअबतुमकोशालो। वृथाहोइविधिसृष्टि ईशआसनतेचालो ॥ सकललोकसंहरहुशेषशिरतें धरडारो। सप्तसिंधुमिलिजाहुहोय सबही तुमभारो ॥ अति अमल ज्योति नारायणी कहि केशव बुझि जाहुबरु। भृगुनाथसँभारु कुठारमैं कर्योंशरासन युक्तशरु १९ ॥

स्वागता। रामरामजबकोपकर्योजू। लोकलोकभयभूरिभर्योजू ॥ वामदेव तब आपुहि आयो। रामदेव दोऊसमुझायो २० ॥

दो०महादेव को देखिकै दुहू राम सविशेष ॥
कीन्होंपरमप्रणाम उनआशिषदिये अशेष ॥२१

महादेव ॥

चतु०।भृगनन्दनसुनिजैमनमहँगुनिजैरघुनंदननिर्दोषी।
निज ये अविकारी सब सुखकारी सबही विधिसंतोषी ॥
एकै तुम दोऊ और न कोऊ एकैनाम कहायो । आयु-
र्बल खूट्यौ चापजुटूट्यौ मैं तनमन सुखपायो २२ ॥

पद्धटिका ।तुमहौ अमाननहिंबैरनेहु । सबभक्तन कारण
धरतदेहु॥ अबअपनेयोंपहिचानिविप्रासबकरहुआगिलो
कार्य्य क्षिप्र २३ तबनारायणको धनुष जानि । भृगुनाथ
दियो रघुनाथ पानि ॥ तब नारायणको बाणलियो । ऐंच्यो
हँसि देवनमोददियो २४ रघुनाथ कह्यो अबकाहिहनौं ।
त्रैलोक्यकँप्यो भयमानिघनौं ॥ दिग्देव दहे बहु बातब-
हे । भूकम्प भये गिरिराज ढहे २५ ॥

परशु राम ॥

शशिवदना । जग गुरुजान्यो । त्रिभुवन मान्यो ॥
मम गति मारो । समय विचारो ॥२६

दो०विषयीको ज्यों पुष्पशर गतिको हरत अनंग॥
रामदेव त्योंहींकियो भृगुपति की गति भंग ॥२७

मरहट्टा । सुरपुरगतिभानी शासनमानी भृगुपतिकोसुख
मारो । आशिषरसभीने सबबलदीने अबदशकंठहि मा-
रो ॥ अतिअमलभये रविगगनवर्षैछबिदेवनमंगलगाये।
सुरकुलसबहरष्यो पुष्पनबरष्यो दुन्दुभिदीहबजाये२८॥

विजय।तारकातारि सुबाहुसँघारिकैगौतमनारिकेपात-
कटारे । चापहत्यो हँसिकै हरको सब देव अदेवहते सब
हारे॥सीतहि ब्याहिअभीत चले गिरि गर्व्वचढ़े भृगुनन्द

उतारे । श्री गरुड़ध्वज को धनुलै रघुनन्दन औधपुरी पगुधारे २६ ॥

हिमाचलरास ॥

नागलीला ॥

स० । एकसमै प्रभु खेलहिं गेंद गिरो यमुना जल मध्यहि माहीं । कूदि पर्यो हरि ताही के हेतु गयो धँसि पैठि पतालहिजाहीं ॥ बालसखा बहु रोदनकै हियशोच बड़ोगे माहरि पाहीं । कृष्ण तिहारो बुड़ो यमुना विच ढूँढ़िथके हमपावत नाहीं १ हाहाकार भयो व्रजमण्डल नन्दकी रानी न देह सँभारी । शोचके वश्य कहैं अस-बैन बसो मेरो भौन धौं कौन उजारी ॥ लोटहिं के-श परे धरणी हिले बालसखा वहि घाट सिधारी । व्रजनारिन शोच को कौन कहै मनु कृप्पण द्रव्य जुआ बहु हारी २ कृष्ण तलातल कीन प्रवेश नि-वास भुजङ्गम तेज अपारा । जाय समीप जगावतभे तब नागिनि कृष्ण सों बैन उचारा ॥ बालक तू किहि हेतु शरीरहि खोयचले यहँवाँ पगुधारा । नाहक नाग जगावत हौ फुफुकार तिहूँपुर होय उजारा ३ बोलेकृष्ण सुनौ अहिनारिबसै व्रज मैं एक कंस भुआला । माँगत फूल अहीपुर के मोहिं डाटि नरेश ने कीन विहाला ॥ लादिकै फूल चलौं तिहिद्वार वृथा नहिं बैन सुनौ अहि-बाला । काली को तेज सुनावति है मैं कोटिन कालन केर कराला ४ यह जाहि अहार सो वाहन है परिवार समेतसो ताहि खवावों । पतिहीन करों त्वहिंको सुनुनारि औ नाथिकै कालिहि देश पठावों ॥ हाहाकार पताल

परै लै गोकुलमण्डल माहँ नचावों । देहु जगाय नवार करौ मोहिं होय बिलम्ब कहा डरवावो ५ ॥
दो० सातस्वर्ग्ग पातालसोइ काहुन सर्व्वरिकीन ॥
सो बालक बरिआइयाँ अनुचित कहबेलीन ॥ ६
स० । काली उठी रिसिआय तबै अस कौन तिहूँपुर दूसरो मेरो । दृष्टिके सन्मुख जौन परै तिहि भस्म करौं जिहिके तनहेरो ॥ जो कुछ तेजकरौं हियमें क्षण एकमलौं मैं तिहूँपुर पेरो । आयु तुलानिकेही सुनु नागिनि कौन यही पुरकीन बसेरो ७ दृष्टिपरी नँदलालकी ओर तबै विषराशि छोड़ो फुफुकारा । पौन अगाध चलो अति दुस्सह कौनकहै तिहि तेज अपारा ॥ श्याम शरीर भयो अति साँवर कृष्ण विषंग तबै शिर धारा । करजोरि अनेकन थाकि गयो नहिं पाव हिमाचलको पतिटारा ८ चढ़ि मस्तक कृष्ण पयान कियो अहि लोकहि शून्य कियो क्षणमाहीं । पौनके तेज चला सहसानन आयु तुलानि कदम्बकी छाहीं ॥ मुरलीधर वेणु बजावत मे सुनि ग्वालबधू गई माहरिपाहीं । वंशीकीतान परी मेरे कान कहै हिय मोर मनौं हरि आहीं ९ जौंलगि शोचकरै हिय में हरि तौलहि नन्द दुआरहि आये । शोर भयो सब गोकुल में नरनारि कुमारहि देखनधाये ॥ माहरिगोद उठाय लियो मोरे लालतू कालिहि कैसे बँधाये । साजिकै आरति शीश उतारि निहारिकै आनन प्रेम बढ़ाये १० ॥

रङ्गाचार॥

ध्रुव और नारदकी भेंटज्ञान वर्णन॥

दो० वहीकुँवर बनकोगये रोकारुका नआप॥
लगानेह भगवानका रोयमरे माबाप॥ १

चौबोला। रोतेमाबाप रहे बनको वो चला। नारदमुनि आगे उसे पन्थमें मिला॥ रामराम कीनीधुरू नारद मुनि से। नारद मुनिपूछी बात योहीं उनसे २॥

कुं०। रामराम तेरीसही रामराम महराज। अय लड़के इस बनविषे तूआया किसकाज॥ तूआया किसकाज वि-कट जङ्गलमें डोलै। तरहतरह के जीव अरे इस बनमें बोलै॥ तेराहै क्यानाम लाल तू कहदईमोसे। कौनतेराहै पितायोंहिमैं पूछूँतोसे ३ उत्तानपाद मेरा पिता बसै अ-योध्या माहिं। धुरू हमारा नामहै हरिसे मिलने जाहिं॥ हरिसे मिलने जाहिं लगा है ध्यान हमारा। तुम क्यों रोको मुझे कहो क्या काम तुम्हारा॥ आप कौन महा-राज इसीबनहीं में डोलो। तुम्हरा क्याहै नाम भेदहम-हींसे खोलो ४ सभी दिना बनमें रहौं नारदमुनिहै नाम। जा लड़के ह्यां से तुहीं नहीं मिलैंगे राम॥ नहीं मिलैंगे राम देव ह्यां रहतेदाने। प्रेतभूत ह्यां रहैं खोउमत अ-पनीजाने॥ मरजागी तेरि माय रोवैगा बाप तुम्हारा। मतकरु उनको दुखी जाय तू ह्यांसेप्यारा ५ सभीदिना बनमें रहौ तुम ज्ञानी हो आप। किस कारण घरबार है कहु किसके मा बाप॥ कहु किसके मा बाप सभी झूठेहैं नाते। संग किसी के कोइ नहीं हम देखे जाते॥ जहँदे-खे ह्वां राम विना और न हैं कोई। राम विना महाराज

उमर क्यों तुमने खोईद्यह मथुरा की राहहै सुनिले हो तू धूरु। मुझको तू बतलाय दे तेराको है गुरु ॥ तेरा कोहै गुरू दिया जिसने उपदेशा। हरिमिलने का कौन पड़ा तुझको अन्देशा॥ तू फिरनेका नाहिं यही अब हम ने जाना। हमने लीना जान तेने यहि राह रवाना ७ तुम्हीं हमारे हौ गुरू तुम दीजौ उपदेश। तुम्हीं हमारे ईशहौ आनि मिले यहि भेश॥ आनि मिले यहि भेश तुम्हीं हौ गुरू हमारे। दया कीजिये आज मिलै जो दर्श अपारे॥ हे नारदमुनि गुरू शरण अपनी में राखौ। ऐ-सी देहु अशीस वचन हरिपद को भाखौ ८ धुरू तुहीं आनन्द रह मेरी यही अशीस। तीनिलोक के नाथही मिलियो बिश्वाबीस॥ मिलियो बिश्वाबीस तेरीआशाहो पूरी। तेरामन लगिरहा नहीं तुझमे हरिदूरी॥ शारदूल औ सिंहमिलैं तुझको बनहाती। नहिं तुझको डरहोय च-लै तू दिन औ राती॥ धनुर्व्वाण लियेहाथ राम तुझको मिलिजाँगे। तू रहियो चिरजीवि कार्य्य होंगे बिनमाँगे ९ नारदमुनि को करिगुरू धुरूहुये आनन्द। ले अशीस आगे चलेदूरहुये सबफन्द॥ दूरहुये सबफन्द हुये मनमें खुशियाले। जाहैं बनमें चलेसुरति हरिजीमें डाले॥ जब जाना श्रीराम धुरूजी हम पै आया। होय चतुर्भुज रूप रामने दर्श दिखाया॥ पलमें हरि मिलिगये धुरू नयनों सुखपाया। दौरिचरण में गिरा जभी शीतल भइकाया १०॥ प्रियादासकवि॥

भक्तिकीप्रशंसा॥

घनाक्षरी। मेरेतो जनमभूमि भूमिहित नैन लगेअगे

गिरिधारी लाल पिताहीके धाममें । रानीकी सगाईभई करीब्याह सामानई गईमति बूड़ि वा रँगीले घनश्याम में ॥ भाँवरें परत मन साँवरे स्वरूपमाँझ तामेरेसी आवें चलिबे को पतिग्राम में । पूँछैं पितु मातु पट आभरण लीजिये जू लोचन भरत नीर कहा काम दाम में १ देवो गिरिधारीलाल जो निहालकियो चाहो और धनमाल सब राखिये उठाय कै । बैठी अति प्यारी प्रीति रंग चढ्योभारीरोष मिली महतारी कही लीजिये लड़ायकै ॥ डोला पधराई हग हग में लगाई चली सुख न समाई चाई प्राणपति पायकै । पहुँची भवन सासु देवी पै गमन कियो तिया और बरगाँठि जोस्यो कस्यो भायकै २ देवी के पुजाइबे को कियो लै उपाय सासु बरपै पुजाय पुनि बधूपुंजि भाषिये । बोली जू बिकायो माथ लालगिरिधारी हाथ और कौनवै एक वही अभिलाषिये ॥ बढ़त सुहाग याकेपूजे तातेपूजाकरो मतहठ करौ शीशपायँनमें राखिये । कही बार बार तुम यही निरधारजानो वही सुकुमारजापै वारि फेरि नाखिये ३ तब तो खिसानी भई अति जरबरगई गई पतिपास यह बधू नहीं काम की । अबहीं जवाबदियो कियो अपमान मेरो आगे क्यों प्रमानकरै भरै श्वासचामकी ॥ रानासुनि कोपकस्यो धस्यो हिये मारिबोई दई ठौर न्यारी देखि रीझी मति बामकी। लालन लड़ावै गुणगायकै मल्हावै साधु सङ्गही सुहावै जिन्हें लागी चाह श्यामकी ४ आइकै ननन्द कहै गहे किन चेतभाभी साधुनके संगमें कलङ्कलगै भारिये । रानादेशपती लाजै बाप कुलरती जात मानलीजै बात

बेगिसंग निरवारिये। लागेप्राणसाथ सन्त पावत अनंतसुख जाको दुखहोय ताको नीके करिटारिये । सुनिकै कटोराभरि गरल पठायदियो लियोकरि पान रंग चढ्यो योंनिहारिये ५ गरल पठायो सोतौ शीशपै चढ़ायो संग त्यागविषभारी ताकी झारन संभारीहै । रानाने लगायो चर बैठेसाधु ढिगढरि तबहीं खबरिकरि मारौं यह धारीहै॥ राजैं गिरिधारीलाल तिनही सों रङ्गजाल बोलत हंसत ख्याल कानपरी प्यारीहै । जाइकै सुनाईभई अति चपलाई आयो लियेतरवार दै किवार खोलि न्यारीहै ६ जाके सङ्गरङ्ग भीजिकरती प्रसङ्गनाना कहाँ वह नरगयो बेगि दे बताइये । आगेही विराजै कछु तोसों नहीं लाजै अभूँ देखु सुखसाजै आँखि खोलि दरशाइये ॥ भयोई खिसानो राना लिख्यो चित्रभीत मानो उलटि पयानो कियो नेकु मनआइये । देख्योंहूं प्रभाव औ पै भाव मैं न भियोजाय विनहरि कृपाकहौ कैसेकरि पाइये ७ विषयी कुटिल एक वेषधरि साधु लियो कह्यो धों प्रसङ्ग मोसों अंगसंगकीजिये । आज्ञामोकों दईआप लाल गिरिधारी अहो शीशधरि लेई कछु भोजनऊँ कीजिये ॥ सन्तन समाज मैं बिछाय शय्या बोलिलियो शङ्कअब कौनकी निशङ्क रस पीजिये । सेतमुख भयो विषै भाव सब गयो नयो पायँन में जाय मोको भक्तिदान दीजिये ८ रूपकी निकाईभूप अकबर भाईहिये लिये संग तानसेन देखिवे को आयो है । निरखि निहाल भयो छबि गिरिधारी लाल पद सुख जाल एक तबहीं चढ़ायो है ॥ वृन्दावन आई जी गुसाईं जी सों मिलि भिली तियामुख

देखिबेकोपनलै छोड़ायोहै। देखी कुञ्ज कुञ्ज लाल प्यारी सुखपुंजभरीधरीउरमांझआप देशबनगायोहै९ रानाकी मलिन मति देखिबसी द्वारावति रतिगिरिधारी लालनित्यहींलड़ाइये। लायो चटपटी भूप भक्तिको स्वरूपजानि अहिदुख मानि विप्रश्रेणीलै पठाइये॥ वेगिलैके आवो मोकों प्राणदे जियावो अहो गये द्वारधरनौदे विनती सुनाइये। सुनिबिदा होनगई रायरणछोर जीपै छौंड़ो राखौ हीनलीन भईनाहिं पाइये १०॥

मीराकी कविता॥

ईश्वराराधनके विषयमें॥

स० पलकाटौं इननैननकै गिरिधारीविनापल अन्तनिहारैं। जीभ कटै न भजै नंदनन्दन बुद्धिकटै हरिनाम बिसारैं॥ मीराकहै जरिजाहुहियो पदपङ्कज बिनपलअन्त नधारैं। शीशनवै ब्रजराज विना वहि शीशहि काटिकुआँ किनडारैं १॥

दो०रसनकटैं आनहुँरटैं फुटैंआन लखिनैन॥
श्रवण फुटैंते सुनैंबिन श्रीराधा यशवैन २

देवदत्त कवि॥

मीराकी प्रशंसा॥

घनाक्षरी। कोऊकहौ कुलटा कुलीन अकुलीन कहौ कोउकहौ अङ्कन कलङ्किनी कुनारीहौं। कैसे सुरलोक नरलोक परलोकसब्र कीन मैं अलोकलोक लोकनते न्यारीहौं॥ तनजाहु मनजाहु देव गुरुजन जाहु जीभ क्योंन जाहु टेक टरत न टारीहौं। वृन्दावन वारी गिरिधारीके मुकुटपर पीत पटवारेकी मैं मूरति पै वारीहौं १

नाभादासजी॥

भक्तोंकी गणना॥

छप्पै। शङ्करशुक सनकादि कपिल नारद हनुमाना। विष्वकसेन प्रह्लाद बलिरु भीषम जगजाना॥ अर्ज्जुन ध्रुव अंबरीष विभीषण महिमाभारी। अनुराग अक्रूर सदाउद्धवअधिकारी॥ भगवन्त भक्तअवशिष्टकी कीरति कहत सुजान। हरिप्रसाद रसस्वादुके भक्तइतेपरमान २

श्रीमद्भागवतकी प्रशंसा॥

ब्रह्मविष्णु शिव लिङ्ग पद्म स्कंद विस्तारा। वामन मीन वराह अग्नि अरु कूर्म्म उदारा॥ गरुड़ नारदी भविष्य ब्रह्मवैवर्त्त श्रवण शुचि। मार्कंडेय ब्रह्माण्डकथा नाना उपजै रुचि॥ परमधर्म्म श्रीमुख कथित चतुःश्लो की निगमशत। साधन साधि सत्रा पुराण फलरूपी श्री भागवत ३॥

खेमकरणकवि॥

घनाक्षरी। सप्तदश पूरण पुराण मुनि व्यास कह्यो विरच्यो विचित्र इतिहास कथा भारी है। ताहू ते चित्त की सुचिलता न जानि परी ताही समै नारद मुनि आ-श्रम सिधारी है॥ क्षेमकरण देवऋषि दीन्हो बताय सोई जोई मनगोई श्रीभागवत करारीहै। पुनि मुनि वि-स्तारै निस्तारै अनेकै जीव सुनै जासु अक्षरसों अक्षर करि डारी है १॥

चौ० आरति श्रीभागवत कथा की। ज्ञानविराग भक्ति सुपथाकी॥ श्री भगवानकहा स्वमुखहिते। नामभागवत भयहु तबहिते २ श्री नारायण ब्रह्महि दीना। ब्रह्माते

नारद मुनि लीना ॥ नारद दीन व्यास मुनि पावा । सो अति प्रिय सुत शुकहि पढ़ावा ३ भूप परीक्षित शरणहि आये। ताकहँ श्रीशुकदेव सुनाये ॥ श्रीगोकर्ण बन्धुहित बाँचा। प्रेतयोनि तजि भासुर साँचा ४ जो जो कहा सुना अनुमाना । सो सुरपुर चढ़ि चलयउ बिमाना ॥ क्षेम करण भागवत भागवत । कहत सुनत सो सब सुख पावत ५ ॥

दासकवि ॥

तुलसीदासजीकीप्रशंसा॥

तोटक। यहि भाँति कछू दिन बीतिगये। अपने अपने रस रंग रये॥ तुलिया इकयूथपमांभ्फ रहै। हरिदासन को अपमान गहै १ भइ क्षीण आयुः तिन देह तज्यो । पतिनी शुभ जानि पतीहि भज्यो । तब नौ अरुसप्त शृंगार कर्यो । सब त्यागि पती पद ध्यान धर्यो २ निज लोक बिलोकि बिशोक कियो। कुल दोष पवित्रहि शुद्धहियो ॥ इमि द्वारहि सन्दिर से निकसी । लखि जात गुनौ इहि भाय लसी ३ करुणामय के मुख यों निकसो। अहिवात रहै निज गेह बसो॥ सुनि कान असीस संकोच किये । प्रभु मोहिं कसआशिरवाद दिये ४ ॥

पद्धटिका । निज स्वामि संगहौं जरन जात । सह गमन होय दृढ़ कहौं बात ॥ आचरण विभूषित लखि कृपाल । लखि दुखित द्रवै परदुखदयाल ५ भक्तननिन्दा कीगति बिलोकि । द्विजरहित अहित बिधिगतिहि रोकि॥ बहु कुटुम्ब बुलाये वचन कीन्ह । हरिदासनहूं को शपथ दीन्ह ६ ॥

चतुष्पदी। तबमृतकमँगायो निकट धरायो कह्यो विप्र

निज रामकह्यो। सोसुनि अंगिरायो शीश उठायो जनु सोवत निजधाम रह्यो॥ निज दशा जो देखौ अति भय लेखौ उठी चेत ह्वै पाय परो। प्रभुके गुण औगुणहूँअपने जो कियो फिरि जन्म सबै सुमिरो ७॥

बंशीधर॥

रामनाम का माहात्म्य॥

स० जो फल ना कुरुक्षेत्रमें विप्रन काञ्चन को भुव दान दियेते। जो फलयोग औ यज्ञ किये नहिं जो फल धूम हूँ पान कियेते॥ जो फल दामहि दान दिये सब तीरथ हू परिकर्म्म कियेते। जो फल बंशी सो कोटि उपाय से सो फल राम को नाम लियेते १॥

घनाक्षरी। जिन्हें तूमगन तेरेतिन्हैं ताकिदेखोनर नग्नकै निकारि के चढ़ायबे को जीता है। सपने की सम्पदा सुल-भसाथ सबहीके सोईहित लाग्यो हरिनामआनिहीताहै॥ कहै मिश्रबंशी कबहूं न आई मति वैसी जैसी चहूं छहूं ठहराय गावै गीताहै। चैननाहीं परेगो पै तरी ताकैचलौ अब सीताराम जपिले जनमजात बीताहै २॥

जानकीदासकवि॥

इसी विषय में॥

दो०कै बन्दन श्रीरामपद रचै सिंधुबध चित्र॥
दास जानकी दीनको दीजै प्रेम पवित्र १

त्रिपदी। पीतपटा तनश्यामा। कोटिछटा छविधामा॥
मौर किरीट बिराजै। सूरप्रभा लखिलाजै २॥
मागवकक्रीड़ा। ध्याव सदा रामरमा। देवनहीं वाहिसमा॥
सेवत जावेदचहूँ। पावत ना अन्तकहूँ ३॥

मल्लिका । त्यागिकै विकारकार कै विचार वेद सार ॥
सीय कन्त बार बार ध्याव जानकी पवाँर४

बरवा । जपु पवाँर निशि बासर रघुवर नाम ॥
सेवत चरण सरोरुह लहुसुख धाम ५

सो० जो जपि नाम उदार भव सागर सेतै रचै ॥
कै वैकुण्ठ विहार आपु तरै तारै कुलै ६ ॥

मतिराम कवि ॥

श्रीकृष्णचरित्र वर्णन ॥

स० गुच्छन को अवतंस लसै शिखिपक्षन अच्छ किरीट बनायो । पल्लव लाल समेत छरीकर पल्लव सो मतिराम सोहायो ॥ गुञ्जन को करमञ्जुल माल सो कुञ्जनते कढ़ि बाहर आयो । आजको रूप लखै व्रजराज को आँखिन को फल आजुहि पायो १ ॥

रामसिंह कवि ॥

घनाक्षरी । सोहत मुकुट शीश कुण्डल श्रवण सोहै मुरली अधरध्वनि मोहै त्रिभुवनको । लोचन रसाल बङ्क भृकुटी विशालसोहै सोहै बनमाल गरे हरेलेत मनको॥ रूप मनमोहन न चित्तसे बिसारो मन सुन्दर बदन पर कोटि मदनन को । जगत निवास कीजै सुमति प्रकास मेरे उरमें हुलास है विलास वरणनको १ ॥

सूरदासजी ॥

विष्णुपद । यशोदा तेरो भलो हिरदै है माई ॥ कमल नयन माखनकेकारण बांधे उलूखललाई । जोमूरतिजल थलमेंव्यापक निगम न खोजेपाई॥ सोमूरतितेरे आंगन में चुटकीदेय नचाई। जो सम्पदा देवमुनि दुर्लभसपन्यो

देत दिखाई। याहीते तू गर्व भुलानी घरबैठे निधिपाई॥ बारम्बार सलिलभरि लोचन चितवत कुँवर कन्हाई। कहाकरों बलिजाउँ छुड़ाऊँ मोहूं सोंह दिवाई॥ जाकाहू के लरिका रोवत दौरिलेत उरलाई। अब अपने घरके लरिकासों इतीकहा निठुराई॥ सुरपालक असुरन उर शालक त्रिभुवन ताहि डराई। सूरदास स्वामी सबलायक विधिसों कहा बसाई १॥

जानिपायो हौं हरिनीके। चोरिचोरि दधिमाखन मेरो नितप्रति गीधिरहे इहि छीके॥ अब कैसे जैयत अपने बल भाजत दही दूध मेरो पीके। सूरदास प्रभु भले परे फंद देहौं न जान भावते जीके २॥

महरिहो मानो मेरीबात। ढूंढ़िढाँढ़ि सबघरको गोरस लियो तुम्हारेतात। असम्भाव बोलनहीं आई ढीठि गुवालिनिजात॥ चाखत नहीं दूध धौरीको क्योंकरि तेरो खात। अरुहौं कहतलयो छीकेते ग्वाल कन्धधेलात। यह मेरो नहिं इतो अचगरो कहाबनावतबात। अरुहौं और कहत सकुचतहौं कहा दिखाऊँ गात॥ हैं गुणबड़े सूर प्रभुअबह्वाँयेलरिका ह्वैजात ३॥

गिरिजादत्त॥

विरागका वर्णन॥

विष्णुपद। बिनहरि भजन सुजन्म गवाँयो। संसारी मायामें फँसिके माधवमें नहिंचित्त लगायो। पुत्रकलत्र कुटुम्ब निमितनित झूँठीफुरि बहुबात बनायो॥ नारिन महँ परि हरि बिसरायो विषयभोग महँ अतिरुचिलायो। वेश्या नृत्य राग सुनि हितसे भलिविधि निजपरलोक न-

शायो॥ हंस तजे सर कोउ न नेशाने कोउन एकपग जाइ पठायो। जबयमराजसे काजपरे जू तब बहिठाउँ न कछु कहिआयो॥ डारेगये घोररौरवमें कोउ न तबहूं जायबचायो। गिरिजादत्त भजहुश्रीपति नित सब यामेंकछुनाहिं खोटायो १॥

रागधनाश्री। यहजग हाट लखत अतिसुन्दर क्रयविक्रय कहँ सबजन आये। देनलेन जासेभल बनिगे ते सब निज निज धाम सिधाये॥ विविध प्रकार वस्तुजिन लखिकै चोरीकरन को कर लपकाये। तिन्हैं दमनकरि शासन द्रुतधरि बन्दीगृह महँ जाय बँधाये॥ यहि संसार माहिं यहलेखा गिरिजादत्त बानिहिं हरिगाये २॥

रागगुर्ज्जरी। नरतनु पायकै भजहु रमावर॥ जोनहिं चरण शरण माधवके तिनते भलेहैं खर श्वा शूकर। वैपगजनु तरुवरकी शाखा चले न जो हरिदरश के मगपर॥ जो शिरनयो न हरि मन्दिर में इन्यहुंसो मानहुँ वर्तुल पत्थर। श्रीपति भजन वदन ज्यहिनाहीं तिनते सगरी बिलि उत्तमतर॥ जिन श्रवणन हरिकथा न सुनिये तिनते भलेहैं पक्षिन के घर। जो कर प्रभुहित वस्तु न लावै तिनते भलेहैं दण्ड काष्ठकर॥ जिन नयनन नहिं दरश रामके तिनसों झंझरी रूपहैं सुन्दर। गिरिजादत्त मीत मातुपितुसम कोउकाहूको कहुंनहिं दूसर ३॥

सुन्दरकवि॥

सांख्यशास्त्र वर्णन॥

घनाक्षरी। क्षिति जल पावक पवन नभ मिलिकरि शब्द असपर्श रस रूप और गन्ध जू। श्रोत्र त्वक

चक्षु घ्राण रसना रस को ज्ञान कहै वाक पाणि पाद पायु सो उपस्थ जू ॥ मन बुद्धि चित अहङ्कारये चौबीस तत्त्व पञ्चविंश जीव तत्त्व करत है धन्यजू । षट बीसको है ब्रह्म सुन्दर सुनिसकर्म्म व्यापक अखण्ड एक रस निरसन्ध जू १ श्रोत्रादिक त्वक वायु लोचन प्रकाशै रवि नासिका अश्विनी जिह्वा बरुण बखानिये। वाक अग्नि हस्त इन्द्र चरण उपेन्द्र बल मेढ् प्रजापति गुद मित्रहूको ठानिये ॥ मन चन्द्र बुद्धि विधि चित्त वासुदेव आहि अहङ्कार रुद्रको प्रभाव करि मानिये। जाकी सत्ता पाय सब देवताप्रकाशत हैं सुन्दरसो आत्माही न्यारोकरि जानिये २ ॥

स० श्रोत्र सुनैं दृग देखतहैं रसनारस घ्राण सुगंध पियारो । कोमल तत्त्व को जानत है पुनि बोलत है मुख शब्द उचारो ॥ पाणि गहै पद कौनकरै मल मूत्र तजैसो उभैअघद्वारो । जाके प्रकाश प्रकाशत है सब सुन्दर सोई रहै घट न्यारो ३ बुद्धि भ्रमै मन चित्तभ्रमै अहङ्कार भ्रमै कहा जानत नाहीं । श्रोत्र भ्रमै त्वक घ्राणभ्रमै रसना दृग देखि दशौदिशि जाहीं॥ वाक भ्रमै कर पाद भ्रमै गुद द्वार उपस्थ भ्रमै कहु काहीं । तेरेभ्रमाये भ्रमै सबही गुण सुन्दर तू क्यों भ्रमै इनमाहीं ४ बुद्धिको बुद्धि अरु चित्त को चित्त अहङ्को अहम्मनको मन ओई । नैनकोनैन है बैन को बैन है कानको कान त्वचा त्वक होई ॥घ्राण को घ्राण है जीभको जीभहै हाथ को हाथ पगो पग दोई । शीशको शीश है प्राणको प्राणहै जीवको जीव है सुन्दर सोई ५ ॥

घनाक्षरी। कैसे कै रच्यो है यह जगत जगत गुरु मोसों कहो प्रथम ही कौन तत्त्व कीन्हो है। प्रकृति पुरुष कीधौं अच्छर तत्त्व अहङ्कार कीधौं उपजाये रज सत तम तीनों है ॥ कीधौं व्योम वायु तेज आपकी अवनि कीन कीधौं पञ्च विषय पसारि करि लीनो है। कीधौं दश इन्द्री कीधौं अन्तहकरण कीन सुन्दर कहत कीधौं सकल बिहीनो है ६ ब्रह्मते पुरुष और प्रकृति प्रकट भई प्रकृतिते महा तत्त्व पुनि अहङ्कारहै । अहङ्कार हू ते तीनि गुण सत्त्व रज तम तमहू ते महाभूत विषय पसार है ॥ रजहू ते इन्द्री दश पृथक पृथक भई सत्त्वहू ते मन आदि देवता अपार है। ऐसे अनुक्रम करि शिष्यसे कहत गुरु सुन्दर सकल यह मिथ्या भ्रमजार है ७ मेरो रूप भूमि है कि मेरो रूप आपहै कि मेरो रूप तेज है कि मेरो रूप पौन है। कि मेरो रूप व्योमहै कि मेरोरूप इन्द्रीहै कि अन्तह-करणहै कि मेरोरूप गौन है ॥ मेरो रूप त्रिगुण कि अ-हङ्कार महातत्त्व प्रकृति पुरुषकीधौं बोलै है कि मौनहै। मेरोरूप शब्द है कि मेरो रूप व्योम है कि मेरो रूप देवहै कि मेरो रूप योन है ८ तू तौ कछू भूमि नाहिं आपतेजवायुनाहिं व्योमपञ्चविषै नाहिं सो तो भ्रम कूप है। तूतौ कछु इन्द्रीनाहिं अन्तहकरण नाहिं तीनो गुणहू तू नाहिं सातौ छाहँ धूपहै ॥ तूतोअहङ्कारनाहिं पुनिमहातत्त्व नाहिं प्रकृतिपुरुष नाहिं तूतौ सो अनूपहै। सुंदरविचारि ऐसेशिष्यसों कहतगुरु नाहीं नाहीं करत रहै सो तेरो रूपहै ९ तेरोतौ स्वरूपहै अनूप चिदानंद घन देह तौ मलीन जड़ यों विवेक कीजिये । तूतौ

निरसंग निराकार अविनाशी अज देह तौ विनाशवंत ताहि नाहिं धीजिये ॥ तूतौ षड ऊरमी रहित सदा एक रस देहको विकारसबदेह शिर दीजिये। सुन्दरकहत यों विचारि आपु भिन्न जानि परकी उपाधि कहा आपुविषै लीजिये १० देहई नरक रूप दुखको न वारपार देहई स्वरग रूप झूठो सुख मान्यो है। देहई को बन्ध मोक्ष देहई असोऊप्रोक्ष देहईको क्रिया कर्म्म सब शुभठान्यो है ॥ देहई में और देह सुखिहू विलास करै ताही को समुझि बिन आत्माजीव ठान्योहै। दोऊ देहते अलिप्त देहको प्रकाशकहै सुंदर चैतन्यरूप न्यारो करि जान्यो है ११ देह हलै देह चलै देहही सों देह मिलै देहखाय देह पीवै देहई भरतु है। देहई हिवारे गलै देहई अनल जरै देह रण माहिं जूझै देहई परतु है ॥ देहई अनेक कर्म्म करत विविध भाँति चुम्बककी सत्ता पाय लोह ज्यों फिरतु है। आतम चैतन्यरूप व्यापक साक्षीअनूप सुंदर कहै सो तौ जनमै न मरतुहै १२ ॥

प्रश्नोत्तर ॥

देह यह किनकोहै देह भूतनको पञ्च भूत किनतेहैं तामसाहङ्कार ते। अहङ्कार कौनतेहै जासों महातत्त्वकहैं महातत्त्व कौनते है प्रकृति मँझारते॥ प्रकृति है कौनते है पुरुषहै जाकोनाम पुरुष सो कौनतेहै बदननिराधार ते। ब्रह्म अबजान्योहै मैं जान्योहै निश्चैकरि निश्चै हम कियोहै तो चुपमुख द्वारते १३ ॥

नरहरि कवि॥

शिक्षा॥

कुण्डलिका। नरहरि धरहरिको करै जननि सुतहि विषदेय। वारि जो खेतहि हठिचरै साधु पराधनलेय॥ साधु पराधन लेय नाव करियागहि बोरै। सोइ पहरू सोइ चोर प्रीति प्रियतम हठि तोरै॥ नृपति प्रजहिदुख देय कौन समरथकरै धरिहरि। क्षितिपति अकबरशाह सुनौं धरहरि करै नरहरि १॥

हरिनाथ कवि॥

रीवांके राजाकी प्रशंसा॥

दो॰ पुण्य बीज बलिने बई कर्ण कीन द्वैपात॥
सींच्योबांधवगढ़नृपति जबदेख्यो कुँभिलात॥१

रसखानि कवि॥

विराग॥

स॰ या लकुटी अरु कामरिया पर राज्य तिहूंपुर को तजि डारौं। आठहु सिद्धि नवोनिधि को सुख नंद की गायचराय बिसारौं॥ कोटि करौ कलिधौत के धाम करीरके कुञ्जन ऊपर वारौं। रसखानि कहै इन नैनन सौं ब्रजके बनबाग़ तड़ाग निहारौं १॥

गदाधर राम।

स॰ वश ह्वै मुरली स्वर लीन्ह किधौं किधौं कूलकलिन्दी के टोहनगो। किधौं पीत पटा लखि या लकुटी किधौं मोरपँखा छवि जोहनगो॥ किधौं लालकी माल के मध्यफँस्यो किधौं काम कमानसी भौहनगो। हम कासों गदाधर योगकरैं मनतो मनमोहन गोहनगो १॥

महेशदत्त ॥

अष्टादश पुराणों की संख्या ॥

घनाक्षरी । ब्रह्म है अयुत १०००० पद्म पचपन ५५००० त्रिविंश २३००० विष्णु चतुर्विंश २४००० शिवपञ्चविंश २५००० नारदीयहै । अष्टादश १८००० भागवतएनहीं वैवर्त्तब्रह्म लिंग एकादशरु ११००० अयुत १०००० बामनीयहै ॥ कूर्मसप्तदश १७००० मत्स्य चौदहसहस्र १४००० नव ९००० सहस मार्कण्डेय ऊनविंश १९०००गारुडीयहै । द्वादश १२००० ब्रह्माण्डचतुर्विंश २४००० बाराहस्कन्दएकसैएकासी ८११००सहस्रजाननीयहै १ पञ्चशतचौदह १४५०० सहस्र है भविष्य अग्नि पञ्चदश सहस औ चारि शत १५४०० मानिये । इनके एकत्र किये पद्मस्वच्छ लक्षचारि ४००००० होते हैं विचारिनिरधारि जियजानिये ॥ सुनत सुनावत औ गावत बतावत जे हरिलोक पावत कहावत न जानिये । जनन मनाय समुझाय कै महेशदत्त कहत सुनाय मनभाय तौ बखानिये २ ॥

विष्णुके २५ अवतारोंके नाम और चरित ॥

वामन बराह यज्ञ कपिलकुमार पृथुदत्त बल ऋषभ नृसिंहहंसठानिये । मत्स्यकूर्म हरि हयमुखव्यास कृष्ण बुद्धमोहनी परशुराम रामचन्द्रमानिये ॥ कल्की नारायण धन्वन्तरि और ध्रुव एतेपञ्चविंश २५ गाये पै असंख्याकृतिजानिये । गायजिन गुणपारजात न गणेश शेशअजनेश औ महेश क्यों महेश मानिये ३ बलि जाली वामन नृसिंह प्रह्लाद पाली हरि गजखाली रामघाली

लंकनाहुको। मत्स्य वेदउद्धारी और कूर्म्मपृष्ठ गिरिधारी कृष्ण कंसदारी मोहनारी मारीराहुको॥ बुद्ध दयाकारी बराह महिधारी कपिल योग सञ्चारी राम मारी सहस बाहुको। कल्की म्लेच्छ हारी व्यास वेद विस्तार ऋषभ ज्ञानहिं पसारी पृथु भूमि गारी लाहुको ४ हयास्य वेदोच्चारी हंस भक्ति योग चारी प्रलम्ब मारी बल ध्रुव उच्च लोक धारी हैं। नारायण तपकारी कुमार आत्म तत्त्वपारी यज्ञ लोक भारी दत्तयोग बिस्तारी हैं॥ लोक रोग दारी वैद्यराज उपकारी सब कहां लौं पुकारी बलि हारी बलिहारी हैं। दुष्ट अपकारी हितकारी निज दास के महेश अघहारी औ अनेक कार्य्यकारी हैं ५॥

बारहमासा॥

हरिगीतिका। गज बदन मदन बिदारि पद शिर धारिसुजन मनावऊं। रघुनाथपद धरिमाथ श्रीयदुनाथ गीत बनावऊं॥ नभ शुक्ल गिरिकर नन्दचन्द्र सँभारि सम्बत लीजिये। रविवार हरतिथि छन्दशुभ हरिगीतिकाकहि दीजिये ६ आषाढ़ खाढ़ बिसारि नारि परारि पाय लोभायगे। ब्रजग्वाल बाल बिहाल करि नँदलाल हाय रिसायगे॥ गृह हाट बाट कपाट ठाटें जग ठाट ठाटें छायकै। जगनाथ बिच नदनाथ सोवहिं माथहाथलगायकै ७ घन घोर शोर कठोर मोर दरोर सजनी को सहै। तड़िता तड़ातड़ तड़पि मन डरपाय दहुसखिकालहै॥ मोहिं झूलि गावन मास सावन नहिं सुहावन लागई। घन श्याम बिन घनश्याम लखि सखि काम बाम सुजागई ८ भादौं भयानी भामिनी लखि यामिनी बिच दा-

मिनी । अब भेक भेकी करहिं नेकी जानि एको कामि-
नी ॥ आगार द्वार बजार वारि बिदारि मनहुँ बहाइ हैं।
ब्रजनाथ कूबरि साथ त्यहि गहि हाथ गाथ बचाइहैं ९
सखिक्कार मोर गवांरबिन गिरिधारि रारि मचावहीं।
जलपिण्डआश अकाश तजि यहि मास पीतर आवहीं ॥
नवरात्र पात्र भराय गात्र नवाय देवि मनावहीं ।
अब नीर नाहिं गँभीर सखि नरधीर सीर लुनावहीं १०
नँदलाल हित नर बाल तुलसी आलबालसुलीपहीं ।
पुनि दीप बारि सँवारि आर्त्तिक मास कार्त्तिक दीपहीं॥
मन पूत करि जन द्यूत खेलि जगाय माधव गावहीं ।
अलि कूबरी फँद फन्दकै ब्रजचन्द काहेक आवहीं ११
वर नारि कण्ठ सुधारि मुण्डन गवन गावहिं लागिकै ।
नव प्यारि पायमनाय नव पिय हिय लगावहिं जागिकै॥
बिन मीत शीत पुनीत अगहन दहनसम मोहिं लागई।
सखि श्याम धाम बिहाय हाय कुवाम सँगअनुरागई १२
यह कंस चेरि मुरारि घेरि स्वसौख पौष दिखावई ।
तन मेल तेल फुलेल करि निज अंग अंग लखावई ॥
भरि तूल मध्यदुकूल हरि अनुकूल करि हिय लावई ।
करि दीन चाव दुराव सखि दहु काहँ कूबरि पावई १३
चहुँ ओर भोर तुषारधार पहार कानन राजहीं । अब
माघ साज समाज तीरथराज लखि वर गाजहीं ॥ करि
ध्यान गान नहान गुड़ तिल अन्नदै द्विज पूजहीं । जहँ
नंदनन्द अनन्द तहँ यह नाहिं मोहिं कछु सूझहीं १४
नर बाल बाला ह्वै निहाला फागु फागुन गावहीं । एक
संग रंगबिरंग करि लखिअंगअंग बढ़ावहीं ॥ भरिझोरि

रोरि गुलाल गाल लगाय उपर उड़ावहीं। बल बीर नाहिं अबीर कापर डारि हम फगुआवहीं १५ ऋतुनाथ आय अनाथ नारि सनाथ करि यश लीजिये। यदुनाथ नाथ मनाय कै गहि हाथ त्यहि मोहिं दीजिये॥ तब बीच नीच अमैत्र चैत्र बिदेशि नारिन्ह मारई। जहँ फूल फल दल कमल जल जलकाम भल बल भारई १६ बैशाख बसै तरु डार डार पहार मारवली अली। पुनि मत्त मोर चकोर शुक पिक रटत शब्द गली गली॥ बन बापि बाग तड़ाग उपबन बास मोहिं न भावई। यदुबीर हीन समीर तीन नवीन पीर उठावई १७ धन धाम ग्राम उशीर नीर समीर नदनदि तीररी। सब लगत ताते नहिं स्वहाते सदन बिन बल बीररी॥ अब ज्येष्ठ धूरि उड़ात गात सुखात बात न आवई। सखि शीत चन्दन नंद नंदन अंग कूबरि लावई १८ हे नाथ करहु सनाथ नारि अनाथ निज बिन जानिकै। गहि हाथमाथ जुड़ाय हृदय लगाय दासी मानिकै॥ नर नारि करि बिश्वास बारह मास सुनि जो गाइ हैं। हरि राधिका पद प्रीति रीति महेशदत्त सो पाइ हैं १९॥

तुलसीदासजी के सर्व्वग्रंथों की कुछ कुछ कविता॥

कवित्वरामायण॥

घनाक्षरी। जाहिर जहानमें जमानो एक भांति भयो बेंचिये बिबुध धेनु रासभी ब्यसाहिये। ऐस्यउ कराल कलिकाल में कृपाल तेरे नामके प्रताप न त्रिताप तन

दाहिये ॥ तुलसी तिहारो मन वचन करम जन येहू नातो नेह निज ओर ते निबाहिये । रंकके नेवाज रघुराज राजा राजन के उमरि दराज महाराज तेरी चाहिये १

रामशलाका ॥

दो०राम राज राजत सकल धर्म्म निरत नर नारि ॥
राग न रोष न दोष दुख सुलभ पदारथ चारि २

गीतावली ॥

कौशल्याजीका वाक्य ॥

रागकेदार । पौढ़ियेलाल पालने हौं झुलावौं । करपदमुख चखकमल लखत लखि लोचन भ्रमरबुलावौं ॥ बाल विनोदमोद मञ्जुलमणि किलकनि खानिखुलावौं । तेइ अनुरागताग गुहिबे कहँ मति मग नयनि बुलावौं ॥ तुलसी भणित भली भामिनि उर सो पहिराय फुलावौं । चारु चरित रघुवर तेरेहि मिलि गाय चरण चित लावौं ३

बरवारामायण ॥

जानकीजीकी प्रशंसा ॥

सिय मुख शरद कमल जिमि किमि कहिजाय ॥
निशिमलीन वह निशि दिन यह बिकशाय ४
शिक्षा । कलि नहिं ज्ञान विराग न योग समाधि ॥
तुलसी सुमिरहु रामहिं नित निरुपाधि ५

दोहावली ॥

तुलसी वहां न जाइये जहां कपट को हेत ॥
हम तन ढारैं ढेकुली सींचहिं आपन खेत ६
तर्क विशेष निषधपति उर मानस सुपुनीत ॥
बसतमराललरहिलकरित्यहिभजपलटिविनीत७

विनयपत्रिका॥

तामें से पीठि मनहुँ तनु पायो। नीचमीच नहिं गनसि शीशपर ईशनिपट बिसरायो॥ रमणि धरणि धन धाम सुहृद पशु को नहिं इन अपनायो। काके रहे गये सँग काके सब सनेह छलछायो॥ जिन भूपन जगजीति बाँधि यम अपनी बाँह बसायो। तिनको काल कलेवा कैगे तू गिनती कबआयो॥ मानत नहीं सारको सांचो निगम नेति ज्यहिगायो। अजहुँ न भजसि दासतुलसी त्यहि ज्यहि महेश मनलायो ८॥

हनुमद्वाहुक॥

घनाक्षरी। दिग्गज दबकि जात शेश शीशअलसात हहलात बारिधि घटत द्युति भानुकी। मेरु धसकत कसकत उर रावणको चलत अवनि छवि छपत कृशानु की॥ सुभट सकात दैत्यदेखिकै परात मन राम मुसुकात अतिपाय निजजानुकी। गर्व्व गिरिजात शोक सुर चितात बन नाकं अररात सुनि हांक हनुमानकी ९॥

चन्द्रकवि॥

सेना देखकर परमालिक का भागना॥

दो०देखिफौज परिमालनृप कांपि चले तजिप्रान॥
दश हजार भट संगलै चले महोबे थान १॥
ब्रह्मानद फिरि आइयो धरि क्षत्रिय धर्म्मधारि॥
पृथीराज सो पद्धरे बज्जावन तरवारि २॥

भुजङ्गप्रयात। दुहूं सैन्य मिल्ली दुहू बाग लिन्नी। दुहूं धारि धर्म्मं वरं इष्ट किन्नी॥ दुहूं सैन्य कड्ढी दुहूंकोर बाढ़ी। दुहूं बार बाना शबदुच्च काढ़ी ३॥

बजे भेरि निश्शान जंगी तबल्लम्। गजै नाद तुरही सबल्लम्मुसल्लम्॥ दुहू नाद कीनो स्त्ररं शङ्ख भारी। दुहू नाम हर्षे सु हाहा उचारी ४ कहै चंद भोहो सुनो चाहु वानम्। चलायो गढम्बाधि बाई भुजानम्॥ मुखम्बात जम्पै सुईशै भवानी। मिलायो बलम्बाहि धाये जवानी ५ अग्गे कीन सेना सुचौंडेल हाथी। रहे पीठि अस्वार वन्नाय साथी॥ चलाये मुलङ्कान्ह पट्टी उठाई। किधौं रावने राम मौहैं रुठाई ६ अगे आप हत्थीनपै हत्थवाहैं। वरन्दंत तानै उठानै उमाहैं॥ उपारंत दंतै बली बाहु जोरै। गहै पुच्छ शुण्डा ब्रपारै भ्रमोरै ७ कहूंते भुशुण्डे नपै ते न पावै। कहूं कोपि प्रत्यञ्च धन्नी मिलावै॥ कहूं भाव साधै कहूं कोपि रारै। कहूं घावबाहै कहूं कोपि चारै ८ नहूंवान बलसो कियो पीलकानी। सुखम्मन्त्र बोलै तुईशै भवानी॥ कहूं हङ्क बङ्क दुहूं सैन्य सोई। बजावम्बरंलोह निम्मोह होई ९ करैखंड खंडै घटं घाव धारैं। विकट्टम्बली बाहु ठट्टान्नहारैं॥ चलावंत तीरंगहीरंगुमानी। धरक्केधरन्नी खनक्केसुबानी १० उरंसेल्हलागै उरम्पारहोई। गिरैनट्टचासे कलाचूकि सोई॥ बहैं कन्ध किर्प्पान बन्धंगु लावै। परै मुण्ड धन्नी सुरण्डन्नचावै ११ गुरज्जंग्गहे शीशरोसैरवानी। शिरंहोत चूना विखूनञ्जवानी॥ बहैमुग्दरम्मारधारंत कत्ती। परै सीलमत्तासुधरनीदरत्ती १२ करैवारहङ्कङ्कटारीकरूरम्। करी मान मत्ता परे चाक चूरम॥ इसी भांति कान्हैं कियो युद्धभारी। मिल्योध्यान अम्बांगुली ईशधारी १३ ०कान्ह कटक कीन्हों कहर हटक परी दल माहिं॥

भटकि वीर भागे बली कोऊ पलटत नाहिं १४

शिवप्रसादकवि॥

शंकरजीकी प्रशंसा॥

दो० शंकर सेवा करत जो सो पावत बहु वित्त॥
विद्या में अति प्रबल ह्वै रटत शम्भु दैचित्त १
शंकरजी सुरस्वार्थ लगि कीन्ह गरलको पान॥
जाके कण्ठ विशालमें विष को बनो निशान २
बाणासुर के संग ह्वै युद्ध कीन्ह हरि पाहिं॥
ऐसे शम्भु कृपालु को भजन करहु मन माहिं ३
महादेव के भजन बिन नहिं पावत हरिलोक॥
विषयभोगकरिबहुतदिन पुनिमरि भोगत शोक ४
ऐसे दयानिधान को भजा करो दिन राति॥
प्रति दिन होहिं अनंद बहु नास होहिं आराति ५

महेशदत्त॥

जिन २ कवियों की कविता इसग्रन्थ
में है उनके नाम॥

घनाक्षरी। तुलसी नारायण मदन हुल्लसराम सहज-
राम भगवतीदास रत बाम हैं। ब्रजबासी दास सिंह
संबल नरोत्तम नावत ललूलाल गिरिधरराय नामहैं॥
बिहारी रघुनाथ शिव प्रसादानन्यदास गिरिजा प्रदज
मोतीलाल कृपाराम हैं। क्षेमकर सीताराम चरण भि-
षारीदास रामनाथ मानसिंह अवध ललाम हैं १॥
श्रीपति शिवप्रसन्न पद्माकर केशव जी हिमाचल रङ्गा-
चार प्रियादास ठानिये। मीरा देव नाभादास दास बं-
शीधररु जानकीदास मतिराम रामसिंह मानिये॥ सूर-

दास सुन्दर मलूकदास नरहरि हरिनाथ रसखानि ग-
दाधर भानिये। चन्द्रये महेशदत्त सहित इक्यावनकवि
काव्य काव्यसंग्रह में लिखी भूपजानिये २ ॥

इसग्रन्थ में जो छन्दहैं उनके नाम ॥

दो० दोहा चौपाई घनाक्षरी सोरठा जानु ॥
चामर सवैया गीतिका दुसरि सवैया ठानु ३
दोवै भुजँगप्रयात संयुता त्रिभंगी मानु ॥
तोमर मदिरा विज्जया तन्त्रि नराच बखानु ४
दोधक तोटक स्वागता छप्प चतुष्पदिनीक ॥
पद्धटि माणवक्रीड़ शशिवदन मरहठाठीक ५
चौबोला चञ्चरि त्रिपदि बरव विष्णुपद वृत्त ॥
छन्द नरिन्दरु मल्लिका तैंतिसकरत सुनृत्त ६
केदारा गुर्ज्जर धनाश्री आदिक हैं राग ॥
पढ़िहैं सुजनसुधारिसब करिकै अतिअनुराग ७

जिस प्रकार से यह ग्रन्थ बना है उसकावर्णन ॥

सिद्धिश्री शुभगुणसदन श्रीकालिन्ब्रौनिंग ॥
साहब डैरेक्टर सुभग जामें गुण विन बिंग ८
संस्कृत अरबी फ़ारसी अंगरेज़ी जिहिसंग ॥
छाया सी घूमत फिरत माती जाके रंग ९
जाकीकृपा कटाक्ष से ये सबही के अंग ॥
विद्या व्यापी जाहि सों सबके उठी उमंग १०
सुमतिबढ़ी जिहिभांतिसों हुओ कुमतिकोभंग॥
सोईकीन्ह्यो रात्रिदिन खोजिसकल शुभढंग ११
ग्राम ग्राम गृह गृह चह्यो जन जन पण्डितहोय ॥

याहूपर जो नहिं भयो रहोतासु मतिसोय १२
ताकी आज्ञा पाय कै ग्रन्थ रच्यों मैं येह ॥
भूलहोयजहँसुजन त्यहि पढ़ियोशुद्धसनेह १३

ग्रन्थ समाप्तिके मासादिका वर्णन ॥

हरिगीतिका। नभ राम नन्दरुवंद संवत क्वार पूरण मासिका। विधुपूष बबध्रुव ग्रंथ पूर्त्ति सुरामनगरनिवासिका ॥ शुभकाव्यसंग्रह नाम केरि महेशदत्त हितूकरी। अरुदहन नग वसुचन्द्र ईसा वर्ष षष्ठ्यकटूबरी १४ ॥

इस ग्रन्थ के पद्यों कीसंख्या ॥

दो० यामें एक सहस्र अरु यकसठि हैं सब पद्य ॥
यहमैं जानत नहिं क्यतिकहोहिं गनेयहि गद्य १५

इति

जिन २ कवियों की कविता इस ग्रन्थ में है उनके ग्राम नाम पठनपाठन जन्म मरण इत्यादिकीअवस्था ॥

तुलसीदासजी ॥

ये सरयू पारीण अर्त्थात् सरवरिया ब्राह्मण चित्रकूट के इलाके में राजापुरके रहनेवाले थे इनके गुरूका नाम नृसिंहदासथा कहते हैं कि ये यद्यपि षट्शास्त्री पण्डित थे परईश्वराराधन में चित्तनहीं लगता था एक दिन इनकी स्त्रीने ऐसा उपदेशकिया कि ये सब गृहस्थाश्रम छोड़कर रात्रि दिन श्रीरामजी का स्मरण करने लगे बहुत दिन काशी चित्रकूट अयोध्या आदि तीर्त्थों में रहकर वृन्दावन को गये वहां नाभाजीसे भेटहुई और कृष्णचन्द्रजी जोकि सर्व्वदा मुरली धारण किये रहते हैं उन्होंने देखकर कहा कि मैं तो प्रणाम तभीकरूं-

गा जब धनुर्व्वाणधारणकरोगे यह सुनकर कृष्णचन्द्र जीने वैसाही किया तब उन्होंने साष्टाङ्ग प्रणामकिया और बहुत दिनों तक वहां रहे इन को हनुमान् जी का इष्टथा फिर वहां से पलट काशीजी में बसकर इन्होंने बड़ी बड़ी सिद्धता दिखाई ये संस्कृत और भाषा दोनों के बड़े कवि थे इन्हों ने विनयपत्रिका गीतावली रामचरित मानस दोहावली रामशलाका बरवा रामायणकवितावली छंदोवली मङ्गलावली और हनुमद्बाहुक आदिग्रन्थ बनाये मैं जानताहूं कि इसभारतखण्ड में भाषा के कवियोंके शिरोमणि थे अर्थात् इनके समान दूसरा नहीं हुआ इन्होंने सर्व्व जनोंके उपकारकेलिये कविता की और श्रीराम यशोवर्णन को छोड़ और किसी का वर्णननहीं किया कि जैसा बहुधाकविलोग ठुमुक २ झुमुक२ झनझन २ आदि पद बहुतललित बनाकर लोगों को अधिक विषय वासनामें लगाते चले आते हैं इन की प्रशंसा कहां तक करूं ये सम्वत् १६८० में श्रीकाशी जीके मध्य शरीरत्यागकर वैकुण्ठवासी हुये ॥

मदनगोपाल ॥

ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण फतूहाबाद के निवासीथे इन्होंने सम्वत् १८७६ मेंबलिरामपुरके महाराज दिग्विजयसिंहजी के पिता अर्ज्जुनसिंह के नाम से अर्ज्जुनविलास नामक ग्रन्थ बनाया ये अच्छे कवि थे उस ग्रंथ में इन्होंने सब पदार्त्थों का वर्णन संक्षेप से किया है और ग्रंथ बनानेके पश्चात् थोड़ेही दिनोंमें इस असारसंसार को छोड़दिया ॥

हुलासराम ॥

येशाकद्वीपीय ब्राह्मण ज़िले बाराबङ्की तहसील फ़तेपुर ग्राम रामनगर के रहनेवाले थे इनके पिताका नाम प्रयागदत्त था इन्होंने बुद्धि प्रकाश बैतालपञ्चविंशतिका लङ्काकाण्ड आदि ग्रंथ निर्म्मित किये १८४५ सम्वत् में उत्पन्न हुये और १९१२ में मृत्यु वश हुये ॥

सहजराम ॥

ये सनाढ्य ब्राह्मण पञ्जाबके रहनेवाले थे और यहां सुल्तांपुरके ज़िले में जो बँधुवाग्रामहै वहां के रहनेहारे एक नानकसाही ब्राह्मण के शिष्य हुये ये भी बड़े महात्मा हुयेहैं और सहजराम रामायण प्रह्लादचरित ये दो ग्रन्थ इन्होंने रचित किये और सम्बत् १९०५ में इस संसार से निराशहो स्वर्गवास किया ॥

भगवतीदास ॥

ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण फ़ैज़ाबाद के ज़िले में किठावां ग्रामके रहनेवाले थे उसी समय में हुये थे जब कि तुलसीदासजीथे इन्होंने सम्बत् १६८८ में नासकेतोपाख्यान निर्म्माण किया और ये सम्बत् १७१४ में स्वर्गी हुये ॥

रत्नकवि ॥

ये ब्राह्मण काशीजीके रहनेवाले थे इन्होंने प्रेमरत्न नाम ग्रन्थ सम्बत् १८०५ में बनाया ॥

ब्रजबासीदास ॥

ये ब्राह्मण कहीं पूर्व्वके रहनेवाले थे इन्होंने वृन्दावनमें आकर सम्बत् १८[illegible]

ये बड़ेही श्रीकृष्णोपासक थे और जन्म भर वहीं रहे और शरीर त्याग किया ॥

सबलसिंह चौहान ॥

ये फर्रुखाबादके ज़िलेमें रामगंगाके तटपर सबलपुरके रहनेवाले बड़े परिश्रमी पण्डित थे कि देखो सम्पूर्ण महाभारतको भाषा किया अब इनके लड़केबाले हरदोई ज़िले के साई ग्राम में रहते हैं ॥

नरोत्तमदास ॥

ये सीतापुरके ज़िलेमें बाड़ीके बासीथे इन्होंने सम्बत् १५८२ में सुदामाचरित्र नाम ग्रन्थ बनाया था ॥

नवलदास ॥

ये क्षत्रिय जनवार ज़िले बारहबङ्की तहसील रामसनेही ग्रामगूढ़ के रहनेवाले थे खूब ईश्वराराधन किया और ज्ञान सरोवर आदि कई ग्रन्थ बनाये और सम्बत् १९१३ में वहीं मृत्युवश हुये ॥

लल्लूजीलाल ॥

ये गुजराती ब्राह्मण सहस्र अवदीच आगरेके निवासी इन्हों ने प्रेमसागर सभाविलास आदि ग्रन्थ बनाये और इनका जन्म सम्वत् १८३० में हुआ था ॥

बिहारीलाल ॥

ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण श्रीवृन्दावनके रहनेवाले थे इन्होंने सतसई नामग्रन्थ जयपुरके राजा जयसिंहराय सवाईके कथनसे उन्हीं के निमित्त निर्म्माण किया ॥

अनन्यदास ॥

ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण ज़िले गोंड़ा ग्राम चकयँदवा

के रहनेवाले राजा पृथ्वीराज के समय में थे इन्होंने अनन्ययोग नाम के ग्रन्थ बनाया उसके देखने से विदित होताहै कि अच्छे कविथे संवत् १२७५ में वैकुण्ठयात्रा की ॥

रघुनाथदासमहन्त ॥

ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण पचवार के पांड़े सीतापुर के ज़िले में पैंतेपुर के रहनेवाले हैं प्रथम ये रापटकी पलटनमें गोलन्दाज़ों में नौकरथे और अयोध्याजी में मौनीदासके शिष्य हुये और वहां नौकरी और भगवद्भजन दोनों करते थे यहां तक कि बांगर के इलाक़े में किसी राजा से लड़ाई होती थी और ये भोजन बनाते थे कि वैरी की सेना ने धावा किया सब गोलन्दाज़ भगे तब रघुनाथदासका वेषबनकर ईश्वरने आप आकर गोलन्दाज़ी करके शत्रु की सेना को हटाया उसी समय में रापट साहब ने देखा कि अकेला रघुनाथदास तोपचला रहाहै इससे प्रसन्न होकर कहा कि तुम्हे हुद्देदारबनाऊंगा कुछ घड़ीके पीछे जब इन्होंने जाना कि मेरेलिये ईश्वरको नौकरी करनी पड़ी तो आप नौकरी छोड़कर श्रीअयोध्याजी में वासुदेव घाटपर रहनेलगे और अब रामघाटपर रामाराधन करते और अपने तपोबल से प्रतिदिन चारपांचसौ मनुष्यों को भोजन देतेहैं इन्होंने हरिनामसुमिरनी एक बड़ा अद्भुत ग्रन्थ बनायाहै ॥

मलूकदासकवि ॥

ये ब्राह्मण कड़ामानिकपुर जोकि गंगाजीके तटपरहै वहाँकेरहनेवाले बड़े सिद्धथे इनके मित्र एक मुरारिदास

वैष्णव जो कि कड़ानगरसे बीसकोश पूर्व्वदिशा में कहीं गंगाजीके निकट रहतेथे माघमास में उन्होंने एकबड़ा भारी भण्डारा किया पर मनुष्य बहुतथे इससे सामग्री न पहुँचसकी तब ईश्वरानुग्रह से यह वृत्त मलूकदासको विदितहुआ तो एक तोड़ापर अपनी ओरसे लिखा कि मुरारिदासकेपास पहुँचै उसेले गंगाजीसेकहा कि हेगंगे! इसको अभी वहां पहुँचा दीजिये क्योंकि मनुष्य इसको लेजाकर समयपर नहीं पहुँच सक्ता यहकह गंगाजी में छोड़दिया उसीसमय मुरारिदास अपने घाटपर स्नान करनेगयेथे कि तोड़ा रुपयोंसे भराहुआ पायँमें लगा उसे देख जाना कि मलूकदासका भेजाहुआ है सबको भोजन कराया ये मलूकदास तुलसीदासजी के समयमेंथे क्यों- कि जब तुलसीदासजी अयोध्याजीसे चित्रकूट जातेथे तो इनसे भेंटहुईथी ये संवत् १६९५ में वहीं मृत्युवशहुये ॥

मोतीलालकवि ॥

ये सरवरिया ब्राह्मण बांसीके राज्यमें अघैलाग्रामके वासी बहुतदिन पठनपाठन कर संवत् १५९८ में वहीं मृतकहुये इन्होंने गणेशपुराण को भाषा किया ॥

कृपारामकवि ॥

ये सरवरिया ब्राह्मण गोंड़ाके ज़िलेमें नरैनापुरके रहनेवालेथे इन्होंने श्रीमद्भागवत एकादशस्कन्ध भाषा बनाया ॥

क्षेमकरणमिश्रकवि ॥

ये सरयूपारीण अर्थात् सरवरिया ब्राह्मण नग- रहा मिश्र ज़िले बारहबङ्की तहसील रामसनेही गोमती

नदीके कूलपै ग्रामधनौलीके वासीथे इनके पिता का नाम आधारमिश्र पितामह का लक्षणराम और प्रपितामह का लालमणिमिश्र था संवत् १८३५ में इन का जन्म हुआ और ७ वर्ष की अवस्था में संस्कृतविद्या पढ़नेका प्रारम्भ किया प्रथम ज़िले सुल्तांपुर ग्राममहुआबोझके निवासी पण्डितश्रेष्ठ माधवरामजीसे पढ़तेथे तदनन्तर ज़िले रायबरेली तहसील दिग्विजयगञ्ज ग्रामहलोरके वासी विद्वद्वर्य्य नयनरामजीसे कि जिनका चन्द्रिका पाठन अबतक प्रसिद्ध है उनसे तत्पश्चात् ज़िले बारहबङ्की तहसील हैदरगढ़ ग्राम पुरवा के रहनेवाले श्रीमुन्नालाल शास्त्रीजी से तदनु श्रीमथुराजीमें छन्दश्शास्त्राध्ययन करके बहुत दिनोंतक पठनपाठन करते हुये अम्बारा बरौधा और बम्बईआदिनगरों से बहुतसा द्रव्योपार्जन करके गयाश्राद्धादिब्रह्मभोज और ८कन्याओं के विवाहमें बहुतमुद्रा व्यय करके अन्तावस्थामेंश्रीअयोध्याजीकेमध्य १४वर्षवासकर भगवद्भजन करके संवत् १९१८ में वहीं शरीरत्यागकर ईश्वर में लीनहुये ये संस्कृत और भाषा दोनों की कवितामें बड़े विज्ञ थे कि जिन्होंने श्रीरामरत्नाकरवृत्त रामास्पद गुरुकथा और आह्निक ये संस्कृत के और रामगीतमाला कृष्णचरितामृत पदविलास वृत्तभास्कर रघुराज घनाक्षरी गोकुलचन्द्र कथानक ये भाषाके ग्रन्थ बनाये औरबड़े रामोपासक थे और कविता हरियशोवर्णनही की करतेथे॥

सीतारामदासकवि॥

ये कवि वैश्यवर्ण ज़िले बारहबङ्की ग्राम वीरापरके रहते

वाले हैं और अपना वणिज और भगवद्भजन करते हैं ॥

चरणदास ॥

ये कवि फैजाबादके ज़िलेमें पण्डितपुरके रहनेवाले थे इन्होंने स्वरोदय ग्रन्थ बनायाथा और ये संवत् १५३७ में मरेथे ॥

भिखारीदासकवि ॥

ये कायस्थ वर्ण अरवल देश के टेउंगा नगर के रहनेवाले थे इनके पिताका नाम कृपालुदास पितामह का वीरभानु प्रपितामहका रामदास और भ्राताका चैनलाल था इनकी कविताके देखने और इनके लिखने से जाना जाता है कि ये केवल भाषाही नहीं जानते थे वरन संस्कृत काव्य कोषमें भी बड़े अधिकारीथे इन्हों ने छन्दोर्णव नाम छन्दोग्रन्थ और काव्यनिर्णय बड़े२ भारी और सबके उपयोगी ग्रन्थ निर्म्माण किये काव्यनिर्णय संस्कृत काव्यप्रकाश जो कि मम्मटाचार्य्य कृत है उसीका भाषान्तर विदित होता है ये संवत् १८२५ में मृतक हुये और १७४५ में उत्पन्न हुये थे ॥

रामनाथ प्रधानकवि ॥

ये श्रीअयोध्याजी के रहनेवाले ब्राह्मण बड़े भजनानन्द थे कविता भी इनकी बड़ी चटापटी कीहै इन्हों ने रामकलेवा रामहोरीरहस्य और फुलवाई ये ग्रन्थ बनाये ये संवत् १८५६ में उत्पन्न हुये थे और संवत् १९२५ में वहीं मृतक हुये ॥

महाराजमानसिंहकवि ॥

जिससे कि उन्हें छोटे बड़े सबमनुष्य अच्छे प्रकार

जानतेही हैं इससे मैं इस छोटेग्रन्थ में इनका वृत्तान्त नहीं लिखता ॥

अयोध्याप्रसादवाजपेयी ॥

ये कवि ज़िले रायबरेली तहसील दिग्विजयगञ्ज ग्राम सातनपुरवामें रहतेहैं संस्कृत और भाषा दोनोंजानते हैं पर कविता भाषाहीकी करते हैं भाषाकी रचना में इनके ऐसे अनुप्रास और पदलालित्य बहुत कम कवियों के ग्रन्थोंमें देखे इन्हों ने साहित्यसुधासागर और रामकवित्वावली आदि कई ग्रन्थ बनाये हैं ॥

शिवप्रसन्नकवि ॥

ये ज़िले बारहबङ्की तहसील फतेपुर ग्राम रामनगरके निवासी शाकद्वीपीय ब्राह्मण हैं इनके पिताका नाम रामज्यावन वैद्यराज पितामहका श्यामदत्त और प्रपितामहका केशवराम पण्डितथा ये संस्कृत और भाषा दोनोंके कविहैं इन्होंने सतीचरित्र नाम एक ग्रन्थ बहुत ही उत्तम बनाया है इनकी अवस्था ४४ वर्षकी है ॥

श्रीपतिकवि ॥

ये ब्राह्मण ज़िले बहिरायचमें प्रयागपुर के रहनेवाले थे इन्होंने कई ग्रन्थ बनाये पर वे सब शृङ्गारही रस के हैं ये बड़े प्राचीन कविहैं अर्थात् संवत् १७०५ में थे ॥

केशवदासजी ॥

ये कवि सनाढ्य ब्राह्मण थे इनके पिता का नाम काशिनाथ पितामहका गणेशदत्त और प्रपितामहका ब्रह्मदत्त था इनके वंश में पाण्डित्य का अधिकार बहुत दिनसे चला आता है अबभी प्रजनेश नाम एक बड़े

कवि उसी वंशके हैं और वे आप तो बड़ेही विद्वान् और कविथे जब उन्हों ने कविप्रिया और रसिकप्रिया आदि शृंगाररसके ग्रन्थ निर्म्मित किये तब एक रात्रि में बाल्मीकिजी ने आ इन्हें स्वप्नमें दर्शनदे कहा कि तुम श्रीरामचन्द्रजी का यश वर्णन करो तुम्हारी बुद्धि बढ़ैगी तब इन्होंने संवत् १६५८ में रामचंद्रिका नाम ग्रंथ बनाया और जबतक रहे इसी काव्यशास्त्रके विनोद में लगेरहे॥

हिमाचलरामकवि॥

ये शाकद्वीपीय ब्राह्मण ज़िले बहिरायच भटौली के राज्य में बड़े ग्रामके रहनेवाले थे इन्होंने नागलीला दधिलीला आदि ग्रंथ बनाये और संवत् १९१५ में वहीं मृतक हुये॥

रंगाचारकवि॥

ये पश्चिमोत्तरीय देशमें भुइँगाँवके रहनेवाले बनियां थे कविता में निपुण तो न थे हां कुछ थोड़ा बहुत जोड़ जाड़ लेते थे इन्हों ने एक ध्रुवचरित ग्रन्थ बनाया जिसका नाम ध्रुवचरित्र रक्खा है ये संवत् १६१६ में वहीं मृतक हुये॥

प्रियादासजी॥

ये वृन्दावनके निवासी ब्राह्मणथे जिन्होंने नाभादास जीकी बनाई हुई भक्तमालकी टीका बनाई येभी बड़े भारी कवि और वैष्णव थे॥

मीराबाई॥

ये राजपूतानेके मेड़ाननगरमें उत्पन्न हुईं और चित्तौर

के राना को बिवाहीगईं ये अकबर बादशाहके समय में थीं इनका वृत्तान्त ग्रन्थ में लिख चुके हैं इससे अब नहीं लिखा जाता ॥

नाभादासकवि ॥

ये दक्षिणी अन्धाक्ष ब्राह्मणथे और जब इनकी ५ वर्ष की अवस्था थी तभी इनके देशमें अकाल पड़ा इस हेतु इनकी माता इन्हें लेकर जयपुर के वनमें भाग आई ये बड़े भजनानन्दथे इस हेतु अग्रदासजी ने जोकि बड़े सिद्ध थे आकर इनके नेत्रों में जलका छिप्पा मारा आँखें खुलगईं और इनको अपना शिष्यकिया इन्होंने अपनेगुरू अग्रदास की आज्ञा से भक्तमालनामग्रंथ बनाया येभी उसीसमयमें थे जब कि तुलसीदासजी थे॥

दास वा दासानिदास वा वेणीमाधवदास ॥

ये कवि ज़िले गोंड़ा में घग्घर के निकटपासिका के रहनेवाले थे और तुलसीदासजी के शिष्य थे ये बड़े रामोपासक और गुरुभक्त थे गोसाईंजी के सङ्ग ये भी फिरतेथे जो २ सिद्धतायें तुलसीदासजीकी इन्होंने देखी हैं वे सब अपने ग्रंथ गोसाईंचरित में लिखी हैं ये संवत् १६९९ में हरिपुरवासी हुये ॥

वंशीधर मिश्र कवि ॥

ये कान्यकुब्ज मिश्र ब्राह्मण ज़िले हरदोई ग्राम संड़ीले के रहनेवाले और बड़े भक्त थे जब कि ये मृतकहुये और ईश्वरप्रेरित दूत इन्हें लेजाने के निमित्त विमान ले आये और इन्हें चढ़ा ले चले तो जोकि खैराबाद में साधा हलवाई सिद्ध था उसने अपने यहां उसी समय

कहा कि वंशीधरमिश्र विमानपर चढ़ेहुये जातेहैं यहबात संवत् १६७२ की है॥

जानकीदासकवि॥

ये पवांर ठाकुर गोंड़ाके ज़िलेमें गुड़सड़ा ग्रामके रहनेवालेथे सामान्यतः अच्छे कवि थे पर इनका बनाया बड़ाग्रंथ नहींदेखागया यहवार्त्ता विदित हुई है कि संवत् १४६८ में मृतक हुये॥

मतिरामकवि॥

ये कवि फतेपुरके ज़िलेमें असनी ग्रामके निवासी महापात्र भाट औरंगजेब बादशाहके समयमें थे इनके भाईका भूषण नामथा मतिरामजीने रसराजादि ग्रंथ बनाये और बादशाही दरबारमें जन्मपर्य्यंत रहे॥

रामसिंहदेवकवि॥

ये क्षत्रिय फ़ैज़ाबादके ज़िलेमें खड़ासाके रहनेवालेथे स्फुट कवित्व इनके सुनेगयेहैं॥

गिरिजादत्तकवि॥

ये सरयूपारी ब्राह्मण सुकुल मँझगवांके ज़िले बारहबङ्की तहसील रामसनेही ग्राम धनौलीके रहनेवालेहैं संवत् १९१३ में इनका जन्महुआ इनके पिताका नाम महेशदत्त है ये अभी विद्याध्ययन करतेहैं और ईश्वरगुणवर्णनमें कविताभी करतेहैं ये श्रीमदुमापति त्रिपाठीजीके शिष्य हैं॥

सुन्दरकवि॥

ये नेवाड़देश नरैना ग्रामके निवासी दादू बेहना के शिष्यथे ये वही दादू हैं कि जिनके नामसे दादूपंथियोंका

मतहुआ है ये सुंदरजी बड़े सिद्धहुयेथे इन्होंने सुंदर सांख्यनाम ग्रन्थ बनाया ॥

नरहरिकवि ॥

ये भाटोंकी जातिमें एक महापात्र जाति होतीहै उसी जातिमें उत्पन्नहुये जो कि फतेहपुरके ज़िलेमें असनीग्राम है वहीं के निवासी थे और अकबर बादशाहके कविथे ये बहुतही शीघ्र कविता करते थे सम्बत् १६६६ में थे स्वर्गी हुये ॥

हरिनाथकवि ॥

ये नरहरिकवि के पुत्र थे इन्होंने रीवां के राजा को यही दोहा सुनाया था जो कि इस ग्रन्थमें लिखा है इस के सुनानेपर प्रसन्न होकर राजाने उन्हें बहुत गजमुक्ता दीं और इन्होंने सब ब्राह्मणों को देदीं ये अपने बापके मरनेके समय २२ वर्षके थे और १७०३ सम्बत्में मरे॥

चन्द्रकवि ॥

ये भाटथे और दिल्लीहीमें रहते थे राजा पृथ्वीराजके पुरोहित थे इन्होंने पृथ्वीराजरायसानाम ग्रन्थ बनाया॥

शिवप्रसाद कवि ॥

ये ज़िले बारहबङ्की तहसील फतेहपुर ग्रामरामनगर के रहनेवाले हैं इनके पिताका नाम शीतलप्रसाद अग्निहोत्री पितामहका भवानी दीन प्रपितामहका सेवकराम और गुरूका नाम महेशदत्तथा जोकि ज़िले गोंड़ा ग्राम् विश्वम्भरपुर के निवासी बड़े महात्मा मँझगवाँके सुकुल थे इन्होंने थोड़ेही दिनों से कविता करने का प्रारम्भ कियाहै इनकी अवस्था अभी २५ वर्ष की है ॥

महेशदत्त ॥

मैं सरवरिया ब्राह्मण मँझगवाँ का सुकुल ज़िले बारहबङ्की तहसील रामसनेही गोमती नदीके उत्तरकूल पै धनावली अर्थात् धनौली ग्राम का रहनेवाला हूं मेरे पिता का नाम अवधराम पितामह का रजाबन्दराम प्रपितामह का विश्रामराम और गुरू का नाम श्रीमदुमापति जी था कि जो सकल शास्त्र वेत्ता पिण्डी पुरीके निवासी कोई ४० वर्षसे श्रीअयोध्याजीमें निवास किये थे और इसी वर्ष अर्थात् सम्बत् १९३० भाद्रपद शुक्ल द्वितीया रविवार को वैकुण्ठ बासी हुये हैं मैं प्रथम तो अपने मातुल पण्डित प्रयागदत्तजी जोकि धनावलीही में रहते हैं उनसे तदनन्तर अपने मातामह विद्वद्वर्य्य क्षेमकरणजीसे पठन करताथा तत्पश्चात् जिले रायबरेली तहसील दिग्विजयगंज ग्राम भिषारीपुर के निकट पण्डित के पुरवामें जो कि उन्हीं श्रीमद्विद्वद्वृन्द शिरोमणि पण्डित रामभीषजी के नाम से बसाहै वहां उन्हीं महाशयसे जो कि व्याकरण न्याय काव्य कोश धर्म्म शास्त्रादि के वेत्ता हैं व्याकरण काव्यालङ्कार कोश पुराणादि पढ़ता रहा और अबकी जीविका प्रसिद्धही है कि ज़िले बारहबङ्की ग्राम रामनगर की पाठशाला का संस्कृत अध्यापक हूं मेरा जन्म सम्बत् १८९७ की आषाढ़ पूर्णिमाको हुआथा ॥

इति ॥

कठिनशब्दोंकाकोष ॥

जिससे कि हिन्दीमें नपुंसकलिंग नहीं होता इस निमित्त जो शब्द संस्कृत में नपुंसकलिङ्ग और पुंलिङ्ग हैं उन्हें पुंलिङ्गही लिखूंगा परपुंलिङ्ग के स्थानमें पु० और स्त्रीलिङ्ग के स्थान में स० और संस्कृतकेस्थानमेंसं० फारसी के स्थान फा० और अपभ्रंश के स्थान में अ० लिखूंगा ॥

[अ]

अल्पसर० सं० पु० छोटाताल।
अवत० सं० अवति क्रियाका अ० रक्षाकरताहै।
अनुमान० सं० पु० अटकर।
अनहित० सं० पु० अहितका अ० जोहित न हो।
अहि० सं० पु० सर्प्प।
आरत० सं० पु० आर्त्तका अ० दुक्खी।
अनल० सं० पु० अग्नि।
अकुण्ठा० स० सं० जो गोठिल न हो।
अगाधि० पु० सं० अगाधका अ० जिसकी थाह न हो।
अशनि० पु० सं० वज्र।
अराति० पु० सं० शत्रु।
अनित्य० पु० सं० जो सर्व्वदा न रहै।
अजर० पु० सं० जिसको बुढ़ापा न हो।
अमर० पु० सं० जो न मरे।
अर्ज्जन० पु० सं० बटोर।
अनुकूला० पु० सं० अनुकूलका अ० सहकारी।

अध्ययन० पु० सं० पढ़ना।
अन्तर० पु० सं० भीतर-बीच।
अकथ० पु० सं० अकथ्यका अ० जो कहने के योग्यनहीं।
अलौकिक० पु० सं० लोकसे बाहर।
अञ्जलि०पु० सं० हाथकासम्पुटअञ्जुरि।
अरि० पु० सं० शत्रु-वैरी।
अवगाह० पु० सं० स्नान-डुबुकी- बुड़ी मारना।
अवनीश० पु० सं० भूपालराजाजो पृथ्वी का मालिकहो।
अनिल० पु० सं० पवन वायु बयारि।
अनुशासन० पु० सं० आज्ञा।
अङ्का० पु० सं० अङ्कशब्दका अ० चिह्न गोद आंक।
अवसान० पु० सं० अन्त पीछे।
अन्त्र० पु० सं० आंत।
असिपत्र० पु० सं० तलवार से पत्ताहों जिसके।
अमरावती० स० सं० इन्द्रपुरी।
अनङ्ग० पु० सं० काम जिसकेअङ्ग न हो

अजामिल० पु० सं० एक कान्यकुब्जदेशीय ब्राह्मण का नाम।
अचानक० हि० अकस्मात्- एकाएकी।
अशकुन० पु० सं० जिसे असगुनबोलतेहैं अशुभ।
अयुत० पु० सं० दश सहस्रकानाम।
अहित० पु० सं० शत्रु-जोप्यारा न हो।
अर्क० पु० सं० सूर्य्य-मदार।
अजपा० पु० हि० अजप्य सं० का अ० जो जपा न जाय।
अमितन्न० पु० हि० अमितसं०काअ०जिसकी गिनती न हो सके।
अधोगति० स० सं० नरक-नीचेजाना।
अलक्षित० पु० सं० जो देख न परै।
अशन० पु० सं० भोजन।
अचल०पु० सं० पर्व्वत-पहाड़ जो न चलै।
अविद्या० स० सं० अज्ञानता-मूर्खता।
अदूषण० पु० सं० जिसका दूषण न हो।
अनुपम० पु० सं० जिसकी उपमा न होसके।
अवनी० स० सं० पृथ्वी-भूमि।
अतन० पु० सं० अतनु-का अ० कामविनादेह।
अवध० पु० हि० अयोध्या-मनुष्य का नामभी होता है।
अगर०पु० सं०अगरुकाअ०सुगन्धकाष्ठ।
अरिहा० पु० सं० शत्रुघ्न-वैरीको मारनेवाला।
अशेष० पु० सं० सम्पूर्ण-सब।
अविकारी० पु० सं० विना विकार।
अक्रूर पु० सं० दयालु-जो कृष्णको मथुरालेगये उनका नाम।
अवशिष्ट० पु० सं० शेष-बाकी।
अक्षर० पु०सं० वर्ण-और जो च्युत न हो।
असम्भव० पु० सं० कुभाव।
असपर्श० पु० सं० स्पर्शका अ० छूना।
आप० स० सं० पानीय-जल।
आलबाल० पु० सं० थाल्हा।
अमैत्र० पु० सं० निर्दयी।

[इ]

इन्द्रजीत० पु० सं० इन्द्राजित् का अ० रावण पुत्रका नाम।
इष्ट० पु० सं० वाञ्छित-पूजित।
ईहा० स० सं० चेष्टा-यत्न उपाय- इच्छा।
ईश० पु० सं० महादेव-स्वामी।

[उ]

उपल० पु० सं० प्रस्तर-पत्थर।
उदधि० पु० सं० समुद्र।
उमापति० पु० सं० महादेव।
उदार० पु० सं० दाता-दानी।
उरगारि० पु० सं० गरुड़ सर्प्पोंकावैरी।
उद्यमी० पु० सं० उद्योगी उपायी।
उरग० पु० सं० सर्प्प-सांप।
उदासीन० पु० सं० संन्यासी-वीतरागी-उदास।
उपानह०स० सं० पनहीं-जूता-पादत्राण।
उलूक०पु०सं०उल्लू-घुघुआ-खूसट-पक्षी।
उदर० पु० सं० जठर-पेट।
उलूखल० पु० सं० उदूखल-ओखरी।
उपस्थ० पु० सं० स्त्री वा पुरुषका चिह्न।
उशीर० पु० सं० सुगन्धितृण-खसखस।

[ऋ]

ऋषभ० पु० सं० श्रेष्ठ- एकयोगी का नाम ऋषभ।
ऋतु० पु० सं० बसन्तादि ६ स्त्री पुष्प।
ऋद्धि० सं० धन-सम्पत्ति।
ऋतुराज० पु० सं० बसन्तकाल।
ऋतुनायक० पु० सं० बसन्त।

[ए]

एला॰स॰सं॰इलायची।
एकाकी॰ पु॰ सं॰ अनन्य- अकेला- असहाय।

[क]

कृपण॰ पु॰ सं॰ अदत्ती- अदाता- सूम।
कर्ष॰ पु॰ सं॰ उत्कर्षता- उत्तमता- बत-बढ़ाव।
कीश॰ पु॰ सं॰ बानर।
कुंजर॰ पु॰ सं॰ हस्ती-हाथी।
कृत॰ पु॰ सं॰ रचित-बना-किया।
कल्पतरु॰ पु॰ सं॰ कल्पवृक्ष देवताओंका तरु।
कन्दुक॰ पु॰ सं॰ गेंद-गोंद।
कपाल॰पु॰ सं॰ मस्तकमुण्डमूंड़-कपार।
कौतुक॰ पु॰ सं॰ कुतूहल-परिहास-खेल।
कटु॰ पु॰ सं॰ करू-तिक्त-तीत।
कुलिश॰ पु॰ सं॰ बज्र।
केतु॰ पु॰ सं॰ नववांगृह-पताका।
किरीट॰ पु॰ सं॰ मुकुटश्रेष्ठलोगोंकी टोपी
कञ्ज॰ पु॰ सं॰ कमल।
कीट॰ पु॰ सं॰ कृमि-कीड़ा।
कल्प॰ पु॰ सं॰ ब्रह्माकादिन-प्रलय।
काञ्चन॰ पु॰ सं॰ सुवर्ण-सोना-सोन।
कलह॰ पु॰ सं॰ कलकल-लड़ाई।
कुम्भज॰ पु॰ सं॰ अगस्त्यमुनि जोघटसे उत्पन्न हो।
कल्लोल॰ पु॰ सं॰ कोलाहल-गर्ज्जन-शब्द होना।
कुधातु॰ पु॰ सं॰ लोह।
कृशानु॰ पु॰ सं॰ अग्नि।
कृषी॰ स॰ सं॰ खेती।
कर्म्मनाशा॰ स॰ सं॰ एकनदीका नाम जोकाशी से पूर्व्व है।
कालनेमि॰पु॰सं॰ एकनिशाचरकानाम।
कीच॰ पु॰कर्द्दम-चोदा-हीला चहला-पङ्क।
कृतज्ञ॰ पु॰ सं॰ गुणवादी उपकार माननेवाला।
केलि॰ स॰ सं॰ खेल-क्रीड़ा-विहार।
कामातुर॰ पु॰सं॰ कामवश-कामार्त्त-काम करके व्याकुल।
कनककशिपु पु॰ सं॰ हिरण्यकशिपु दैत्य का नाम।
किंशुक॰ पु॰ सं॰ पलाश छूल।
कौस्तुभ॰ पु॰ सं॰ मणि।
कण्ठ॰ पु॰ सं॰ ग्रीवा-गल-गर-गटई।
केश॰ पु॰ सं॰ बाल-कच-शिरोरुह।
कदम्ब॰ पु॰ सं॰ समूह-ढेर-वृक्षनाम।
कमोरी॰स॰हिं॰मटुकी-दुग्धदधिभाण्ड।
कार्म्मुक॰ पु॰ सं॰ धन्वाधनुषधनुही कमान।
कुरुपति॰ पु॰ सं॰ दुर्योधन-सुयोधन।
कुण्डल॰ पु॰ सं॰ कर्णभूषण-झूमका।
कदली॰ स॰ सं॰ रम्भा-केला।
कमठ॰ पु॰ सं॰ कच्छप-कछुआ।
काँजी॰ स॰ हिं॰ एक प्रकारका मण्ड-मांड़ गरुजी।
कीर॰ पु॰ सं॰ शुक-तोता-सुआ।
कदर्य्य॰ पु॰ सं॰ कातर-कायर।
कलत्र॰ पु॰ सं॰ स्त्री-नारी।
कुष्ठ॰ पु॰ सं॰ राजरोग-कोढ़।
कन्था॰स॰सं॰कथरी सूजनीसहस्रडोभ।
कुटुम्ब॰ पु॰ सं॰ बन्धु परिवार।
कटि॰ स॰ सं॰ कमर करिहांव।
कुरङ्ग॰ पु॰ सं॰ मृग-हरिण-हुन्ना।
करीश॰ पु॰ सं॰ हस्तियों के स्वामी।
कोशलेश॰ पु॰ सं॰ अयोध्याधिपपर यहां दशरथ।
कलिका॰ स॰ सं॰ कली।
किराती॰ स॰ सं॰ बनचरी-भीलिन।

कलापी० पु० सं० मयूर-मोर।
क्रतु० पु० सं० यज्ञ।
कुठार० पु० सं० परशु-कुल्हाड़ी फरसा।
कालि० पु० सं० कालिय-एक सर्प जो यमुना में रहताथा।
कलङ्किनी० स० सं० पापिनी।
कलिधौत० पु० सं० सुवर्ण-सोना।

[ख]

खरप० सं० तीक्ष्ण तीषा-पैन गर्द्दभ-गधा।
खग० पु० सं० सूर्य्य-पक्षी-ग्रह-नक्षत्र।

[ग]

गजमुख० पु० सं० गणेश।
गिरि० पु० सं० पर्व्वत।
गगन० पु० सं० आकाश।
गिरीश० पु० सं० महादेवहिमवान्।
गिरा० स० सं० वाणी-बोली।
गजारि० पु० सं० सिंह।
गुणमय० पु० सं० सूत्रमय।
गोई० स० हि० छिपी।
गति० स० सं० चाल।
गरल० पु० सं० विष-माहुर।
गवाशा० पु० सं० कसाई।
ग्रह० पु० सं० सूर्य्यादि ९
गर्द्दभ० पु० सं० खर-गधा-वैशाखनन्दन।
ग्रामसिंह० पु० सं० कुकुर-कुक्कुर-कूकुरकुत्ता।
गोशाल० स० सं० गाइयोंका घर-सरिया-सार।
गुरुद्वेषी० पु० सं० गुरुद्रोही गुरुसे वैर करनहार।
गृद्ध० पु० सं० गीध-पक्षी।
ग्राह० पु० सं० घड़ियाल।
गङ्गासुत० पु० सं० भीष्मपितामह।
गुप्त० पु० सं० छिपाहुआरक्षाकियाहुआ।
गहर० पु० हि० विलम्ब-देर-अतिकाल।
गुण० पु० सं० स्वभाव-रज-सत-तम सूत्र-डोरा।
गोमल० पु० सं० गोमय-गोबर।
गिरिजा० स० सं० पार्व्वती।
गाथा० स० सं० कथा कहानी।
गेही० पु० सं० गृही- जिसके घरहो स्त्रीहो।
गर्व्वित पु० सं० अहङ्कारी-मानी।
गजक० स० फा० चखौती।
ग़िज़ा० स० फा० खानेकीवस्तु।
गौतम० पु० सं० एकऋषिकानाम जिसकी स्त्री अहल्याथी।
गोकर्ण० पु० सं० एकब्राह्मणकानाम जिसका भ्राता धुन्धकारीथा।
गुद० पु० सं० पायु-मलत्यागकामार्ग।
गात्र० पु० सं० अङ्ग।

[घ]

घटयोनि० पु० सं० अगस्त्य जिन्होंने समुद्रपीलियाथा।
घनो० पु० सं० घनकाअ० बहुत-मेघ।
घ्राण० पु० सं० नासा-नाक।
घनश्याम० पु० सं० श्रीकृष्ण-कालाबादर।

[च]

चूड़ामणि० पु० सं० शिखाकामणि-एक शुककानाम।
चटशारा० स० हि० पाठशाला-मदर्सा।
चतुर्भुज० पु० सं० विष्णु-जिसके चार बाहुहों।
चित्रगुप्त० पु० सं० यमराजकामंत्री।
चतुरानन० पु० सं० ब्रह्मा-जिसके ४ मुखहों।
चिन्ता० स० सं० शोक-अंदेशा-डर।
चीर पु० सं० वस्त्र-कपड़ा।
चपला० स० सं० विद्युत-बिजुली।

चष० पु० हि० चक्षुका अ० नेत्र- नयन आंखि।
चहूँघा० पु० हि० चारोंओर।
चंचरीक० पु० सं० भ्रमर-भवँरा।
चमू० स० सं० सेना-सैन्य-फाज।
चाव० पु० हि० पैशून्य-चुगली।
चित्रशाला० स० सं० चित्रविचित्रगृह।
चिर० पु० सं० बहुकाल।
चर० पु० सं० दूतचलनेवाला-खानेवाला
चक्षु०पु०सं० नेत्र-नयन-अम्बक-आंखि अक्षि।

[छ]

छिद्र० पु० सं० छेद - रन्ध्र।

[ज]

जलधि० पु० सं० समुद्र।
जनक० पु० सं० पिता राजाजनक।
जगदम्बा० स० सं० संसार की माता।
जरठ० पु० सं० वृद्ध-बुड्ढा।
जीहा० स० हि० जिह्वा-जीभ।
जनन० पु० सं० जन्म-उत्पत्ति।
जलज० पु० सं० कमल जो पानी से उत्पन्नहो।
जननी० स० सं० माता-मा-महतारी।
जरापन० पु० हि० बुढ़ाई।
जल्पि० सं० क्रिया० बकना।
जङ्गम० पु० सं० जो चल न सकै।
जलद० पु० सं० मेघ-बद्दल।
जम्बुक० पु० सं० शृगाल-सियार-गीदड़।
जलधर० पु० सं० मेघ-बारिद-बद्दल।
जठर० पु० सं० उदर-पेट।
जाति० स० सं० जाति।
जाल० पु० सं० समूह धोखादेना।
जव० पु० सं० वेग-शीघ्रता।
जगनाथ० पु सं० जगन्नाथ का अप० संसार का स्वामी।

[झ]

झष० पु० सं० मत्स्य-मछली।
झञ्झी० स० हि० फूटीकौड़ी।

[त]

तरुणाई० स० हि० जवानी।
तरु० पु० सं० वृक्ष।
त्राहि० सं० क्रि० रक्षाकरो।
तरणी० स० सं० नौका-नाव।
त्रास० पु० सं० भय-डर।
तृषित० पु० सं० प्यासा।
तात० पु० सं० पिता-प्यारा।
तरुण० पु० सं० युवा ज्वान।
तरुणी० स० सं० युवती-ज्वानी- स्त्री।
तृष्णा० स० सं० पिपासा लोभातिशय प्यास।
तरण० पु० सं० जो उतर सकै।
तारण० पु० सं० तारनेवाला।
त्रिपुरारि० पु० सं० महादेव।
तव० सं तुम्हारा वा तुम्हारी।
तस्कर० पु० सं० चोर।
तम० पु० सं० अन्धकार-राहु-तमोगुण।
त्रिकल० पु० सं० जिसमें तीन मात्राहों।
तावत० पु० हि० ततकरता है।
तरणि० पु० सं० सूर्य्य।
तमूल० पु० सं० ताम्बूलका अ० पान।
तनुत्राण० पु० सं० देहरक्षक।
ताड़का० स० सं० राक्षसी जिसे श्रीरामने मारा।
तारकनन्दन० पु० सं०तारकपुत्र।
तलातल० पु० सं० नीचेका लोक।
तामरे० स० हि० तावर।
त्वक्० स० सं० चर्म्म-खाल।
तूल० पु० सं० रुई।
तुषार० पु० सं० पाला।

त्रिताप० पु० सं० दैहिक-दैविक-भौतिक ३ ताप।

तर्क० पु० सं० न्याय।

[द]

दशानन० पु० सं० रावण।
दशन० पु० सं० दन्त-दाँत।
दिक्पाल० पु० सं० इन्द्रादि १० देव।
दारुण० पु० सं० घोर-भयानक।
द्युति० स० सं० दीप्ति-प्रकाश।
दीप० पु० सं० दिया-दीपक।
दमनक० पु० सं० एक शृगालका नाम।
दुखप्रद० पु० सं० दुखप्रदका अ० दुःखदायी।
दुहिता० स० सं० कन्या-पुत्री-लड़की।
द्यूत० पु० सं० जुआ-एकप्रकारकाखेल।
दूत० पु० सं० पठवनियाँ-हरिकारा।
दण्डपाणि० पु० सं० जो हाथ में दण्ड लिये हो।
दारा० पु० सं० स्त्री और एकप्रकार कावाद्य।
दामरी० स० हि० रस्सी।
द्रोण० पु० सं० द्रोणाचार्य्य-श्यामकाक।
दुशासन० पु० सं० दुश्शासनका अ० एक मनुष्य का नाम।
दुखमोचन० पु० सं० दुःखमोचन का अ० दुःख छोड़ानेवाला।
दव० पु० सं० वनकी अग्नि-दवरहा।
दमामा० पु० फा० नक्कारा-भेरी-दुंदुभि
दशोरी० दश २।
दीन० पु० सं० दुःखी।
देवऋषि० पु० सं० नारद।
द्विज० पु० सं० ब्राह्मण-पक्षी।
दम्भ० पु० सं० दर्प-अहंकार-घमंड।
दैहिक० पु० सं० जो देहसे हो।
दारक० पु० सं० विदारण करनेवाले।
द्विप० पु० सं० हस्ती।
दान० पु० सं० देना-वितरण-हस्ती का मद।
दीनता० स० सं० दुखई-आधीनता।
देवईश० पु० सं० इन्द्र-देवराज।
दन्ती० पु० सं० करी-हाथी।
द्विजदेव० पु० सं० महाराज मानसिंहका दूसरा नाम।
दामिनी० स० सं० विद्युत-बिजुली।
दुन्दुभि० पु० सं० बाद्य-बाजा।
दुस्सह० पु० सं० असह्य-जो दुःख से सहाजाय।
दाने० पु० हि० दानव० सं० का अ०
देव० पु० सं० देवता-देवदत्त कवि का दूसरा नाम।
दहन० पु० सं० पावक-अग्नि।
दुकूल० पु० सं० वस्त्र-कपड़ा।
दराज० पु० फ़ा० लम्बा।

[न]

धनद० पु० सं० कुबेर।
धाम० पु० सं० गृह-गेह-घर।
धन्वी० पु० सं० धनुर्द्धर धनुष बांधनेवाला।
धरणी० स० सं० भूमि० पृथ्वी।
धृति० स० सं० धारण शक्ति ८ योग।
धनेश० पु० सं० कुबेर।
धूम० पु० सं० धुआं।
ध्रुव० पु० सं० निश्चय एक राजा का नाम-पृथ्वी के दोनों शिर।
धराधरी० पु० सं० पर्व्वत पहाड़।
धर० पु० सं० धारण करनेवाला।
धुरू० पु० सं० ध्रुवका अ०।

[न]

नभ० पु० सं० आकाश।
निकर० पु० सं० समूह—झुण्ड।

नीर० पु० सं० जल-उदक-सलिल।
निन्दक० पु० सं० निन्दा करनेवाला।
निधि० पु० सं० कुबेर का एकरत्न-सम्पत्ति नव।
नमस्कार० पु० सं० शिरसे प्रणामकरना।
नाक० पु० सं० स्वर्ग्ग-जलजीव।
निरस० पु० सं० नीरस का अ० विना रस शुष्क।
निरामिष० पु० सं० विनामांस।
निशा० स० सं० रात्रि।
नरचीता० पु० हि० नरव्याघ्र-श्रेष्ठ।
नासा० स० सं० नासिका-नाक-नकुना।
नरेश० पु० सं० राजा।
निकेत० पु० सं० गृह-सद्म-घर।
नरहरि० पु० सं० नृसिंह एककविकानाम।
नन्दिघोष पु० सं० अर्ज्जुनका रथ।
निषंग० पु० सं० तरकस।
निष्पाप० पु० सं० निष्पापका अ० विना पाप।
नरशिरमाला० स० सं० मनुष्यों के मुण्ड की माला।
नागरिपु० पु० सं० गरुड़-पन्नगाशन।
नीड़० पु० सं० छुतकुल-घोंसला-झोंझ।
निमित्त० पु० सं० हेतु-प्रयोजन।
नियम० पु० सं० इन्द्रियनिग्रह-इन्द्रियों को वशरखना।
नूतन० पु० सं० नव्य-नवीन-नया-नव।
निरतै० क्रि० नाचै॥
निमिवंशी० पु० सं० जनकवंशी।
निदाघ० पु० सं० ग्रीष्मकाल-गरमी
नाना० अनेक प्रकार।
नग्न० पु० सं० नंगा।
निगम० पु० सं० वेद।
नदनाथ० पु० सं० समुद्र।
निषेध० पु० सं० रोक अ-मा-नो-न।

(प)

पावक० पु० सं० अग्नि।
पवन० पु० सं० वायु।
पवि० पु० सं० प्रस्तर पत्थर।
पषान० पु० सं० पाषाणका अ० पत्थर।
पतङ्ग० पु० सं० सूर्य्य पाँखी।
पातक० पु० सं० पाप।
पुञ्ज० पु० सं० समूह-ढेर।
पुलस्त्य० पु० सं मुनि-ब्रह्मपुत्र।
पोच० पु० हि० नीच छोटा।
परशु० पु० सं० फरसा-कुठार।
पीयूष० पु० सं० अमृत-जिसके पीनेसे न मरे।
पयोधि० पु० सं० समुद्र।
पोषक० पु० सं० पुष्ट करनेवाला।
प्रेरे० क्रि० पठाये।
पुत्रवती० सं० सं० जिसके पुत्रहो।
पाथा० पु० सं० जल।
परस्थौ० पु० हि० वसना।
प्रलय० पु० सं० ब्रह्माकादिन नाश।
पीन्हा० पु० हि० मोद्र-पीन सं० का अ०।
पिक० पु० सं० पपीहा-चातकपक्षी।
पाणि० पु० सं० हस्तहाथ।
पय० पु० सं० दुग्ध-जल।
पट० पु० सं० वस्त्र।
पथिक० पु० सं० राही-मुसाफिर।
पर्य्यङ्क० पु० सं० पलंग-शय्या।
परिजन० पु० सं० बन्धु।
पुरीष० पु० सं० विष्ठा अपवित्रवस्तु।
पल० पु० सं० मांस घटीका षष्ठांश।
पयोधर पु० सं० मेघ स्तन-चुञ्चु।
पाश० पु० सं० फाँसी।
पर्ण० पु० सं० पत्र-पत्ता।
पतिव्रता० सं० सं० जो अपने पतिहीको देवसमझे।

प्रतीहार० पु० सं० सन्देश पहुँचाने वाला-दूत।
पारिजात० पु० सं० कल्पवृक्ष।
प्रबोधि० कृ० क्रि० समझाकर।
पावस० पु० सं० वर्षाऋतु।
पृथु० पु० सं० अयोध्याकेएकराजाकानाम
प्रतिमा० स० सं० मूर्त्ति-पुतली।
पुरातम० पु० सं० पुराण-पुरनियाँ।
परिहार० पु० सं० अवज्ञा-अपमान त्याग।
पृष्ठ० पु० सं० पीठ।
पिपील० पु० सं० च्यूँटी।
प्रिय० पु० सं० हित प्यार।
पञ्चयज्ञ० पु० सं० वेदपाठ-हवन-अतिथिकासत्कार-तर्प्पण बलिवैश्वदेव।
प्रचण्ड० पु० सं० उग्र-अनसहा।
पनस० पु० सं० कटहल।
पूषण० पु० सं० सूर्य्य।
पीनी० स० हि० मोटी।
पुरुहूत० पु० सं० इन्द्र।
पद्मराग० पु० सं० एकमणिका नाम।
पराग० पु० सं० धूलि।
पतिनी० स० सं० पत्नीका अ० स्त्री।
परिकर्म्म० स० परिक्रमा सं० का अ० घूमना।
पायु पु० सं० गुद।
प्रकृति० स० सं० जिस्से सृष्टि होतीहै।
पुरुष० पु० सं० इनसे और प्रकृति दोनों से सृष्टि होती है।

(फ)

फणी० पु० सं० सर्प्प।
फणीश० पु० सं० सर्प्पोंका राजा।

(व)

बीस० पु० सं० विंशका अ० इसी प्रकार त्रिंशादि के अ० जानिये।
बीहा० पु० हि० विंश-बीस।
ब्रह्मविचार० पु० सं० ब्रह्मज्ञान-ईश्वर का जानना।
वट० पु० सं० बरगद।
बाला० स० सं० स्त्री।
वनमाला० स० सं० तुलसी कुन्द मन्दार पारिजात कमलकी माला।
ब्रह्मघात पु० स० ब्राह्मण को मारना।
वन० पु० सं० अरण्य-जल-कपास।
व्रण० पु० सं० घाव।
वड़वानल० पु० सं० अग्नि।
वेणु० पु० सं० वंश-बाँस।

(भ)

भट० पु० सं० योद्धा-वीर।
भीरु० पु० सं० कातर-डरपोंक।
भोरे० हि० भूल भूला हुआ।
भृकुटी० स० सं० भ्रुकुटी-भ्रूकुटी-भौंह।
भामिनि० स० सं० स्त्री सम्बोधन।
भेषज० पु० सं० औषधि-इलाज।
भानी० हि० भञ्जी।
भुआरा० हि० पु० भूपाल राजा।
भृत्य० पु० सं० दास।
भूरि० पु० सं० वहुत।
भृङ्ग० पु० सं० भ्रमर-भँवरा।
भृगुनन्द० पु० सं० परशुराम।
भूकम्प० पु० सं० भुइँडोल।
भुजङ्गम० पु० सं० सर्प्प।

(म)

मेरु० पु० सं० पर्व्वत।
मराल पु० सं० हंस पक्षी।
मृगपति० पु० सं० सिंह।
मूलक पु० सं० मूली।
मारुत० पु० सं० पवन-वायु।
मुकुट० पु० सं० वड़ेराजाओंकी टोपी।

मर्कट पु० सं० वानर।
मनुजाद० पु० सं० राक्षस मनुष्यों के भक्षणेवाला।
मद्य० पु० सं० मदिरा।
मरकतमणि० पु० सं० एकप्रकार का बहुमूल्यप्रस्तर।
मुद० स० सं० हर्ष।
मज्जन० पु० सं० स्नान।
मरु० पु० सं०निर्ज्जलदेश।
मालव० पु० सं अन्नाधिक्य स्थानदेश।
महिदेव० पु० सं० ब्राह्मण।
मसि० स० सं० मसी-स्याही।
मोदक० पु० सं० लड्डू।
मृगजल० पु० सं० मृगतृष्णा जो घर्म्म में सर्व्वत्र झलझलाती दीखती है।
मिस० पु० सं० मिषका अ० ओढ़र बहाना॥
मम० सं० हमारा वा हमारी-मेरा-मेरी।
मौनी० पु० सं० जो न बोले।
मनुजपति पु० सं० मनुष्यों के स्वामी।
मलिन्द० पु० सं० भ्रमर।
मनोभव० पु० सं० काम।
मधुमास० पु० सं० चैत्रमास।
मधुपुर० पु० सं० मथुरापुरी।
मल्लिका० स० सं० मालती पुष्पवृक्ष।
मुहीम० स० फ़ा० चढ़ाई।
मैन० पु० हि० काम।
मृगमद० पु० सं० कस्तूरी।
मापति० पु० सं० विष्णु।
मेढ़० पु० सं० लिङ्ग इन्द्रिय।
मदन विदारि० पु० सं० महादेव।

(य)

युवराज० पु० सं० अङ्गद-वलीअहद।
युगल० पु० सं० युग्म-दो।
युवती० स० सं० स्त्री-ज्वानी।
यज्ञ० पु० सं० क्रतु-मङ्गलकार्य्य।
युग० पु० सं० दो वा चारकी संख्या।
यौवन० पु० सं० ज्वानपन-जवानी।
यक्ष० पु० सं० नीचदेवजाति।
योजन पु० सं० ४ कोशकी संख्या।
यशस्वी० पु० सं० जिसमें यशहो।
योनि० स० सं० पश्वादि जाति-भग।
यूथ० पु० सं० झुण्ड।

(र)

रङ्क० पु० सं० दरिद्र।
रुद्र० पु० सं० महादेव।
रसना० स० सं० जिह्वा जीभ।
रज० पु० सं० रजोगुण स्त्री पुष्प-धूलि।
रण० पु० सं० सङ्ग्राम लड़ाई।
रोष० पु० सं० रिसाना।
रविनन्दिनि० स० सं० यमुना।
राकेश० पु० सं० चन्द्र-चन्द्रमा।
राजिव० पु० सं० राजीवका अ० कमल
राजरमणी० स० सं० राजाओंकी स्त्रियां।
रव पु० सं० शब्द।
रिपुहन० पु० सं० शत्रुघ्न।
रौरव० पु० सं० नरक जिसमें रुरुनाम कृमिरहते हैं।

(ल)

लघुसर० पु० सं छोटाताल।
लीक० स० सं० कलङ्क-पगडण्डी।
ललाट० पु० सं० मस्तक-माथ।
लक्ष० पु० सं० लाख।
लङ्केश० पु० सं० लङ्काका स्वामी।
लक्षन० पु० हि० लक्ष्मणका अ०।
लुनावहीं० हि० क्रि० कटावहीं।

(व)

विस्तार० पु० सं० फैलाव।
विधि० पु० सं० ब्रह्मा-आज्ञा।

वृष्टि० स० सं० वर्षा।
विंदु० पु० सं० बूंद।
वलक्ष० पु० सं० शुक्ल-उज्ज्वल।
विरञ्चि० पु० सं० ब्रह्मा।
बधिर० पु० सं० बहिरा।
वैनतेय० पु० सं० गरुड़।
विपुल० पु० सं० बहुत।
विग्रह० पु० सं० कलह-खई।
विशद० पु० सं० उज्ज्वल।
वंदनीय० पु० सं० स्तुत्य-प्रणामकरने योग्य।
वायस० पु० सं० काक।
विभूति० स० सं० ऐश्वर्य्य-राखभस्म।
विश्व० पु० सं० संसार।
वञ्चक० पु० सं० छली।
वेश्या० पु० सं० बारवधू।
वाम० पु० सं० शोभन दुष्ट टेढ़ा।
वैश्य० पु० सं० वणिक-बनिया।
वक्ष० पु० सं छाती।
विशिख० पु० सं० बाण-तीर।
वृश्चिक० पु० सं० राशि बिच्छू।
विष्ठा० स० पुरीष-मैला।
व्याज० पु० सं० ओढ़र।
वृषकेतु० पु० सं० महादेव।
वृन्ताक० पु० सं० बैंगन-भांटा।
वीथी० स० सं० मार्ग।
बितान० पु० सं० मण्डप-चँदवा।
विहङ्ग० पु० सं० पक्षी।
वसुधा० स० सं० पृथ्वी।
बलाक० पु० सं० चालाक-एकऋषि का भीनाम है बकपंक्ति।
वामदेव०पु०सं०महादेव-वशिष्ठकाभ्राता।
वाक्० स० सं० वाणी भाषा।
व्योम० पु० सं० आकाश।
वर्तुल० पु० सं० गोल।
वापि० स० सं० बावली।

(श)

शुचि० पु० सं० पवित्र-आषाढ़मास।
श्रुति० स० सं० सुनना-कर्ण-वेद।
शूल० पु० सं० त्रिशूल-उदर-व्यथा।
शिल्प० पु० सं० राजा का कर्म्म।
शशी० पु० सं० चन्द्रमा।
शिशु० पु० सं० बालक लड़का।
शायक० पु० सं० बाण-सायक।
शाखामृग० पु० सं० वानर।
शठ पु० सं० मूर्ख।
शृगाल० पु० सं०गीदड़-सियार।
शव० पु० सं० मृतक-माराहुआ।
शोक० पु०सं० शोच-खुटका-अन्देशह।
शक्ति० पु० सं० बल-भगवती।
शावक० पु० सं० कुमार-बच्चा।
शमन० पु० सं० यमराज।
शाक०साग-तरकारी-खड्ग-मुष्टिकबुजा।
शक्र० पु० सं० इन्द्र।
शुक०पु०सं०शुक्राचार्य्य-व्यासपुत्रतोता।
शृंगार० पु० सं० भूषणादि धारण करना १६ हैं।
श्वशुर० पु० सं० स्त्री वा पतिकापिता।
शमनगण० पु० सं० यमदूत।
श्वान० पु० सं० कुक्कुर-कुत्ता।
शार्ङ्ग० स० सं० धनुष।
शर० पु० सं० बाण।
शीश० पु० शीर्षस० का अ० शुण्ड।
शैलकुमारी० स० सं० पार्व्वती।
शुण्ड० पु० सं० सूंड़ि।
शोन० पु० शोणित सं० का अ० रक्त रुधिर-लोहू।
शोणित पु० सं० रुधिर।
शरासन० पु० स० धनुष।

शार्दूल० पु० सं० व्याघ्र और पक्षी।
श्रेणी० स० सं० पंक्ति-पांति।
शपथ० पु० सं० सौगन्द।
शिखिपक्ष० पु० सं० मयूरपक्ष-मोरकेपर।
श्वास० पु० सं० सांस।
श्रोत्र० पु० सं० कर्ण-कान।

(ष)

षट्० सं० ६ की संख्या।
षोडश० सं० १६ संख्या।
षडानन० पु० सं० षड्मुख ६ मुख जिसकेहों।

(स)

सचिव० पु० सं० मन्त्री-सलाही।
स्वयम्० सं० अपने आप।
सभासद० पु० सं० सभाके बैठनेवाले।
सुराज्य० पु० सं० अच्छाराज्य।
सहस्रभुज० पु० सं० सहस्रवाहु-अर्ज्जुन।
सुमन० पु० सं० पुष्प-फूल।
सरोज० पु० सं० कमल।
समर० पु० सं० संग्राम-लड़ाई।
सन्तत० सं० सर्वदा-सबदिन।
सन्निपात० पु० सं० एकप्रकारकाज्वर। जो मरणप्रद होता है।
सेता० पु० हि० सेतु सं० का अ० पुल।
सुरसरि० स० सं० गङ्गा।
सरस्वति० स० सं० सरस्वती नदी।
सद्य० सं० उसी समय।
सरल० पु० सं० सद्य-सीधा।
सुरानीक० पु० सं० देवताओंका समूह।
सुधा० स० सं० अमृत।
सुरा० स० सं० मदिरा-दारू।
संग्रह० पु० सं० बटोर।
सारी० स० हि० शुक स्त्री।
सुता० स० सं० कन्या-बेटी।
सहेट० हि० एकान्तरहने का स्थान।
स्वैरिणी० स० सं० जो स्त्री निजपति छोड़ अन्यमें रमै।
सञ्चित० सं० पु० बटोराहुआ-एकत्र कियाहुआ।
स्यन्दन० पु० सं० रथ।
सुखपाल० पु० सं० पीनस।
सीम० पु० सं० सीमाका अ० डाँड़-हद।
सारथ० पु० सं० सारथी का० अ० रथ हाँकनेवाला।
स्वयम्बर० पु० सं० जहाँ कन्या अपनेही प्रसन्न करके पतिको ग्रहण करती पित्राज्ञा से।
सलिल० पु० सं० जल।
सत्यभामा० स० सं० श्रीकृष्णचन्द्रकी पटरानी।
सुगन्धराज० पु० सं० कल्पवृक्ष।
समूह० पु० सं० निकर-झुण्ड।
सूर० सं० पु० सूर्य्य।
सरत० हि० क्रि० चलता।
सम्मन० पु० सं० अच्छाचित्त।
सपर्द्धा० स० सं० स्पर्द्धाका अ० ईर्ष्या।
सुहृद० पु० सं० मित्र-व्यवहारी।
सदृश० पु० सं० समान-बराबर।
सखा० पु० सं० मित्र।
सर्षप० पु० सं० सरसों।
सकोटी० हि० बटोरधरना।
सुखमा० पु० सं० सौख्य।
सङ्गर० पु० सं० संग्राम-लड़ाई।
समीर० पु० सं० वायु।
सहकार० पु० सं० आम्र।

(ह)

हरि० पु० सं० विष्णु-सूर्य्य-सिंह-भेक-इन्द्र सर्प्प।

हयशाला० स० सं० वाजिशाला-घोड़-शाल।

हर० पु० सं० शिव।

हय० पु० सं० अश्व घोड़ा।

हनु० पु० सं० महावीर-चौहदी।

हेठ० हि० नीचे।

हालाहल० पु० सं० विष।

हेलन० हि० निन्दा-हेला का अ०।

हिंसा० स० सं० जीव मारडारना।

हूत० पु० सं० शब्द।

हाटक० पु० सं० सुवर्ण-सोना।

हिमन्त० पु० सं० ऋतु अर्थात् मार्गशीर्ष और पौष।

(क्ष)

क्षिति० स० सं० भूमि।

क्षमा० स० सं० सहना।

क्षुभित० पु० सं० क्षोभयुक्त।

क्षोणी० स० सं० पृथ्वी

क्षतजाती० स० सं० रक्तयुक्त।

क्षिप्र० पु० सं० शीघ्र।

इति

छन्दार्णवपिंगल क़ी०=)

जिसमें मात्रावृत्त, वर्णवृत्त, मेरु, मर्कटी, पताका, लघु गुरु स्थापन रीति और सब छन्दों के दृष्टान्त सहित रूप हैं ॥

कविकुल कल्पतरु क़ी०।–)॥

भूषणचिन्तामणिजी रचित जिसमें अति रुचिर छन्दों में नायका भेद की पूरी बातें लिखी हैं ॥

सतशयी सटीक बिहारीलाल जी रचित क़ी०।=)

श्रीकृष्ण राधाजी के विषय में सम्पूर्ण नायका भेद का वर्णन सातसौ दोहोंमें है और दोहेकेभावार्थके सवैये और कवित्तभी हैं॥

तुलसी शब्दार्थप्रकाश क़ी० ।)

गोपालदासजी रचित जिसमें सर्वपुराणों और षट्शास्त्रों के मतसे सर्व प्रकारके गूढ़ाशयों का कथन और जातक ताजक सामुद्रिक की मुख्य बातें गणित, योग, शास्त्र और बिवाह और यात्रादि के मुहूर्त्त और इसी प्रकार के असंख्य विषय हैं जो पुस्तक के पढ़ने से जाने जाते हैं ॥

प्रेमरत्न क़ी० =)

राजा शिवप्रसाद सितारैहिन्दकी दादी रत्नकुँवरिरचित केवल श्रीकृष्ण और रामचन्द्रजी की भक्तिपक्ष का विषय दोहा चौपाई में है ॥

जगद्विनोद क़ी०=)

पद्माकर कविकृत जिसमें नायकाभेदमें सबप्रकार के रस वर्णन कियेगये हैं ऐसी उत्तम सर्वलक्षण युक्त काव्यकी पुस्तक कोई नहीं है ॥

षट्ऋतुकाव्यसंग्रह क़ी० ≡)॥

हफ़ीज़ुल्लाहख़ां संगृहीत–जिसमें वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर छत्रोंऋतुओं के कवित्त व सवैया ऐसे २ अत्युत्तम लहलहे रँगीले परमचुहचुहे रसीले, अपने रसिकमित्रों व रंगीन तबीयतवाले महाशयों के चित्तविनोदार्थ बड़े परिश्रम से छांट २ कर लिखे गये हैं ॥

प्रेमतरंगिनी क़ी० –)॥

मुन्शीहफ़ीज़ुल्लाहख़ां संगृहीत इसमें चित्र विचित्र सामयिक देवपक्ष व प्रत्येक ऋतुओं के कवित्त सवैया हरएक कविके बनाये हुये संग्रह किये गये हैं इसकी उत्तमता देखनेही से मालूम होती है ॥

कृष्णसागर क़ी० ।–)

राधाकृष्णजी रचित जिसमें श्रीकृष्णजी का नवीन रीति से परिपूर्ण चरित्र वर्णित है ॥

विश्रामसागर बहुत मोटे अक्षर बातसवीर क़ी० ३)

जिसको महन्त श्रीरघुनाथदास रामसनेहीने प्रेमियों के लिये बनाया जिसमें छहों शास्त्र और अठारहों पुराणों के मत और नवीन रीति से श्रीकृष्णचन्द्र व रामजी के सरल चरित्र पद्य में रचेहुये हैं ॥

साईकेसौख्याल पहिला और दूसरा हिस्सा क़ी० ॥।)

इस के पहले हिस्से को रघुवीरमिश्र और दूसरे हिस्से को पण्डित रामबिहारी सुकुल और पण्डित दुर्गाप्रसाद मिश्रजी ने उर्दू से हिन्दी में रचना किया है इस में उत्तमोत्तम ख्याल वर्णित हैं ॥